कर्तृत्व॰ ना॰ पु॰ कर्त्ताका धर्म्म ।

कर्तृप्रधान॰ ना॰ पु॰ गु॰ जिस पदमें कर्त्ता प्रधान है ।

कर्तृवाचक॰ गु॰ जिस पदमें कर्त्ता पायाजावै।

कर्दम॰ ना॰ पु॰ कीचड़, कांदो, लेप और मुनि विशेष ।

कर्दमक॰ ना॰ पु॰ कीचड़ ।

कर्धनी॰ ना॰ पु॰ कटिबन्धन, सूत जो कमर में बांधते हैं ।

कपर्दी॰ ना॰ स्त्री॰ कौड़ी, यथा कपर्दी च बराटिकः इति निण्घटः ।

कर्पास॰ ना॰ स्त्री॰ कपास, कपासका वृक्ष ।

कर्पूर॰ ना॰ पु॰ कपूर, काफूर ।

कर्म॰ ना॰ पु॰ द्वितीयकारक, काम, भाग्य, प्रारब्ध शास्त्रविहित जप यज्ञादि ।

कर्मकर॰ गु॰ सेवक, नौकर ।

कर्मकाण्ड॰ ना॰ पु॰ जप यज्ञादि ।

कर्मकारक॰ ना॰ पु॰ कारक विशेष ।

कर्मच्युत॰ गु॰ काम से भ्रष्ट, क्रियाभ्रष्ट ।

कर्मनाशा॰ ना॰ स्त्री॰ नदीविशेष जो काशी और गया के मध्य में है ।

कर्मप्रधान॰ गु॰ कर्म मुख्य, विक्षिप्त कर्ता ।

कर्मभोग॰ ना॰ पु॰ प्रारब्ध का भोग और तपस्या, पक्षी विशेष ।

कर्मरङ्ग॰ ना॰ पु॰ कमरख ।

कर्मकाण्य॰ गु॰ जिस क्रिया पदका कर्म उद्देश्यहो ।

कर्मवाचक॰ गु॰ कर्मसूचक ।

कर्मविपाक॰ ना॰ पु॰ कर्मों का फल, ग्रन्थ विशेष ।

कर्मसाक्षी॰ ना॰ पु॰ सूरज ।

कर्माधर्मा॰ गु॰ जपतपिया, भाग्यवान्, दैवागत ।

कर्मार॰ ना॰ पु॰ बांस ।

कर्मिणी॰ ना॰ स्त्री॰ कागज़, जंघा ।

कर्मी॰ गु॰ कर्मोंका करनेवाला ।

कर्मेन्द्रिय॰ ना॰ स्त्री॰ इन्द्रियां जिनसे कर्म करते हैं, वह पांव हैं अर्थात् गुदा, लिंग, हाथ, पांव, मुख ।

कर्राना॰ अ॰ क्रि॰ कड़ापड़ना ।

कर्बुक॰
कव्याद॰ } ना॰ गु॰ निशाचर, कव्याद ।

कर्बुर॰ ना॰ पु॰ सुवर्ण, राक्षस ।

कर्ष॰ ना॰ पु॰ प्रमाण, की, वैर ।

कर्षण॰ ना॰ पु॰ खेंच ।

कर्षफल॰ ना॰ पु॰ बहेड़ा ।

कर्षा॰ ना॰ स्त्री॰ ईर्षा, उत्साह ।

कार्षित॰ गु॰ खींचागया ।

कल॰ ना॰ स्त्री॰ चैन, सुख, यन्त्र गु॰ अव्यक्त-सुन्दर, मीठा, मधुरशब्द, आजका पहिला वा पिछला दिन ।

कलकण्ठ॰ ना॰ स्त्री॰ कोयल पक्षी ।

कलकत्ता॰ ना॰ पु॰ नगर विशेष ।

कलकल॰ ना॰ पु॰ कोलाहल, शोर, झगड़ा ।

कलकांची॰ ना॰ स्त्री॰ नगर विशेष ।

कलंक॰ ना॰ गु॰ अपवाद, चिह्न, दोष ।

कलंकी॰ गु॰ दोषी, पापी ।

कलंकिनी॰ ना॰ स्त्री॰ दूषिता, अपवादिनी, जिसको कलंक लगा ।

कलधौत॰ ना॰ पु॰ सोना, चांदी ।

कलप॰ ना॰ पु॰ रंग, जिससे बाल रंगेजाते हैं वसमा, माड़ी ।

कलपना॰ अ॰ क्रि॰ कुढ़ना, दुःखितहोना, कलपकरना, माड़ी लगाना ।

कलपाना॰ स॰ क्रि॰ कुढ़ाना, दुःखीकरना, कलपकराना, माड़ीलगवाना ।

कलभ॰ ना॰ पु॰ हाथी, कलुष, उत्ताल वा साधु ।

कलम॰ ना॰ स्त्री॰ लेखनी यह अरबी शब्द है ।

कलमलाना॰ अ॰ क्रि॰ कुलबुलाना ।

कलरव॰ ना॰ पु॰ कबूतर, कोकिला ।

कलबल॰ ना॰ पु॰ कलकेवल, तोतरी बात ।

कलविंक॰ ना॰ पु॰ गरैया पक्षी ।

कलश० ना० पु० घट जो विवाह आदिमें स्थापित करते हैं, घड़ा, गगरा।
कलस० ना० पु० शूल, कलश।
कलसी० ना० पु० छोटाकलश, गगरी।
कलह० ना० पु० विरोध, लड़ाई, झगड़ा।
कलहंस० ना० पु० राजहंस, मैलाहंस।
कलहा० } गु० लड़का, झगड़ालू।
कलहारा० }
कलही० ना० स्त्री० कर्कशा, लड़ाकी।
कलत्र० ना० स्त्री० पत्नी, स्त्री विवाहिता।
कला० ना० स्त्री० सोलहवां अंश, बाट।
कलाई० ना० स्त्री० पहुंचा, रंगासूत।
कलावंत० ना० पु० गवैया, गायक।
कलाद० ना० पु० सुनार जाति,यथा नाडींधमः। •स्वर्णकारः कलादोरुक्मकारकः इत्यमरः।
कलाधर० ना० पु० चन्द्रमा, नृत्यक, बहुरूपी।
कलाना० स० क्रि० भुनाना।
कलानिधि० ना० पु० चन्द्रमा।
कलाप० ना० पु० समूह, व्याकरण विशेष गुण० तर्कश, आभरण, चन्द्रमा, दुःख, हरिहर भजन, भौंरों का समूह, ग्राम विशेष।
कलापी० ना० पु० मयूर, मोर।
कलापशाक० ना० पु० मटरका साग।
कलार० } ना० पु० कलवार, सूंडी।
कलाल० }
कलि० ना० पु० चौथायुगजो ४३२००० वर्ष का होता है वेदोक्त समय का नाशक, समय कलियुग, युद्ध, पाप, क्लेश, सूर्मा, तर्कश।
कलिकवि० ना० पु० कालिदासादि।
कलिका० ना० स्त्री० सरफोंका, कली, बिना फूलाफूल।
कलिकारी० ना० स्त्री० कलिहारी।
कलिंग० ना० पु० इन्द्रयव, तरबूज, कटकरंजका पौधा, देश विशेष, राजा विशेष।
कलित० गु० बढ़ताभया, सुन्दर।
कलिद्रुम० ना० पु० बहेड़ा।
कलिन्द० ना० पु० तरबूज पर्वत विशेष।
कलिमल० ना० पु० पाप, दोष।
कलिमलसरि० ना० स्त्री० कर्मनाशानदी।
कलियाना० अ० क्रि० कली निकलना, फूलना।
कलिल० ना० पु० क्लेश, संकट, दुःख।
कली० ना० स्त्री० कलिका, बरी।
कलुष० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह।
कलेऊ० ना० पु० बासी रसोई, प्रातःकाल में थोड़ाभोजन।
कलेजा० ना० पु० अंग विशेष, सूर्म्मापन, साहस।
कलेवर० ना० पु० देह, तन।
कलेवा० ना० पु० कलेऊ वह जो विवाह में दूलह को खिलाते हैं।
कलेश० ना० पु० क्लेश।
कलोर० ना० पु० ओसर, नई गाय।
कलोल० ना० स्त्री० खेल, मगनता।
कल्की० ना० पु० दशवां अवतार, म्लेच्छान्तक जो कलि के अन्त में सम्भल में होगा।
कल्प० ना० पु० ब्रह्माका दिन रात, प्रलय, कल्पवृक्ष, सामर्थ्य, विचार, रचना, बदलना, शास्त्र विशेष।
कल्पतरु० ना० पु० कल्पवृक्ष।
कल्पना० अ० क्रि० खेदित होना, मान लेना, फ़र्ज़ करना, तर्क, लालसा, कष्ट।
कल्पान्त० ना० पु० कल्पका अन्त, क़यामत।
कल्पित० गु० रचित, विचारित, मानाहुआ।
कल्याण० ना० पु० कुशल, मंगल, बढ़ती।
कल्लर० गु० ऊसर।
कल्लाना० अ० क्रि० जलनि पड़ना, पिराना।
कल्लोलिनी० ना० स्त्री० तरंगयुत।
कवच० ना० पु० झिलम, बख्तर, रक्षक, ग्रन्थ विशेष।
कव्य० ना० पु० छन्द विशेष।
कवर्ग० ना० पु० ककारादि पंचअक्षर।
कवरी० ना० स्त्री० केशपाश, बेणी, बाबरी।

कवल० ना० पु० ग्रास, लुकमा।
कवि० ना० पु० भाट, श्लोक व छन्दकर्त्ता, शायर।
कवित० ना० पु० छन्द, पद्य।
कविता० } ना० स्त्री० पद्य, श्लोक, छन्द।
कविताई० }
कविमाता० ना० स्त्री० शुक्राचार्यकी माता।
कविपुंगव० ना० पु० बड़ा कवि, श्रेष्ठकवि।
कविराज० } ना० पु० बड़ाकवि, उत्तमकवि।
कवीश्वर० }
कशार० ना० पु० कचनार।
कशेरू० } ना० पु० कसेरू।
कशेरुक० }
कश्मीर० ना० पु० काश्मीर।
कश्यप० ना० पु० मुनि, मरीचि, प्रजापति का पुत्र।
कश्यपी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती, जमीन जो कश्यपसे सम्बन्ध रक्खे।
कषाय० गु० कसैला रस।
कष्ट० ना० पु० दुःख, पीड़ा, दर्द।
कष्टनाश० ना० पु० नीलकण्ठ पक्षी जिस को कष्टनाश कहते हैं।
कष्टित० } गु० दुःखित, पीड़ित, रंजीदः।
कष्टी० }
कस० अव्य० कैसा, किसप्रकार।
कसक० ना० पु० पीड़ा, दुःख।
कसकना० अ० क्रि० दुःखभोगना, दुःखहोना।
कसकसा० गु० बालू मिलाहुआ पदार्थ।
कसन० ना० पु० ढट्ठी, यन्त्रणा।
कसना० स० क्रि० खेंचना, जांचना, घीसेभूनना, तलना, आजमूदाकरना।
कसा० गु० खींचाहुआ।
कसाई० ना० स्त्री० खिंचावट।
कसाना० स० क्रि० खिंचाना, जंचाना, घी में भुनवाना, तलना।

कसान० ना० पु० वह पदार्थ जिससे कसाजावे।
कसुभिक्त० ना० पु० नींबवृक्ष।
कसेरू० ना० पु० जलका कन्द विशेष।
कसेरुक० ना० पु० कसेरू।
कसेरुका० ना० स्त्री० पीठकी हड्डी।
कसेरा० ना० पु० कांसकारक, कासगर, जाति विशेष, बर्त्तन बनानेवाला।
कसैला० } गु० कषाय, कसैला।
कसेला० }
कसैया० गु० कसनेवाला।
कसौटी० ना० स्त्री० स्वर्णादिपरीक्षकपाषाण।
कस्तूरी० ना० स्त्री० मृगमद, मुश्क।
कस्मल० ना० पु० पाप, मूर्च्छा।
कस्मर्यो० ना० स्त्री० कम्भार।
कस्मिन्० सर्व० कौन।
कस्य० सर्व० किसको।
कस्यप० ना० पु० कश्यपमुनि विशेष।
कहतूति० ना० स्त्री० कहावत, मसल।
कहना० स० क्रि० बोलना, जताना, आज्ञा करना, वर्णन करना।
कक्ष० ना० स्त्री० कांख, बगल।
कक्षा० ना० स्त्री० ग्रहों की चालका मंडलाकार पन्थ।
कहलाना० स० क्रि० बुलवाना, जतलाना, सुनाना।
कहा० सर्व० क्या० ना० पु० आज्ञा।
कहानी० ना० स्त्री० कथा, क़िस्सा, वृत्तान्त।
कहार० ना० पु० जातिविशेष धीमर।
कहावत० ना० स्त्री० बात, दृष्टान्त, मसल।
का० सर्व० किसी, क्या, संबन्धार्थी।
कांकर० ना० पु० कंकर।
कांख० ना० स्त्री० कक्ष, बगल, कराह।
कांखना० अ० क्रि० कलाहना, घुरनाना, स० क्रि० छेदना, दबाना।
कांगनी० ना० स्त्री० पौधा विशेष, बीज उसका।

कांच० गु० कच्चा, ना० पु० गुदा में रोग विशेष ना० स्त्री० शीशा।

कांजी० ना० पु० जल विशेष, भात को सड़ाय के बनता है।

कांटा० ना० पु० कंटक, स्वर्णादिक तौलनेका यन्त्र तुला, जलमें गिरीहुई वस्तु निकालने का यन्त्र।

कांठा० गु० किनारा, अन्त, छोर, समीप।

कांड० ना० पु० खण्ड, तीर विशेष।

कांड़ी० ना० स्त्री० कड़ी, धरन।

कांदू० ना० पु० चीनी पकानेका कड़ाह, भूजा जाति विशेष, भुर्जी।

कांदौ० ना० स्त्री० कीच, कीचड़, कांदो।

कांधना० अ० क्रि० मानना स्वीकारकरना।

कांधा० ना० पु० कन्धा।

कांपना० अ० क्रि० दलदलाना, थरथराना।

कांस० ना० पु० तृण विशेष।

कांसा०
कांस्य० } ना० पु० धातुविशेष।

कांक्षा० ना० स्त्री० इच्छा, मनोरथ।

काई० ना० स्त्री० हरी वस्तु जो तालादि में लगती है।

काऊ० सर्व्व० जिसको, किसी को।

काक० ना० पु० कौआ, पक्षी विशेष।

काकजंघा० ना० स्त्री० पौधा विशेष।

काकटम्बपुष्पी० ना० स्त्री० महामुण्डी।

काकतिक्ता०
काकपर्ई० } ना० स्त्री० कागजंघा।

काकपक्ष० ना० पु० जुल्फ, बानरी, काकुल, कौआ के पंख।

काकभुशुण्डि० ना० पु० प्रसिद्ध पक्षी श्रीरामायण वक्ता।

काकर० सर्व्व० किसका।

काका० ना० पु० पिताका भाई, चचा।

काकिणी० ना० स्त्री० २० कौड़ी को कहते हैं, लीलावत्यां यथा वराटिकानांदशकद्वयं यत्साकाकिणीताश्चपणश्चतस्रः, तेषोडशद्रम्मइहाभिगम्यो द्रम्मैस्तथाषोडशभिश्चनिष्कः।

काकी० ना० स्त्री० काका की पत्नी, चाची।

काकू० ना० पु० व्यंग्यवचन, कटीबात।

काकोदर० ना० पु० सर्प्प, कौवाका पेट।

काकोल० ना० पु० विष, हलाहल।

काख० ना० स्त्री० कांख, कक्ष।

काखअलाई० ना० स्त्री० कखौरी।

काग० ना० पु० काक, कौआ।

कागासुर० ना० पु० काकरूपी दैत्य जिसकी जीभ श्रीकृष्णचन्द्रजीने तोड़दीथी।

काच० ना० पु० कांच, गु० कच्चा।

काचक० ना० पु० बांस।

काचा० गु० कच्चा, अज्ञानी।

काछ० ना० स्त्री० धोतीका दूसरा सिरा जो पीछे को खींचते हैं, कमर, जंघाका ऊपरभाग।

काछना० स० क्रि० काछमारना, चढ़ाना, पोछना, बटोरना।

काछनी० ना० स्त्री० काछ विशेष।

काछी० ना० पु० मुराऊ जाति विशेष।

काज० ना० पु० कार्य्य, काम।

काजल० ना० पु० कज्जल, अंजन, सुरमा।

काजी० गु० कार्य्य कर्त्ता, कामी।

कांचन० ना० पु० सुवर्ण, सोनाधातु।

कांचनपुष्पिका० ना० स्त्री० मूसली।

कांचनार० ना० पु० कचनार वृक्ष।

कांचनी० ना० स्त्री० हल्दी, सोनेकी पुतली, पर्वती वेश्या।

कांची० ना० स्त्री० पुरीविशेष, जिसके दो भाग हैं एक विष्णुकांची दूसरी शिवकांची।

काट० ना० स्त्री० चीरा, मैल, तीक्ष्णता, तेजी।

काटना० स० क्रि० कतरना, टुकड़े करना, काटखाना, लवना अर्थात् लौनी, आराकरना, रहना, बिताना, रोकना, लज्जित होना, छीलना, लज्जितकरना।

काटमाण्डु॰ ना॰ पु॰ नैपालदेशकीराजधानी।

काठ॰ ना॰ पु॰ काष्ठ, सूखीलकड़ी।

काठिन्य॰ ना॰ पु॰ कठिनता, कठोरपन।

काठियावाड़॰ ना॰ पु॰ देशविशेष।

काठी॰ ना॰ स्त्री॰ घोड़े के ऊपरका काष्ठ का आसन, मियान जिसमें तलवार रखते हैं, तन, देह, डौल, लकड़ी।

काढ़ना॰ स॰ क्रि॰ निकालना, चमड़ा उधेड़ना, कपड़े में फूल बूटा बनाना, चालसिखाना।

काढ़ा॰ ना॰ पु॰ क्वाथ।

काण॰
काणा॰ } गु॰ एकाक्ष, एकनयन।

काणी॰ ना॰ स्त्री॰ एक आंखिवाली।

काण्ड॰ ना॰ पु॰ खण्ड, प्रकरण।

काण्डरुहा॰ ना॰ स्त्री॰ कुटकी।

कातना॰ स॰ क्रि॰ सूत रुई से बनाना रहँटा के द्वारा।

कातर॰ गु॰ डरपोकना, व्याकुल, ना॰ पु॰ जंगल, दुर्भिक्ष, कोल्हू की पाटि।

कातिक॰ ना॰ पु॰ आठवां महीना।

कातिकी॰ ना॰ स्त्री॰ कातिक की वस्तुआदि, कातिककी पूर्णमासी।

काती॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी तलवार, कत्ती।

कात्यायन॰ ना॰ पु॰ मुनिविशेष, स्मृतिविशेष।

कात्यायनी॰ ना॰ स्त्री॰ देवीविशेष, स्मृति विशेष, कात्यायन वंशी।

कादम्बिनी॰ ना॰ स्त्री॰ मेघमाला।

कादर॰ गु॰ डरपोकना, व्याकुल।

कादरता॰
कादराई॰ } ना॰ स्त्री॰ भय, डर, डरपोकनापन।

काधना॰ स॰ क्रि॰ कांधना, कांधे धरना।

कान॰ ना॰ पु॰ कर्ण, श्रवण, लाज, अदब।

कानन॰ ना॰ पु॰ बन, जंगल, ब्रह्माकामुख।

कानि॰ ना॰ स्त्री॰ मर्याद, संकोच, अदब, लाज।

काना॰ ना॰ पु॰ अक्षर की खड़ी लकीर, काणा, कड़ाही आदि का गहना।

कानी॰ ना॰ स्त्री॰ जो एक आंख की होवे।

कानीन॰ गु॰ नीच, क्षुद्र, स्त्री॰ लड़की, रामचन्द्रिकायां अद्यापि आनी नरे वन्दिकानीन।

कान्त॰ ना॰ पु॰ पति, स्वामी, सुन्दर।

कान्ता॰ ना॰ स्त्री॰ पत्नी, प्यारी।

कान्ताह्वा॰ ना॰ स्त्री॰ प्रियंगु औषधि।

कान्ति॰ ना॰ स्त्री॰ शोभा, चमक और नाम चन्द्रमा की एक कला का।

कान्तिपाषाण॰ ना॰ पु॰ चुम्बक।

कान्दा॰ ना॰ पु॰ जलका कन्द, कलकंदरा।

कान्यकुब्ज॰ ना॰ पु॰ देश विशेष, ब्राह्मण विशेष।

कान्ह॰
कान्हर॰ } ना॰ पु॰ श्रीकृष्ण जी का एकनाम।

कापट्य॰ गु॰ शठता, कपट।

कापथ॰ ना॰ पु॰ अतिमार्ग, कठिनमार्ग।

कापुरुष॰ गु॰ कुत्सित, मनुष्य, बुरा आदमी, कुजन, कुकर्मी नर।

काम॰ ना॰ पु॰ भोगकार्य्य, अभिलाष, कामदेव, लाज, विषय, बधावा, सुन्दर।

कामक॰ ना॰ पु॰ मेघ।

कामकेलि॰ ना॰ स्त्री॰ दुलार, प्यार, संगम, प्रसंग।

कामकञ्चुका॰ ना॰ स्त्री॰ घुंघची।

कामतरु॰ ना॰ पु॰ कल्पवृक्ष।

कामद॰ गु॰ कामना दाता।

कामदगो॰ ना॰ स्त्री॰ इन्द्रकी गाय।

कामदूती॰ ना॰ स्त्री॰ वसन्तऋतु, कुम्भी।

कामदेव॰ ना॰ पु॰ मदन, मन्मथ।

कामधेनु॰ ना॰ स्त्री॰ इन्द्रकी गो, देवगौ।

कामना॰ ना॰ स्त्री॰ इच्छा, कामाभिलाष, मदन।

कामपाल० ना० पु० बलदेवजी।

कामबन० ना० पु० जिस बनमें श्री सदाशिव ने कामदेव को जलाया था।

कामरी० ना० स्त्री० कम्मल।

कामरूप० ना० पु० इच्छाचारी, सुन्दर, देश विशेष।

कामरूपी० गु० बहुरूपिया, सुन्दर, कामरूप वासी।

कामसखा० ना० पु० इन्द्र, वसन्तऋतु।

कामांग० ना० पु० आम्रवृक्ष।

कामातुर० } गु० मदनमत्त, कामी, चुल-
कामार्त्त० } हारा।

कामिनी० ना० स्त्री० उत्तम, सुन्दरी, ना० पुष्प वृक्ष विशेष, कामातुर स्त्री।

कामी० गु० कामातुर, बहुधन्धी, मतलबी माधवी वृक्ष।

कामुक० ना० पु० स्त्री के सुख में आसक्त, कामातुर।

कामोद० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।

काम्बोज० ना० पु० देश जो बंगाले के दक्षिण पूर्व है।

काम्य० गु० सुन्दर, अच्छा।

काम्यकर्म० ना० पु० स्वर्गादि फलों के लिये जो कर्म करना।

काय० ना० स्त्री० देह, तन।

कायक० गु० देही।

कायफल० ना० पु० औषध विशेष।

कायर० गु० भयमान, डरपोक, हेठा।

कायस्थ० ना० पु० जातिविशेष गु० जो निज काया में स्थितहो अर्थात् सन्तुष्ट।

कायस्था० ना० स्त्री० हर्र, काकोली।

काया० ना० स्त्री० देह, तन।

कायाकल्प० ना० पु० देहका बदलना।

कारक० ना० पु० क्रियाका साक्षात् निमित्त।

कारज० ना० पु० कार्य, काम।

कारण० ना० पु० निमित्त, लिये, सबब, प्रकृति।

कारणी० गु० कारण, कर्त्ता।

कारवल्ली० } ना० पु० करेला, तरकारी।
कारवेल्ल० }

कारवी० ना० स्त्री० अजमोद, कलौंजी।

कारागार० } ना० पु० बन्दीघर, जेहलखाना।
कारागृह० }

कारु० } ना० पु० शिल्पकार, थवई।
कारुकर० }

कारुणिक० गु० दयालु, कृपालु।

कार्त्तस्वर० ना० पु० सुवर्ण, कांचन।

कार्तिक० ना० पु० कातिक।

कार्तिकेय० ना० पु० स्वामिकार्तिक।

कार्पण्य० ना० पु० दरिद्रता, दीनता।

कार्पास० ना० स्त्री० कपास।

कार्मुक० ना० पु० धनुष, महानिंब वृक्ष।

कार्य्य० ना० पु० प्रयोजन, काम।

कार्षापण० ना० पु० कौड़ी के सोलहपण का माप अथवा तोल।

काल० ना० पु० मृत्यु, दुर्भिक्ष, समय, कल, काला, धर्मराज, सर्प, सुन्दर, यमराज इ०।

कालक० ना० पु० कृष्णता, बीजगणित में प्रमाण का बोधक।

कालकूट० ना० पु० विष, हलाहल।

कालपीलुक० ना० पु० तेंदुआवृक्ष।

कालपर्णी० ना० स्त्री० कालानिसोत।

कालमेषिका० ना० स्त्री० मजीठ, बाकुची।

कालमेषी० ना० स्त्री० कालानिसोत।

कालयमन० ना० पु० नाम एक म्लेच्छका जिसको श्रीकृष्णचन्द्र ने भस्म किया था।

कालराति० } ना० स्त्री० प्रलयकालकी राति,
कालरात्रि० } अंधेरीराति, देवी विशेष।

कालबाहन० ना० पु० भैंसा।

कालवृन्तिका० ना० स्त्री० कुम्भी जो पानी में होती है।

कालशाक० ना० पु० सरफोंका।

कालसार० ना० पु० तेंदुआ वृक्ष।

कालसूत्र० ना० पु० नरक भेद।
कालस्कन्ध० ना० पु० तमालवृक्ष।
कालक्षेप० ना० पु० समय काटना, दुःख भोग करना, गुज़रान करना।
कालज्ञ० गु० ज्योतिषी, पण्डित, योगीश्वर, ज्ञाता, मुर्गापक्षी, शृगाल।
काला० गु० कृष्णवर्णी, श्यामरंग।
कालिका० ना० स्त्री० धनियां, मसाला, कालाजीरा, देवीविशेष।
कालिक्यात० ना० स्त्री० किन्दवाली।
कालिन्दी० } ना० स्त्री० यमुनानदी विशेष।
कालिन्द्री० }
कालियक्क० ना० पु० मलय, चन्दन।
कालिया० ना० पु० कालीनाग गु० काला।
काली० ना० स्त्री० मसी, देवीविशेष, मिसर देशकी नदी ना० पु० कालीनाग जो यमुना में रहा करता था।
कालीदह० ना० पु० यमुनाजीमें विशेषस्थान।
काल्पनिक० गु० आरोपित, कल्पना कियागया, ना० स्त्री० नदी विशेष जो दक्षिण में है।
कावेरी० ना० स्त्री० नदी विशेष।
काव्य० ना० पु० पद, श्लोक, छन्द, पुस्तक, जिसमें कविताई हो, शुक्र।
कास० ना० पु० खांसी, खोखी।
कासघ्नी० ना० स्त्री० भारंगी औषधि।
काशमर्द० ना० पु० कलौंजी का साग।
काश्मीर० ना० पु० देश विशेष जो पंजाब के उत्तरहै, पुहकरमूल।
काश्मीरी० ना० स्त्री० केसर, कम्भारी, काश्मीरदेशवासी।
काश्यप० ना० पु० कश्यपकी सन्तान।
काश्यपी० गु० सूरज का रथवान।
काशी० ना० पु० नगर विशेष।
काष्ठ० ना० पु० काठ, लकड़ी।
काष्ठकेता० ना० पु० बढ़ई।
काष्ठमटछा० ना० स्त्री० कुम्भी।
काष्ठान्तर० ना० पु० काठके भीतर।
काष्ठा० ना० स्त्री० फटकरी।
कासार० ना० पु० तालाब, भैंसा।
कासु० सर्व० किसको।
काहन० ना० पु० कार्षापन।
काहे० सर्व० क्यों।
काक्षी० ना० स्त्री० फटकरी।
कि० अव्य० प्रथमवाक्य का द्वितीयवाक्य से सम्बन्धकारक।
किंशुक० ना० पु० पलाश, ढाख, टेसू।
किंकर० ना० पु० टहलुआ।
किंकरी० ना० स्त्री० दासी, टहलुइन।
किंकिणी० ना० स्त्री० कटिबन्ध घंटी समेत, काकईवृक्ष।
किक्यान० ना० पु० घोड़ा।
किचकिचाना० अ० क्रि० दांतपीसना।
किचड़ाना० अ० क्रि० आंखों में कीचड़आना।
किचपिचाना० अ० क्रि० गड़बड़ाना।
किंचित्० अव्य० थोड़ा, अल्प, कुछ।
किंचिन्मात्र० गु० कुछ, अतिअल्प।
किंचुक० ना० पु० संज्ञाविशेष।
किंचुकी० ना० स्त्री० चोली, अंगिया।
किंजल्क० ना० पु० सिफाकन्द।
किटि० ना० पु० सुअर, सूकर, यथा वराहःशूकरो घृष्टिःकालपोत्री किरिःकिटिः, इत्यमरः।
किड़किड़ाना० अ० क्रि० क्रोधसे दांतपीसना।
किड़हा० ना० पु० ऊंगा, गु० घुना।
कित० अव्य० कहां, किधर।
कितना० }
कितनी० } गु० प्रमाण का प्रश्नकारक।
किती० }
कितेक० गु० बहुत।
किते० अव्य० किधर।
कित्ति० ना० स्त्री० कीर्ति, यश, रामचन्द्रिकायां यथा, अखण्ड कीर्त्तिलेयभूमि देयमान लेखिये।

किधर० अव्य० कहां।
किनारा० ना० पु० तट, कूल।
किनारी० ना० स्त्री० गोटा, मग़ज़ी।
किन्० ना० पु० घाव, अव्य० क्योंनहीं।
किन्तव० ना० पु० धतूरा।
किन्तु० अव्य० परन्तु, तिसपरभी।
किन्नर० ना० पु० यक्षदेवता।
किन्नरी० ना० स्त्री० सारंगी, यक्षिणी।
किपजता० ना० पु० कैथा का वृक्ष।
किम्० सर्व्व० क्यों, किसप्रकार।
किमपि० सर्व्व० क्योंभी, किसप्रकार।
किमर्थ० सर्व्व० किसलिये।
किमाक्ष० ना० पु० खजुहा, कौंच।
किमिं० सर्व्व० क्यों, किसप्रकार।
किम्पुरुष० ना० पु० नवखण्ड धरातल में से एक, नामर्द, कुछेक पौरुषी।
किंवा० अव्य० अथवा।
किरकिटी० ना० स्त्री० छोटी लकड़ी।
किरकिरा० गु० रेतीला, बालुआ।
किरकिराना० अ० क्रि० किचकिचाना, बलखाना।
किरण० ना० स्त्री० रश्मि, शुआ।
किरात० ना० पु० भील, जातिविशेष, चिरायता।
किरातक० ना० पु० चिरायता।
किराना० स० क्रि० साफ करना, ना० पु० मसाला, औषधि वगैरह।
किरि० ना० पु० किटि, शूकर।
किरिच० ना० स्त्री० तलवार, टुकड़ा।
किरिया० ना० स्त्री० शपथ, सौगन्द, सौंह, क्रिया।
किरीट० ना० पु० मुकुट, ताज।
किरीटी० ना० पु० अर्जुन ना० स्त्री० शंखाहूली औषधि, गु० मुकुटधारी।
किल० अव्य० निश्चित।
किलमी० ना० स्त्री० कीटविशेष।
किलाकिल० ना० पु० वानरों का शब्द।
किलिम० ना० स्त्री० देवदारु।
किलकारी० ना० स्त्री० प्रसन्नता से हँसना।
किलकारीमारना० अ० क्रि० प्रसन्नहोके जय जयकार करना, खूब हँसना।
किलकिलाना० अ० क्रि० चिड़चिड़ाहोना।
किल्ली० ना० स्त्री० कुंजी, कीली।
किल्बिष० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह।
किसलय० ना० पु० नवीनपत्ता।
किशोर० ना० पु० तरुणअवस्था अर्थात् १६ वर्षतक का लड़का।
किसनई० ना० स्त्री० खेतीका काम।
किसान० ना० पु० जोतार, खेत करनेहारा, जाति विशेष।
कीकड़० ना० पु० बबूल।
कीच०, कीचड़० } ना० पु० कांदो, चहला।
कीट० ना० पु० कीड़ा।
कीटनारी०, कीटसारी० } ना० स्त्री० हंसपादी पौधा।
कीड़ा० ना० पु० कीट, कृमि, किरम।
कीतनक० ना० पु० मुलहठी।
कीना० स० क्रि० करना।
कीर० ना० पु० तोतापक्षी यथा कीरशुकौ समौ इत्यमरः।
कीरत०, कीरति० } ना० स्त्री० कीर्त्ति, बड़ाई, तारीफ़।
कीर्त्तन० ना० पु० गाना, कीर्तन, कहना।
कीर्त्ति० ना० स्त्री० यश, स्तुति, नेकनामी।
कील० ना० स्त्री० लोहेका कांटा।
कीलना० स० क्रि० मन्त्र फूककर रोकना।
कीला० ना० पु० लोहेका कांटा।
कीलाल० ना० पु० जल, पानी।
कीश० ना० पु० वानर, बन्दर।
कु० अव्य० यह अक्षर जिस शब्द के प्रथम में संयुक्त होता है उसका अर्थ कभी बुरा, कभी निन्दित, कभी न्यून होताहै, पृथ्वी, धरती।

कुंवर० } ना० पु० कुमार।
कुंवारा० }
कुंवारी० ना० स्त्री० कुमारी।
कुआरा० ना० पु० विनाब्याहा लड़का।
कुआरी० ना० स्त्री० कन्या विना विवाही।
कुकन्या० ना० स्त्री० पृथ्वीकी कन्या विशेष श्री सीताजू; गु० दुष्ट कन्या।
कुकर्म० ना० पु० बुराकाम।
कुकर्मी० गु० कुकर्म्म करनेहारा।
कुकुट० ना० पु० मुरगा।
कुकुटाण्ड० ना० पु० सफेदभांटा, कुक्कुटका अण्डा।
कुकुटी० ना० स्त्री० मुरगियां, मुरगी।
कुकुरन्द० ना० पु० जंगली करौंदा।
कुक्रिया० ना० स्त्री० निन्दिताचरण, तुच्छकर्म्म।
कुगृह० ना० पु० लटाघर, बुराघर।
कुघाट० ना० पु० बेडौल, बदसूरत, कुत्सित घाट, जहां घाट न हो।
कुघात० ना० स्त्री० कुसमय मारना, बुरीघात।
कुंकुम० ना० पु० केसर, जाफ़रान।
कुंकुमा० ना० पु० गुलाल भरने के लिये जो लाखका बनता है।
कुच० ना० पु० स्तन, चूंची, उरोज।
कुचन्दन० ना० पु० पतंग जिससे कपड़ारंगते हैं।
कुचलना० स० क्रि० चूरकरना, मसलना।
कुचला० ना० पु० औषधिविशेष।
कुचिया० ना०स्त्री० लोलकी, कानका अधोभाग।
कुचैला० गु० मैला।
कुचैना० गु० दुःख, अप्रसन्नता।
कुछ० सर्व्व० थोड़ा, रंचक।
कुज० ना० पु० मंगल, वृक्षादि, भौमासुर।
कुजाति० गु० नीचजाति वा नीच।
कुञ्चित० गु० छल्लेदारबाल, गथुवारेबाल।
कुञ्चिका० ना० स्त्री० कुंजी, ताली।
कुंची० ना० स्त्री० कलौंजी।
कुंज० ना० पु० वृक्ष लतादि रचित रमणीय स्थान, तंगगली, पक्षीविशेष।
कुंजर० ना० पु० हाथी, मुख्यप्रधान, रामायणे यथा, कपि कुंजरहि बोलिलैआये।
कुंजिका० } ना० स्त्री० ताली० चाबी।
कुंजी० }
कुटकी० ना० स्त्री० औषधि विशेष, कीट विशेष।
कुटज० ना० पु० इन्द्रयव।
कुटना० ना० पु० भड़ुआ, अ० क्रि० पिटना।
कुटनाना० स० क्रि० फुसलाना।
कुटनी० ना० स्त्री० दूती, नायिका।
कुटाना० स० क्रि० पिटवाना।
कुटिल० गु० टेढ़ा, क्रूर।
कुटिलता० } ना० स्त्री० टेढ़ापन, क्रूरता।
कुटिलाई० }
कुटी० } ना० स्त्री० मढ़ी, झोपड़ी, एकांत स्थान, सुमिया।
कुटीर० }
कुटीरा० }
कुटुंम० ना० पु० कुटुम्ब।
कुटुमी० ना० पु० कुटुम्बी।
कुटुम्ब० ना० पु० कुनबा, घराना।
कुटुम्बी० ना० पु० गृहस्थ, घरवाला।
कुटेव० ना० स्त्री० कुभाव, कुचालि, बुरी लो।
कुट्टनी० ना० स्त्री० कुटनी।
कुठार० ना० पु० फरसा, कुल्हारा, तबर।
कुठारी० ना० स्त्री० कुल्हाड़ी, टांकी।
कुठाहर० ना० पु० कुसमय, बे मौका।
कुड़कना० } अ० क्रि० क्रोधयुक्त हांकर कहना, रिसाय के बोलना।
कुड़कुड़ाना० }
कुढ़ना० अ० क्रि० विलापकरना, कलपना, डाहकरना, हसदकरना
कुढ़ाना० स० क्रि० सताना, छेड़ना।
कुणटन० ना० पु० स्योनावृक्ष।
कुण्ठित० गु० लज्जित, गुठला, अतीव।

कुण्ड० ना० पु० अग्निरखनेके लिये कृत्रिमकुण्ड, जलका विशेष स्थान, पतिविद्यमान होते जारज पुत्र, गड्हा, तालाब।

कुण्डल० ना० पु० कर्णभूषण, घेरा, मंडला, मोती।

कुण्डलिया० ना० स्त्री० गोलाई, छन्दविशेष।

कुण्डलित० गु० गोलाकार, कुंडलयुत।

कुण्डली० ना० पु० कचनार, गुरच।

कुण्डी० ना० स्त्री० कोढ़ी।

कुतुप० ना० पु० दिनका आठवां मुहूर्त्त।

कुतर्क० ना० स्त्री० नीचविचार, बुरीदलील।

कुतर्की० गु० कुतर्क करने हारा।

कुतर्ना० स० क्रि० दांतों से काटना।

कुत्तल० ना० पु० धरातल, रूयज़मीन।

कुतिया० ना० स्त्री० कुत्ताकी स्त्री, गु० कूतनेहारा।

कुतुक० ना० पु० कौतुक।

कुतूहल० ना० पु० कौतुक, चोप, उतावली, खेल, हँसी।

कुत्ता० ना० पु० कुक्कुर।

कुत्सा० ना० स्त्री० निन्दा, अवज्ञा।

कुत्सित० गु० निन्दित, नीच, बुरा, खराब। निषेधित।

कुदकना० अ० क्रि० उछलना, कूदना।

कुदरा० ना० पु० अस्त्र विशेष, जिससे लकड़ी चीरते हैं।

कुदराना० अ० क्रि० उछलना, कूदना।

कुदाना० स० क्रि० उछलाना, फंदाना।

कुदारि० } ना० स्त्री० मिट्टी खोदने का अस्त्र
कुदला० } विशेष।

कुदृष्टि० ना० स्त्री० पापदृष्टि, बदनज़र।

कुद्दाल० ना० पु० कचनार।

कुधातु० ना० पु० लोहा, रामयणे यथा, पारसपरस कुधातु सोहाई।

कुधि० } गु० निर्बुद्धि, बुरीगति, बेत-
कुधी० } मीज़।

कुनदी० ना० पु० मनसिल।

कुनबा० ना० पु० कुणबा, घराना, खानदान।

कुनीति० ना० स्त्री० कुचाल, कुरीति, अन्याय।

कुन्त० ना० पु० पानी, पवन, कमल, भाला, कराल, राजाविशेष।

कुन्तल० ना० पु० बाल, केश, सूत्रधार, बर्छी, हल, खेतजोतने का, राजाविशेष, वानर विशेष, कपटी।

कुन्तली० ना० पु० चिरपेटा।

कुन्तिज० ना० पु० युधिष्ठिरादि पांडव।

कुन्ती० ना० स्त्री० पांडवोंकी माता।

कुन्द० ना० पु० श्वेतवर्ण, पुष्प विशेष, उज्ज्वल।

कुन्दन० ना० पु० उत्तमस्वर्ण, अच्छासोना।

कुपति० गु० दुष्टपति, दुष्टस्वामी, बुरामालिक।

कुपथ० ना० पु० कुमार्ग, कुराह, बुरीराह।

कुपथ्य० गु० जो पदार्थ पाचक न हो वा रोगी को उपकारी न होवे, बदहज़म।

कुपरामर्श० ना० पु० कुमन्त्रण।

कुपात्र० गु० अयोग्य, नालायक़।

कुपुरुष० गु० पुरुषार्थ रहित, बुरा।

कुपूत० ना० पु० कपूत, नालायक लड़का।

कुप्य० ना० पु० चांदी, रूपा।

कुप्पा० ना० पु० चमका, बड़ापात्र चमड़े का जिसमें घी आदि रखते हैं।

कुप्पी० ना० स्त्री० छोटाकुप्पा।

कुब० ना० पु० कुबड़ा।

कुबजा० ना० पु० कुब्ज।

कुबड़० ना० पु० टेढ़ा।

कुबड़ा० गु० कुब्जा।

कुब्ज० गु० कुबड़ा, वक्रपृष्ठ।

कुब्जा० ना० स्त्री० कुबड़ी, टेढ़ी, कूबरी प्रसिद्ध।

कुबत० ना० स्त्री० निकृष्टवार्त्ता, बुरीबात।

कुमण्डल० ना० पु० धरामंडल, राज्य।

कुमति० ना० स्त्री० मूर्खता, अहमकी, गु० उन्मत्त, मूर्ख।

कुमद॰ ना॰ पु॰ कुमुद।
कुमद्दिन॰ ना॰ पु॰ कफूल।
कुमार॰ ना॰ पु॰ बालक, राजपुत्र, स्वामि-कार्तिक, कामरहित।
कुमारिका॰ } ना॰ स्त्री॰ कन्या, जिसको रजो-
कुमारी॰ } धर्म नहींभया, साधारण सुता, घीकुवारिपौधा।
कुमार्ग॰ ना॰ पु॰ कुपथ, बुरी राह।
कुमुद॰ ना॰ पु॰ कफूल जो राति को खिलता है और दिनको संपुटित होता है उसको श्वेत कमल भी कहते हैं और रामदल में वानरविशेष था, चांदनी, मुद्रहित।
कुमुदबन्धु॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा।
कुमुदिनी॰ ना॰ स्त्री॰ कमलिनी।
कुम्भ॰ ना॰ पु॰ घड़ा, कलश, कलशा।
कुम्भक॰ ना॰ पु॰ कुम्हार, योगक्रिया में पवन पेट वा ब्रह्माण्ड में रोकने को कहते हैं।
कुम्भकर्ण॰ ना॰ पु॰ रावणका छोटाभाई।
कुम्भकार॰ ना॰ पु॰ कुम्हार, कुलाल।
कुम्भज॰ } ना॰ पु॰ अगस्त्यमुनि।
कुम्भजात॰ }
कुम्भयोनिका॰ ना॰ स्त्री॰ गोमापौधा।
कुम्भवार्य्य॰ ना॰ पु॰ रीठा।
कुम्भा॰ ना॰ पु॰ छोटाकुम्भ।
कुम्भिका॰ ना॰ स्त्री॰ कुम्भी।
कुम्भिनी॰ ना॰ स्त्री॰ धरती, पृथ्वी।
कुम्भी॰ ना॰ स्त्री॰ पौधा जो तालाबों में पानी पर जमताहै, ना॰ पु॰ हाथी, कायफल, अगस्त्यमुनि।
कुम्भीनस॰ ना॰ पु॰ सांप।
कुम्भीपाक॰ ना॰ पु॰ नरकविशेष।
कुम्भार॰ ना॰ पु॰ मगरमच्छ।
कुम्भोरुणा॰ ना॰ स्त्री॰ निसोत।
कुम्हलाना॰ अ॰ क्रि॰ मुरझाना, सूखना।
कुम्हार॰ ना॰ पु॰ जो मिट्टी के बर्त्तन बनाताहै।
कुम्हारी॰ ना॰ स्त्री॰ जन्तुविशेष जो अपना घर माटी से बनाता है।
कुयोग॰ ना॰ पु॰ दुष्टयोग, दुःखदायक आइ पड़ जाना, बुरासंयोग, बुराउपाय।
कुयोगी॰ गु॰ विषय भोगी, रामायणे यथा पुरुष कुयोगी ज्यों उरगारी, मोहविटप नहिं सकत उखारी।
कुरंग॰ ना॰ पु॰ हरिण, मृग।
कुरण्टक॰ } ना॰ पु॰ पियावासा।
कुरण्डक॰ }
कुरमा॰ ना॰ पु॰ कुनबा, घराना।
कुरारि॰ ना॰ स्त्री॰ सारसपक्षी।
कुरी॰ ना॰ स्त्री॰ समूह, घराना।
कुरीति॰ ना॰ स्त्री॰ कुचालि।
कुरीर॰ ना॰ स्त्री॰ कुटी, मढ़ी।
कुरु॰ ना॰ पु॰ राजाविशेष जिसकी सन्तान में कौरव और पाण्डव थे, नवखण्ड पृथ्वी में से एक।
कुरुकेतु॰ ना॰ पु॰ दुर्योधन, युधिष्ठिर, राजा परीक्षित।
कुरुचि॰ ना॰ स्त्री॰ नीचवासना, बदहजमी।
कुरुपति॰ } ना॰ पु॰ दुर्योधन, युधिष्ठिर,
कुरुराय॰ } परीक्षित।
कुरुबक॰ ना॰ पु॰ फूलविशेष।
कुरुबंश॰ ना॰ पु॰ राजाकुरु की सन्तान।
कुरुक्षेत्र॰ ना॰ पु॰ पुण्यक्षेत्रजहांभारतभयाथा।
कुरूप॰ गु॰ भोंड़ा, बदसूरत।
कुर्कुटी॰ ना॰ पु॰ सेमर वृक्ष।
कुर्ब्ज॰ ना॰ पु॰ कुब्ज।
कुर्याल॰ ना॰ स्त्री॰ पक्षी जब आनन्द में आकर पख झाड़ता है।
कुल॰ ना॰ पु॰ वंश, वर्ण, घराना।
कुलटा॰ ना॰ स्त्री॰ व्यभिचारिणी, जो स्त्री परप-ति रमण करे अर्थात् पतिव्रता न हो।
कुलथा॰ ना॰ पु॰ वह सम्पदा जो कोई घर वालों से चुराय के इकट्ठाकरे, पूंजी, धन।

कुलतारण॰ ना॰ पु॰ पुत्र जो कुलकी लाज रक्खे वा सुकृत करके पुरुषोंको तारे।

कुलतिय॰ ना॰ स्त्री॰ पतिव्रता, सती, यथा बिहारीलाल सप्तशतिकायां, दोहा, कहत न देवर की कुवत कुलतिय कुलहिडराय, पिंजर ढिग में-जारगति शुकलौं सूखातजाय।

कुलद्रोही॰ गु॰ जो मनुष्य कुकर्म करके वंश को लज्जितकरे वा जो निजकुलको वैरीहोवे।

कुलधर्म॰ ना॰ पु॰ वंशव्यवहार, कुलकाधर्म।

कुलपूज॰ } ना॰ पु॰ कुलका देवता वा मान्य
कुलपूज्य॰ } वा पुरोहित।

कुलबधू॰ ना॰ स्त्री॰ कुलवन्ती, सुतिय।

कुलकुलाना॰ अ॰ क्रि॰ कलमलाना, चुलबुलाना, खुजलाना।

कुलवती॰ ना॰ स्त्री॰ कुलीनस्त्री, पतिव्रता।

कुलवन्त॰ } गु॰ जो अच्छेवंशमें उत्पन्नभया।
कुलवान्॰ }

कुलक्षण॰ ना॰ पु॰ बुरे चिह्न, बुरास्वभाव।

कुलक्षणा॰ स्त्री॰ } जिसके लक्षण बुरेहों वा हैं।
कुलक्षणी॰ गु॰ }

कुला॰ ना॰ स्त्री॰ मनसिल।

कुलांच॰ ना॰ स्त्री॰ कूद, फांदनि, जस्त।

कुलांगना॰ ना॰ स्त्री॰ कुलवान्स्त्रीअथवाकुलटा।

कुलाचार॰ ना॰ पु॰ वंशका धर्म, अपने घरानेकी रीति।

कुलाल॰ ना॰ पु॰ कुम्हार।

कुलाहल॰ ना॰ पु॰ कोलाहल।

कुलिश॰ ना॰ पु॰ वज्र, हीरा।

कुली॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ीकटाई।

कुलीन॰ ना॰ पु॰ अच्छेघर वा वंश में जो उत्पन्नभया।

कुलीनता॰ } ना॰ स्त्री॰ भलेवंशका आचार
कुलीनाई॰ } वा बड़प्पन वा उत्पत्ति, धर्म्म।

कुलीरशृंगी॰ ना॰ स्त्री॰ ककरासिंगी।

कुल्ला॰ ना॰ पु॰ } मुखमें जलको फिराय के
कुल्ली॰ ना॰ स्त्री॰ } फेंकना।

कुल्हाड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ कुठारी जिससे लकड़ी आदि काटते हैं।

कुल्हिया॰ ना॰ स्त्री॰ माटी का छोटा पात्र, चुरकी।

कुवलय॰ ना॰ पु॰ कमल।

कुवादी॰ गु॰ दुष्ट, कुवचनवक्ता।

कुविन्दु॰ ना॰ पु॰ नीचवीर्य, बदजुतफा।

कुविहंग॰ ना॰ पु॰ जुर्रा, श्येन, बाज।

कुवेर॰ ना॰ पु॰ यक्षराज, कुसमय।

कुश॰ ना॰ पु॰ तृणविशेष जो अति पवित्र गिना जाता है, सीताजी का पुत्र, दैत्यविशेष, पानी, पृथ्वी के सात द्वीपों में से एक।

कुशमुद्रिका॰ ना॰ स्त्री॰ कुशकीमुंदरी अर्थात् पैंती जो यज्ञादि में पहिनते हैं।

कुशल॰ ना॰ पु॰ भलाई, कल्याण, चतुर।

कुशलता॰ ना॰ स्त्री॰ भलाई।

कुशलत्व॰ पु॰ कल्याण।

कुशलक्षेम॰ स्त्री॰ } खैरआफियत।
कुशबात॰ }

कुशली॰ गु॰ सुखी, प्रसन्न, निपुण।

कुशासन॰ ना॰ पु॰ कुश का आसन।

कुशील॰ गु॰ शील रहित, बे मुरव्वत।

कुशेशय॰ ना॰ पु॰ कमल।

कुष्ठ॰ ना॰ पु॰ कोढ़ लेड़ा।

कुष्ठकुन्तन॰ ना॰ पु॰ पँवार. बूटी।

कुषेय॰ ना॰ पु॰ खड्ग, तलवार।

कुष्ठसूदन॰ ना॰ पु॰ किरवाली।

कुष्ठी॰ कोढ़ी।

कुसंग॰ ना॰ पु॰ बुरे लोगों का साथ।

कुसमय॰ ना॰ पु॰ कठिन समय, बुरे दिन, आफत।

कुसरात॰ ना॰ स्त्री॰ कुशलात।

कुसीद॰ ना॰ पु॰ लाभ के लिये ऋण देना।

कुसुद्रा॰ ना॰ पु॰ कायफल।

कुसुम॰ ना॰ पु॰ कुसुम फूल, कुसुम्भ।

कुसुमशर॰ ना॰ पु॰ कामदेव।

कुसुमाकर॰ ना॰ पु॰ वसन्त ऋतु।

कुसुमित॰ गु॰ फूलेहुये, प्रफुल्लित।

कुसुम्भ॰ ना॰ पु॰ पुष्पविशेष जिसका बहुतलाल रंग कपड़ेपर आता है।

कुहर॰ / **कुहरा॰** } ना॰ पु॰ कुहासा, कुहर।

कुहराम॰ ना॰ पु॰ विलाप।

कुहुक॰ ना॰ स्त्री॰ कोकिलाका शब्द वा स्वर।

कुहकना॰ अ॰ क्रि॰ कोकिला की रीति से बोलना।

कुहू॰ ना॰ स्त्री॰ पूसकी अमावस।

कुक्षा॰ / **कुक्षि॰** } ना॰ स्त्री॰ कोखि।

कुआं॰ ना॰ पु॰ कूप, चाह।

कुआंर॰ ना॰ पु॰ आश्विन, सातवां महीना।

कूक॰ ना॰ स्त्री॰ आवाज़, शब्द, शोर।

कूकना॰ अ॰ क्रि॰ आह मारना, विलाप करना, स॰ क्रि॰ घड़ी को कुंजी से फेरना।

कूकर॰ ना॰ पु॰ कुत्ता।

कूकू॰ ना॰ पु॰ कपोतका शब्द।

कूचना॰ स॰ क्रि॰ छेदना, घुसड़ना, खूदना, कुचिलना।

कूची॰ ना॰ स्त्री॰ तृणविशेष की वस्तु जिस से भीतमें चूना फेरते हैं वा बाल्लों की वा और किसी वस्तु की।

कूजना॰ अ॰ क्रि॰ बोलना।

कूट॰ ना॰ पु॰ कपट, पर्व्वत, गोप, कागज़, जिसका गाता बनता है, जो निज अस्तिसे पूरणहोवे यथा, निहाई, ना॰ स्त्री॰ भांडैती गु॰ मिथ्या, विरुद्ध।

कूटना॰ स॰ क्रि॰ कुचलना, पीसना, पीटना, दबाना।

कूटरवाहिनी॰ ना॰ स्त्री॰ निसोत।

कूटार्थ॰ ना॰ पु॰ विरुद्धार्थ।

कूटि॰ गु॰ व्यंगवचन।

कूटी॰ गु॰ दूती, कुटनी, पीठीहुई।

कूड़ा॰ ना॰ पु॰ झाड़न, करकट।

कूढ़॰ गु॰ मूर्ख, उन्मत्त।

कूत॰ ना॰ पु॰ अटकल, अन्दाज़।

कूतना॰ स॰ क्रि॰ मोल ठहराना, अटकलना, अन्दाज़ना, ठीक करना।

कूदना॰ अ॰ क्रि॰ फांदना, उछलना।

कूपार॰ ना॰ पु॰ समुद्र।

कूबरी॰ ना॰ स्त्री॰ कंस की दासी जिसको कृष्णचन्द्रने शुद्ध तन कियाथा वा काठकी टेकनी जो साधुओं के पास होती है गु॰ टेढ़ी।

कूर॰ गु॰ कपटी, कठोर, टेढ़ा।

कूर्दन॰ ना॰ पु॰ कूदना, खेलना।

कूल॰ ना॰ पु॰ तीर किनारा, तट।

कूलद्रुम॰ ना॰ पु॰ किनारेका वृक्ष विशेष्यार्थ, मृत्यु, सान्निध्य।

कूला॰ ना॰ पु॰ एक ओरका चूतड़।

कूली॰ ना॰ स्त्री॰ एक ओरका पुट्ठा।

कूष्माण्ड॰ ना॰ पु॰ कुम्हड़ा, लौका।

कूष्माण्डकी॰ ना॰ स्त्री॰ कुम्हड़ा, खबहा।

कूष्माण्डा॰ ना॰ स्त्री॰ देवीविशेष।

कृकबाकु॰ ना॰ पु॰ मुर्गा।

कृच्छ्रोपवास॰ ना॰ पु॰ चान्द्रायणादि व्रत।

कृत॰ गु॰ कियागया, बना, करतूति ना॰ पु॰ यज्ञ, भाग्य, उपकार।

कृतघ्न॰ गु॰ जो मनुष्य उपकार को नहीं माने, गुण न माने, यज्ञध्वंसी, पातकी।

कृतघ्नता॰ / **कृतघ्नताई॰** } ना॰ स्त्री॰ हित करने से उलटा करे।

कृतघ्नी॰ गु॰ कृतघ्न, किये को मेटे।

कृतनिन्दक॰ गु॰ कृतघ्न।

कृतयुग॰ ना॰ पु॰ प्रथम युग सत्ययुग जो १७२८००० वर्षका होता है।

कृतवर्मा॰ ना॰ पु॰ यादवविशेष।

कृतज्ञ॰ गु॰ जो उपकार मानता है, गुणवादी ना॰ पु॰ कुत्ता।

कृतज्ञता० ना० स्त्री० गुणवाद, उपकार मानना, अहसान मानना।
कृतान्त० ना० पु० यमराज, सिद्धान्त।
कृतार्थ० गु० कृतकार्य, निश्चल, अंशधारी, मुक्त।
कृति० ना० स्त्री० काम करना।
कृत्तिका० ना० स्त्री० तीसरा नक्षत्र।
कृत्रिमरक्त० ना० पु० कांच।
कृत्रिमंताक्ष० ना० पु० रसौत।
कृत्तिवासा० } ना० पु० श्रीमहादेवजी।
कृत्तिवासा० }
कृत्या० ना० स्त्री० देवी, विशेष राक्षसी।
कृत्स्न० गु० अशेष।
कृदन्त० ना० पु० जो शब्द धातु से बना है।
कृपण० गु० सूम, कंजूस, अदाता।
कृपणता० ना० स्त्री० सूमी, कंजूसी, अदातृत्व।
कृपा० ना० स्त्री० दया, मेहरबानी, रहम।
कृपाण० ना० पु० खड्ग, तलवार।
कृपालु० गु० दया, शील, दयावन्त, रहीम।
कृमि० ना० पु० कीड़ा।
कृमिघ्न० ना० पु० विडंग औषधि।
कृमिजग्धा० ना० पु० काला अगरु।
कृश० गु० दुर्बल, क्षीण, लटा।
कृशता० ना० स्त्री० दुर्बलता, क्षीणता।
कृशांगी० गु० जिसके अंग खिंचेहुये हैं।
कृशानु० ना० पु० अग्नि, आगि।
कृषाण० } ना० पु० किसान खेतीवाला।
कृषिक० }
कृषिकर्म० ना० पु० हलजोतना, खेती करना।
कृषी० ना० स्त्री० खेती, किसनई।
कृषीवल० ना० पु० किसान, कृपाण।
कृष्ण० ना० पु० श्रीकृष्ण, श्यामसुन्दरजी, काला जीरा, कालातीतर, कालाहरिण, गु० श्याम, कालारंग।
कृष्णगन्धा० ना० पु० सहिंजन वृक्ष।
कृष्णता० ना० स्त्री० घुंघुची, श्यामता।
कृष्णपक्ष० ना० पु० बदी, अँधेरा पाख।
कृष्णफला० ना० स्त्री० बाकुची, बड़ाकरौंदा।
कृष्णभद्रा० ना० स्त्री० कुटकी।
कृष्णवीज० ना० पु० तरबूज।
कृष्णवृन्तिका० ना० स्त्री० कम्भारी।
कृष्णसार० ना० पु० कालाहरिण।
कृष्णा० ना० स्त्री० नदीविशेष, जो दक्षिण भरतखण्ड में है, पीपरी, यमुनाजी।
कृष्णाग्रज० ना० पु० श्रीबलदेवजी।
कृष्णागरु० ना० पु० काला अगरु।
कृष्णाफल० ना० पु० स्याहमिरच।
कृष्णार्पण० गु० भगवान्हेत।
कृष्णोपकुल्या० ना० स्त्री० पीपरी।
कृसमरी० ना० स्त्री० कम्भारी।
कृत्रिम० गु० बनायाहुआ, रचित।
के० अव्य० संबन्धबोधक।
केकयी० ना० स्त्री० भरतजी की माता।
केकड़ा० ना० पु० कर्कट, गेंगटा।
केकय० ना० पु० राजा वा देशविशेष।
केकरा० ना० पु० केकड़ा।
केका० ना० स्त्री० मोरध्वनि, मोरोंका शब्द।
केकी० ना० पु० मोर, मयूर।
केतकी० ना० स्त्री० केवड़ा वृक्ष वा पुष्पविशेष।
केतिक० गु० थोड़े, दोचार, कितना।
केतु० ना० पु० नवमग्रह, पुच्छलतारा, पताका, झण्डा वा झण्डी।
केतुक० ना० पु० आकाश, पुष्पविशेष, सूर्य, चन्द्रमा, कामदेव, छन्द।
केतुमाल० ना० पु० पृथ्वी के नवखण्डोंमें से एकका नाम।
केन्द्र० ना० पु० मरकज, गोलाकार वा वृत्त-क्षेत्रका वह मध्यस्थान जहां से परिधि तक जितनी रेखा खींची जावें वह सब परस्पर तुल्य हों।
केयूर० ना० पु० आभूषण, जेवर।
केरि० ना० पु० केला वृक्ष, ना० स्त्री० केलि।

केलि० } ना० स्त्री० क्रीड़ा, विहार, ऐश,
केली० } आराम।

केवट० ना० पु० मल्लाह, खेवक।

केवड़ा० ना० पु० पुष्प वा वृक्षविशेष।

केवल० अव्य० मात्र, फकत, गु० एकही।

केवली० ना० स्त्री० जन्मपत्री।

केवा० सर्व्व० कोई।

केश० ना० स्त्री० बाल।

केशफला० ना० स्त्री० बेरी वृक्ष वा उसका फल यथा स्निग्धच्छदा केशफला सौवीरिका, इति निघण्टः।

केशर० ना० पु० केसर, नागकेसर।

केशरंजन० ना० पु० भँगरा पौधा।

केशरी० ना० पु० हनुमान्‌जी के पिता, सिंह।

केशव० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का एक नाम।

केशवेशी० ना० स्त्री० बालों की लट।

केशाकेशि० ना० पु० परस्पर बालों को पकड़ के लड़ना वा लड़ाना।

केशी० ना० पु० दैत्यविशेष जिसको श्रीकृष्णचन्द्रने वध कियाथा गु० बालोंवाला।

केशरिया० गु० केशरसे रंगाभया, पीला।

केहरि० } ना० पु० सिंह, शेर, व्याघ्र।
केहरी० }

कै० सर्व्व० कितना, अनेक।

कैंचली० ना० स्त्री० सांपका खोल।

कैटभ० ना० पु० दैत्यविशेष।

कैत० ना० पु० कैथा का वृक्ष।

कैतव० ना० पु० चिरायता, छल।

कैथ० } ना० पु० वृक्षविशेष।
कैथा० }

कैथी० ना० स्त्री० नागरीका एक प्रकारका लेख जो कायस्थों ने कल्पना किया है।

कैरव० ना० पु० कफूल, श्वेतकमल।

कैल० ना० स्त्री० अंकुर, गाभा।

कैलाश० } ना० पु० पर्व्वतविशेष. जहां शिवजी
कैलास० } और कुबेरआदि यक्षगणरहते हैं।

कैव० ना० पु० कदम वृक्ष।

कैवर्त्त० ना० मल्लाह, कहार, धीमर, केवट।

कैवल्य० ना० पु० मोक्ष, मुक्ति।

कैशिक० ना० स्त्री० बालों की लट।

कैसा० सर्व्व० किसप्रकार।

कैहौं० भवि० क्रि० करूंगा वा कहूंगा।

को० अव्य० कर्मणिसूचक,द्वितीयाका, सर्व्व०कौन।

कोई० सर्व्व० अनिश्चय, एक, ना० पु० कमल विशेष।

कोऊ० सर्व्व० कोई जोहो।

कोखना० स० क्रि० छेदना, चुभाना।

कोपल० ना० पु० नयेपत्ते, गुच्छा।

कोक० ना० पु० ग्रन्थविशेष जिसमें स्त्रीप्रसंग की प्रतिपादकता का वर्णन है, कफूल।

कोकनद० ना० पु० लाल कमल।

कोकर्ण० ना० पु० असगन्ध।

कोका० ना० पु० चकई चकवा, दूधभाई, कफूल, पिण्डखजूर।

कोकिल० } ना० स्त्री० पक्षीविशेष कोयल।
कोकिला० }

कोकी० ना० स्त्री० चकई।

कोख० } ना० स्त्री० कुक्षि।
कोखा० }

कोखबन्ध० गु० बांझ, बन्ध्या।

कोख० ना० स्त्री० कोख, कुक्षि।

कोछा० } ना० स्त्री० गोदी, ओढ़ने की झोली।
कोछी० }

कोट० ना० पु० गढ़ किलआ, नगर।

कोटर० ना० पु० वृक्ष की खोह।

कोटवी० गु० नंगी स्त्री, ना० स्त्री० बाणासुरकी महतारी।

कोटा० ना० पु० राजपूताने का नगरविशेष।

कोटि० ना० स्त्री० एक ओर की भुज, पहिला पक्ष, किरोड़, सौ लाख।

कोठरी० ना० स्त्री० छोटा कोठा।

कोठा० ना० पु० पठाहुआ एक बड़ा घर।

कोठि० ना० स्त्री० कोख।
कोठी० ना० स्त्री० महाजनों वा राजाओं वा ठाकुरों की बैठक का स्थान।
कोड़ना० स० क्रि० खोदना।
कोड़ा० ना० पु० चाबुक।
कोढ़० ना० पु० कुष्ठ, रोगविशेष।
कोढ़ना० अ० क्रि० दुःखी होना।
कोढ़ी० ना० पु० कुष्ठी।
कोण० ना० पु० कोना, दिन, पृथ्वी।
कोद० ना० स्त्री० ओर, पक्ष, तरफ।
कोदण्ड० ना० पु० शिवजी का धनुष, धनुष।
कोद्रव० ना० पु० कादौ, अन्नविशेष।
कोना० ना० पु० जो दो सूधी रेखाओं के मिलान से बनता है परन्तु वे रेखा एक सूध में न हों।
कोप० ना० पु० क्रोध, गुस्सह।
कोपना० अ० क्रि० क्रोधित होना, गुस्सहकरना, ना० स्त्री० स्त्री।
कोपर०
कोपल० } ना० पु० पत्रविशेष।
कोपान्वित० गु० क्रोधयुत, गुस्से से भरा।
कोपी० गु० कोपान्वित, कोई।
कोपीन० ना० स्त्री० लंगोट, लंगोटी।
कोमल० गु० नम्र, नया, भोला, नरम।
कोमलता० ना० स्त्री० नरमी, भोलापन।
कोयल० ना० स्त्री० पक्षीविशेष, पुष्पविशेष।
कोयला० ना० पु० अंगार बुझाभया।
कोर० ना० स्त्री० कगर, छोर धार।
कोरक० ना० पु० कली।
कोरण्डी० ना० स्त्री० छोटी इलायची।
कोरा० गु० विनाधोया कपड़ा, विना लिखा कागज़, मिट्टी का नया पात्र जो काम में न आया हो।
कोरि० ना० स्त्री० कोटि, किरोड़।
कोरी० ना० स्त्री० नई, ना० पु० जातिविशेष।
कोर्थ० सर्व० किस हेतु, किसलिये।
कोल० ना० पु० शूकर, नीचजातिविशेष लाल गली जो लम्बी सँकतड़ी।
कोलवल्लिका० ना० स्त्री० कैथाका वृक्ष।
कोला० ना० स्त्री० पीपरि।
कोलाफल० ना० पु० महुआ वृक्ष।
कोलाहल० ना० पु० कलकल, रौला, शोर।
कोलिका० ना० स्त्री० काली मिरच।
कोलियाना० स० क्रि० गोदी में लेना।
कोल्हू० ना० पु० जिससे तेल निकालते हैं वा ऊख पेरते हैं।
कोविद० गु० पण्डित, गुणी।
कोश० ना० पु० कमल, मध्यभाग।
कोशल० ना० पु० कुशल, देशविशेष।
कोशलपति० ना० पु० दशरथ, श्रीरामचन्द्र, अवधभूप।
कोशलपुर० ना० पु०
कोशलपुरी० ना० स्त्री० } श्रीअयोध्याजी।
कोशलाधीश०
कोशलेश० } ना० पु० कोशलपति, श्रीरामचन्द्रजी।
कोष० ना० पु० अभिधान, भण्डार, अण्ड, खड्गादि की गांठि, लुप्तका खज़ाना, खज़ाना।
कोष्ठ० ना० पु० खात, कोठा, ओझ।
कोष्ठक० ना० पु० तरुता।
कोस० ना० पु० २ मीलका वा २००० दण्डका।
कोसना० स० क्रि० शापदेना, बुरामानना।
कोह० ना० पु० क्रोध, दुःख, डाह, पेट में आग लगना, दिलजलना।
कोहनी० ना० स्त्री० बाहु के बीच की गांठि।
कोहाव० ना० पु० डाहखाना।
कोही० गु० क्रोधी, रामायणे यथा, कर कुठार मैं अकरण कोही। आगेअपराधी गुरु द्रोही॥
कौ० अव्य० का।
कौं० अव्य को।
कौआ० ना० पु० काग।
कौंध० ना० पु० प्रकाश, प्रताप।

कौंधना॰ अ॰ क्रि॰ प्रकाशहोना, चमकना।
कौंधा॰ ना॰ पु॰ बिजली।
कौड़ियाला॰ ना॰ पु॰ सर्पविशेष, धनी, नदी विशेष जिसको सरयू कहते हैं।
कौड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा शंख, धन, कमाई।
कौणप॰ ना॰ पु॰ दैत्य राक्षस।
कौतुक॰ ना॰ पु॰ कौतूहल, परिहास, तमाशा।
कौतुकिया॰ } गु॰ परिहासी, तमाशबीन।
कौतुकी॰ }
कौतूहल॰ ना॰ पु॰ कुतूहल।
कौन॰ सर्व॰ प्रश्नबोधक।
कौन्ता॰ ना॰ स्त्री॰ कुन्ती।
कौन्ती॰ ना॰ स्त्री॰ रेणुका औषध।
कौन्तेय॰ ना॰ स्त्री॰ पाण्डवविशेष।
कौपीन॰ ना॰ पु॰ कोपीन, लंगोटी।
कौमारी॰ ना॰ स्त्री॰ देवीविशेष।
कौमुदी॰ ना॰ स्त्री॰ चन्द्रिका, ज्योति, पुस्तक विशेष।
कौर॰ ना॰ पु॰ कवल, लुकमा।
कौरवपाण्डु॰ ना॰ पु॰ कौरव और पाण्डव।
कौरव॰ ना॰ पु॰ कुरुराजा की सन्तान।
कौरव्य॰ ना॰ पु॰ मुनिविशेष।
कौल॰ ना॰ पु॰ लुकमा, ग्रास, नवाला, धर्म विशेष, गु॰ कुलीन।
कौला॰ ना॰ पु॰ कोठरीआदिके पांजर का कोना, अंकवारा।
कौली॰ ना॰ स्त्री॰ गोदी।
कौलेय॰ ना॰ पु॰ कुत्ता, यथा कौलेयस्सारमेयश्च कुक्कुरो मृगदंशकः इत्यमरः।
कौलिली॰ ना॰ पु॰ गन्धक।
कौबेर॰ ना॰ पु॰ कुटदवा।
कौबेर्य्य॰ गु॰ जो कुबेर सम्बन्धी हो।
कौशल्या॰ ना॰ स्त्री॰ क्षेम कुशल, श्रीरामचन्द्र जीकी माता।
कौशिक॰ ना॰ पु॰ विश्वामित्रमुनि, इन्द्रगुग्गुल, उलूक पक्षी, दण्ड।
कौशिकी॰ ना॰ स्त्री॰ नदीविशेष।
कौशेय॰ गु॰ पाटी वस्त्र।
कौसीस॰ ना॰ पु॰ कमल।
कौस्तुभमणि॰ ना॰ स्त्री॰ मणिविशेष जिसको विष्णुजीने उरपर धारण किया है।
क्या॰ सर्व॰ प्रश्नबोधक।
क्यारी॰ ना॰ स्त्री॰ बागों वा खेतोंमें बनती है।
क्यों॰ }
क्योंकर॰ } अव्य॰ किसलिये, किसप्रकार।
क्योंकि॰ }
क्रकच॰ ना॰ पु॰ करील वृक्ष।
क्रतुध्वंसी॰ ना॰ पु॰ महादेवजी।
क्रतुभुग॰ } ना॰ पु॰ देवता जो यज्ञमें खाते हैं।
क्रतुभुज॰ }
क्रतिमालक॰ ना॰ पु॰ किदवाली।
क्रम॰ ना॰ पु॰ परिपाटी, रीति, सिलसिला, मिलान धारे।
क्रमक्रम॰ ना॰ पु॰ धीरे धीरे, दर्जे दर्जे।
क्रमुक॰ ना॰ स्त्री॰ सुपारी।
क्रमिकुंभ॰ ना॰ स्त्री॰ इन्द्रवारुणी।
क्रमेलक॰ ना॰ पु॰ ऊंट यथा उष्ट्रेक्रमेलकमय महांगः करभः शिशुः इत्यमरः।
क्रव्याद्॰ } ना॰ पु॰ राक्षस,कच्चामांसभक्षी।
क्रव्यात्॰ }
क्रान्ति॰ ना॰ स्त्री॰ चमक, शोभा, दीप्ति, प्रकाश।
क्रिया॰ ना॰ स्त्री॰ व्यवहार, काम, धातु, नित्यकर्म, यत्न, उपाय, मरनेकेपीछे शास्त्रोक्त कर्म्म।
क्रियाद्योत॰ गु॰ कर्त्ताकी दशाकी सूचक।
क्रियान्वयित्व॰ ना॰ पु॰ क्रिया पदकी ओर सम्बन्ध रखना।
क्रीड़ा॰ ना॰ स्त्री॰ केलि, लीला।
क्रीत॰ गु॰ मोल लिया।
क्रीयमान॰ गु॰ किये हुये वा अबके किये।
क्रुद्ध॰ गु॰ रिसवश, क्रोधित, खफा।

क्रूर० गु० कठोर, निठुर, कपटी, टेढ़ा।

क्रूरकर्मा० ना० स्त्री० ऊंचाहोली।

क्रूरवार० ना० पु० शनैश्चर, मंगल, आदित्यवार।

क्रोध० ना० पु० कोप, गुस्सह, भैरवविशेष।

क्रोधातुर०, क्रोधान्ध० } गु० कोपी, क्रोधमें अन्ध, क्रोधमें मस्त।

क्रोधी० गु० कोपी, गुस्सा भराभया।

क्रोश० ना० पु० कोस, दोमील, दो हज़ार दण्डकी माप।

क्रोष्टा० ना० पु० गीदड़, शृगाल।

क्लिशित०, क्लिष्ट० } गु० दुःखित, पीड़ित, रंजीदः।

क्लीव० ना० पु० नपुंसक, हिजड़ा।

क्लेद० ना० पु० गीलापन।

क्लेदित० गु० भीगाभया, तर।

क्लेश० ना० पु० दुःख, पीड़ा, रंज।

क्लेशित० गु० दुःखित, पीड़ित।

क्वचित्० अव्य० कहीं।

क्वाटि० ना० स्त्री० पिण्डखजूर।

क्वाण० ना० पु० कौआ।

क्वाथ० ना० पु० काढ़ा जो रोगीको पिलयाजाता है।

[ख]

खं०, ख० } ना० पु० आकाश, स्वर्ग, घर, शून्य, रन्ध्र इन्द्रिय।

खंखारना० अ० क्रि० खांसना।

खंगना० अ० क्रि० कमहोना, घटना।

खंगालना०, खंघारना० } स० क्रि० धोना, अनवासना।

खग० ना० पु० पक्षी, ग्रह, सूर्य्यादि, मेघ, पवन देवता और तारागण।

खगकेतु०, खगनाथ०, खगनायक०, खगनाह०, खगपति० } ना० पु० सूर्य, चन्द्रमा, गरुड़।

खगमाला० ना० पु० पक्षियोंका समूह, तारागण।

खगहा० ना० पु० गैंड़ा, बाज़, ज़ुर्रा।

खगेन्द्र०, खगेश० } ना० पु० गरुड़, चन्द्रमा।

खगोल० ना० पु० आकाशमण्डल।

खग्ग० ना० पु० वीर, बहादुर।

खचना० स० क्रि० रेखा करना, जड़ना।

खचर० ना० पु० खच्चर, पशुविशेष, मेघ, ग्रहादि।

खचा०, खचित० } गु० जड़ाऊ, खिंचाहुआ।

खजुरिया०, खजूर०, खजूरि० } ना० स्त्री० वृक्षविशेष।

खंज० गु० लंगड़ा; ना० पु० खंजन।

खंजन० ना० पु० पक्षीविशेष जिसे खड़ैचा वा खिरखिन्दा भी कहते हैं।

खंजनक० ना० पु० ममोला, खंजन।

खंजरिट०, खंजरीट० } ना० पु० खंजन।

खट० ना० स्त्री० खाट।

खटक० ना० पु० खटका।

खटकना० अ० क्रि० शब्द होना, झगड़ना, लगना, शंकाकरना।

खटका० ना० पु० सन्देह, शंका, पांवकीआहट।

खटकाना० स० क्रि० आहटदेना, शब्दकरना।

खटखटाना० अ० क्रि० ठकठकाना।

खटछपर० ना० पु० छप्परखट।

खटपट० ना० पु० झगड़ा, लड़ाई।

खटमल० ना० पु० खाट मेंका कीड़ा।

खटाई० ना० स्त्री० अम्ल, खट्टापन, अचार।

खटाका० ना० पु० शब्द, चटाका:

खटास० ना० पु० खट्टापन, जन्तुविशेष।

खटिका० ना० स्त्री० सेलखड़ी।

खटिया० ना० स्त्री० छोटीखाट।

खटीक० ना० पु० जातिविशेष।
खट्टा० गु० अम्ल, अम्बत्।
खटिक० ना० पु० खटीक, आखेटकी।
खट्टु० ना० पु० बनिहार।
खट्वा० ना० स्त्री० खाट।
खड़क० ना० स्त्री० गोशाला।
खड़कना० अ० क्रि० झनझनाना।
खड़खड़ाना० स० क्रि० ठकठकाना, खरोंटा। मारना, झनझनाना।
खड़बराहट० ना० पु० शब्द होना, आहट।
खड़लान० ना० स्त्री० फिसान जिसपर बदि बनाते हैं।
खड़ा० गु० उठा, सीधा, अड़ा, ऊंचा, ठाढ़ा।
खड़ाऊँ० ना० पु० पादुका, कठनई।
खड़िया० ना० स्त्री० छूहीमिट्टी, दूधियामिट्टी।
खड्ग० ना० पु० तलवार, गैंड़ा, अमरे यथा गण्डके खड्गखड्गिनौ।
खण्ड० ना० पु० टुकड़ा, खांड, अध्याय, दिशा।
खण्डन० ना० पु० दूषण, मिटाना, काटना।
खण्डना० स० क्रि० दूषणदेना, तोड़ना, काटना।
खण्डनार्थ० गु० काटने के लिये।
खण्डिनी० ना० स्त्री० काटनेवाली।
खण्डपरशु० ना० पु० श्रीमहादेव।
खण्डर० ना० पु० ऊजड़, वैराना।
खण्डरना० स० क्रि० काटना, टुकड़े करना।
खण्डहल० ना० पु० ऊजड़ मकान, वैराना।
खण्डित० गु० काटागया, कमी, अपूर्ण।
खण्डितकरना० स० क्रि० बातकाटना, खण्डना।
खतिल० ना० पु० पोस्त वा उसका बिरवा।
खत्ता० ना० पु० } गड़हा जिसमेंअन्न भरते हैं।
खत्ती० ना० स्त्री० }
खदिर० ना० पु० खैर, कत्था।
खदेड़० ना० स्त्री० रगेद, अहेर।
खदेड़ना० स० क्रि० रगेदना, भगाना।
खद्योत० ना० पु० सूर्य, तारागण और जुगनू कीट विशेष।

खन० ना० पु० खण्ड।
खनक० ना० पु० मूश, चूहा।
खनकना० अ० क्रि० बजना, शब्दहोना।
खनन० ना० पु० खोदना।
खनना० स० क्रि० खोदना।
खपत० गु० जो बिकगया, स्त्री० बिकावें।
खपना० अ० क्रि० बिकना, सूखना, ठहरना, पैठना, समाना।
खपरा० ना० पु० घरछावने के लिये जो मिट्टी के बनते हैं।
खपरी० ना० स्त्री० शिरका ऊपरी भाग।
खपरैल० ना० स्त्री० घर जो खपरों से छायाहो।
खपाच० ना० स्त्री० काठका टुकड़ा।
खपाना० स० क्रि० बिकवाना, पैठाना, भराना।
खपित० गु० जो बिकगया, स्त्री० बिकाव।
खपुर० ना० पु० स्वर्ग, आकाश।
खप्पर० ना० पु० खोपड़ी, मट्टी का पात्र जिसमें योगी जलादि पीते हैं, अंगेठी।
खब्बा० ना० पु० बायां हाथ।
खभारू० ना० पु० पेटमेंआगिपड़ना, घबराहट।
खम्बा० } ना० पु० स्तम्भ, थूनी।
खम्भ० }
खम्भा० ना० पु० स्तम्भ, थूनी।
खर० ना० पु० खरासुर, गदहा, घास, कुत्ता, अच्छा, तीक्ष्ण।
खरक० ना० पु० खड़क, गोशाला।
खरखरा० ना० पु० खरहरा।
खरपत्र० ना० पु० मरुवा, सुगन्धित पौधा।
खरवर० } ना० स्त्री० घोड़ेके दौड़नेका शब्द, खलबली, शोरगुल, हुल्लड़, क्षोभ।
खरभर० }
खरमञ्जरी० ना० स्त्री० ऊंग।
खरयष्टिका० ना० स्त्री० खिरहटी।
खरल० ना० पु० औषध घिसने का पात्र।
खरहरा० ना० पु० घोड़ाआदि मलनेकी वस्तु विशेष।
खरहार० ना० स० क्रि० झारना, बुहारना।

खरा० गु० चोखा, श्रेष्ठ, अच्छा।
खराई० ना० स्त्री० सचाई, उत्तमता, सूल।
खरारि० ना० पु० श्रीरामचन्द्रजी।
खरिक० ना० स्त्री० सड़क, गोशाला।
खरी० ना० स्त्री० सरसोंकापीना, गदही, अच्छी, खड़ी।
खरे० गु० खड़े, ठाढ़े, अच्छे।
खरोंट० ना० स्त्री० बकोट, खसोट।
खरोचना० } स० क्रि० नोचना, खसोटना।
खरोटना० }
खर्ज० ना० पु० रागोच्चारणका विशेषस्थान।
खर्जर० ना० स्त्री० चांदी, खजूरवृक्ष।
खर्जूरिका० ना० स्त्री० पिण्ड, खजूर।
खर्जूरी० ना० स्त्री० मूसली।
खर्पर० ना० पु० पीठ, शिर।
खर्ब्ब० ना० पु० तुच्छ, छोटा, वामन, भाषा में सौ अर्ब्बको कहते हैं १०००००००००००।
खर्रा० ना० पु० मसौदः, टट्टर, खरखरा, चिट्ठा, खतरा।
खर्राटा० ना० पु० सोते में घुर्राना।
खल० गु० दुष्ट, नीच, तुच्छ।
खलता० ना० स्त्री० दुष्टता।
खलबल० ना० स्त्री० हलबल।
खलबलाना० अ० क्रि० उबलना।
खलबली० ना० स्त्री० खलभर, हुल्लड़।
खला० ना० स्त्री० पतुरिया, दुष्टिनि।
खलान्० गु० खलका बहुवचन।
खलारि० ना० पु० श्रीनारायण।
खलारु० ना० पु० निचान, पस्ती।
खलियान० ना० पु० खलिहान, खत्ता।
खलियाना० स० क्रि० छीलना, उधेड़ना।
खलिहान० ना० पु० अनाज माड़ने वा खूंदने का स्थान विशेष, पैरू।
खली० ना० स्त्री० तिलादि की खूंद।
खलीता० ना० पु० जेब, फ़ारसी शब्द है।
खवा० ना० पु० कन्धा।
खस० ना० पु० जातिविशेष।
खसकना० अ० क्रि० गिरपड़ना, सरकना, हटना।
खसकाना० स० क्रि० सरकाना, हटाना।
खसखस० ना० स्त्री० सुगन्धित तृणविशेष।
खसना० अ० क्रि० धसना, गिरपड़ना, निकल पड़ना।
खसरा० ना० पु० बही, खर्रा, खुजली।
खसाना० स० क्रि० गिराना, बिगाड़ना।
खसीमाल० ना० पु० पत्थरविशेष, गिरिमाला।
खांचा० ना० पु० टोकड़ा, पिंजरा विशेष।
खांड़० ना० स्त्री० शर्करा, शक्कर।
खांड़ना० स० क्रि० छांटना, कूटना।
खांड़ा० ना० पु० खड्गविशेष।
खांसना० अ० क्रि० खौंखना, ठोंठों करना।
खांसी० ना० स्त्री० खैखी।
खाग० ना० पु० गैंड़ेका सींग।
खाज० ना० स्त्री० खुजली।
खाजा० ना० पु० मिठाई विशेष।
खाट० ना० स्त्री० चारपाई।
खात० ना० पु० गर्त्त, गड़हा, घूरा, गोबर।
खाता० ना० पु० रोजनामा, लैखबही, गल्ला रखने का खत्ता।
खाती० ना० पु० बढ़ई, खरादी।
खाद० ना० पु० गोबरादि, घूरा।
खाद्य० गु० खाने के योग्य जो वस्तु।
खाना० स० क्रि० भोजन करना, अ० क्रि समाना, उपार्जन वा भोगकरना, ना० पु० भोजन।
खानि० ना० स्त्री० आकर, अक्षीण, उत्पत्ति-स्थान।
खानिक० गु० खानों की जो वस्तु।
खारका० ना० पु० छुहारा।
खारा० गु० लोना।
खारी० गु० कडुवा नमक, लोनीला।
खाल० ना० स्त्री० चमड़ा, धौंकनी।

खिचड़ी० ना० स्त्री० दाल चावल मिलित।

खिँचना० अ० क्रि० तनना, खिचा रहना।

खिचाव० ना० पु० तनाव, बिगाड़।

खिजलाना० स० क्रि०
खिझाना० अ० क्रि० } सताना, चिढ़ाना, क्रोधित होना।

खिझ० ना० स्त्री० खिसियाहट।

खिझना०
खिझलाना० } अ० क्रि० खिजलाना।

खिड़की० ना० स्त्री० झरोखा।

खिलखिलाना० अ० क्रि० हँसना।

खिलजाना०
खिलना० } अ० क्रि० फूलना, हर्षित होना।

खिलाड़० गु० चंचल, खेलनेवाला, चालाक।

खिलाना० स० क्रि० भोजनकराना, भोगकरवाना, खेलकराना।

खिलौना० ना० पु० खेलनेकी वस्तु।

खिल्ली० ना० स्त्री० हँसी, मज़ाक़।

खिसलना० अ० क्रि० फिसलना, हटना।

खिसलाहट० ना० स्त्री० फिसलाहट।

खिसियाना० अ० क्रि० खीसनिकालना, शरमाना, लजाना, गु० चिड़चिड़ा।

खिसियाहट० ना० स्त्री० खिसियानपन।

खीच० ना० पु० अप्रसन्नता, चितहट।

खीज० ना० स्त्री० क्रोध, खिसियाहट।

खीजना० अ० क्रि० क्रोधितहोना, दुःखपाना।

खीरा० ना० पु० फलविशेष।

खीर० ना० स्त्री० चावल जो दूध और खाँड़ में पकाये जाते हैं।

खीरी० ना० पु० पिस्ता मेवा, नगरविशेष।

खील०
खीला० } ना० पु० धानों के लावा।

खीस० ना० पु० टोटा, खराब, दांतका दिखलाहट, पीयूष।

खीसना० अ० क्रि० दांतकाढ़ना।

खीसा० ना० पु० खलीता, जेब, थैली।

खुजलना०
खुजलाना० } अ० क्रि० खुजली करना।

खुजलाहट० ना० स्त्री० खुजलापन, चुल।

खुजली० ना० स्त्री० खाज।

खुजाना० स० क्रि० खुजलाना।

खुटकना० स० क्रि० चबाना, कुतरना, सन्देह करना।

खुटका० ना० पु० सन्देह, शंका, खटक।

खुण्डला० ना० पु० वृक्षकाछिद्र, खोखि।

खुदवाना० स० क्रि० गड़ाना, माटीनिकलाना, चिह्नित कराना, अंकितकराना।

खुनस० ना० स्त्री० रिस, डाह।

खुनसाना० अ० क्रि० रिसाना, डाहखाना।

खुनसी० गु० क्रोधी।

खुन्दलना० स० क्रि० पांव से दबाना।

खुभी० ना० स्त्री० कानका भूषण, बीरैं।

खुर० ना० पु० पशुओं के पदका नख।

खुरचन० ना० स्त्री० छीलन।

खुरचना० स० क्रि० छीलना।

खुरण्ड० ना० पु० खूंटी, देवली।

खुर्पा० ना० पु०
खुर्पी० ना० स्त्री० } घास छीलने का अस्त्र।

खुलना० अ० क्रि० प्रकटहोना, बिथरना।

खूंच० ना० पु० नाड़ीविशेष।

खूंट० ना० पु० कोना, कानका मैल।

खूंटना० ना० स्त्री० औषध विशेष।

खूंटा० ना० पु० काठ का टेकना, मेख।

खूंटी० ना० स्त्री० छोटाखूंटा।

खूंदना० स० क्रि० पांवसे खोदना, टापमारना।

खूंटी० ना० स्त्री० देवली, खुरण्ड।

खूंद० ना० पु० खली, तरछट गु० घोड़ेका नाचना।

खेकसा० चिह्नविशेष।

खेचर०
खेचारी० } ना० पु० पक्षी, ग्रह, तारागण, देवता, पियाचादि।

खेटक० ना० पु० अहेर, शिकार और अस्त्र-विशेष।

खेटिक० ना० पु० बधिक, शिकारी।

खेत० ना० पु० क्षेत्र, समरभूमि, पुण्यक्षेत्र, वह भूमि जहां अन्नादि उपजता है।

खेतल० ना० पु० आकाशमण्डल।

खेती० ना० स्त्री० किसनई, गु० जोताऊ।

खेद० ना० पु० शोक, दुःख, पश्चात्ताप।

खेदना० स० क्रि० खदेड़ना, सताना और पीड़ा करना।

खेदित० गु० दुःखित, पीड़ित, सतायागया।

खेरा० ना० पु० ऊजड़पुर, डीह।

खेरी० ना० स्त्री० लोहाविशेष, हल।

खेल० ना० पु० क्रीड़ा, जीबहलाव।

खेलना० स० क्रि० क्रीड़ाकरना, जीबहलाना।

खेवक० } ना० पु० नाविक, डांडी और मल्लाह।
खेवट० }

खेवना० स० क्रि० डाड़मारना, नावचलाना।

खेवा० ना० पु० उतराई, भाड़ा, पारदेना, उतारा।

खेह० ना० स्त्री० राख, धूलि, खाक।

खैंच० ना० स्त्री० उखाड़।

खैंचना० स० क्रि० ऐंचना, कसना, तानना।

खैंचाखैंच० } ना० स्त्री० ऐंचा ऐंची, खैंचा
खैंचाखैंची० } खैंची।

खैर० ना० पु० कत्था।

खैला० ना० पु० दोहान, नयाबैल वा बछड़ा।

खोआ० ना० पु० लद, गुरखी, दूध जो उबालके गाढ़ा कियाजाता है।

खोंखना० अ० क्रि० खांसना।

खोंखी० ना० स्त्री० खांसी।

खोंच० ना० स्त्री० चीर।

खोंचना० स० क्रि० घुसेड़ना।

खोंचा० ना० पु० भराव, झोंक।

खोंड़कल० ना० पु० गड़हा।

खोंता० ना० पु० घोसला।

खोंसना० स० क्रि० ठासना० घुसेड़ना।

खोखला० गु० पोंगला, खाली।

खोखली० ना० स्त्री० ऊपरकामढ़ाव, जो ठोस नहीं है।

खोज० ना० पु० ढूंढ, यत्न, चिह्न, पहिचान।

खोजना० स० क्रि० ढूंढना।

खोट० ना० स्त्री० दोष, अवगुण।

खोटा० गु० भगली, दोषी, झूठा, अधर्मी।

खोटाई० ना० स्त्री० भगलपन दोष।

खोदना० स० क्रि० गोड़ना, करकोलना।

खोना० स० क्रि० गँवाना, उड़ाना।

खोपड़ा० ना० पु० ललाटके ऊपर का अंग, नारियल की गूदी।

खोपड़ी० ना० स्त्री० मस्तकके ऊपर का भाग, छिलका।

खोपर० ना० पु० शिर।

खोपरा० ना० पु० खोपड़ा।

खोपरी० ना० स्त्री० खोपड़ी।

खोपा० ना० पु० नारियल का गोला, जूड़ा।

खोरि० ना० स्त्री० दोष, ग्लानि।

खोरी० ना० स्त्री० गली, मार्ग, दोष, ग्लानि।

खोल० ना० स्त्री० काठी, ढकना, दोहर, गद्दी।

खोलना० स० क्रि० प्रकट करना, बिछाना, उधेड़ना, लंगर उठाना।

खोह० ना० पु० गुफा, गड़हा, कन्दरा।

खौड़० } ना० स्त्री० तिलक।
खौरि० }

खौलना० अ० क्रि० उबलना।

ख्यात० गु० प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, मशहूर।

ख्याति० ना० स्त्री० यश, धाक, शुहरत।

ख्यात्यापन्न० गु० कीर्तिमान्, नामी।

ख्याल० ना० पु० क्रीड़ा, खेल।

(ग)

गँवाना० स० क्रि० खोना, उड़ाना, बहाना।

गँवार० ना० पु० गांवकावासी, कुपढ़ा।

गगन० ना० पु० आकाश, आसमान।

गगनचर॰ ना॰ पु॰ पक्षी, देवता, ग्रहादि।

गगरी॰ ना॰ स्त्री॰ कलशी, घड़ा।

गंगा॰ ना॰ स्त्री॰ भागीरथी नदी प्रसिद्ध।

गंगायमुनी॰ ना॰ स्त्री॰ कर्णभूषणविशेष।

गंगाद्वार॰ ना॰ पु॰ गंगोत्तरी, हरद्वार।

गंगाधर॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी।

गंगासागर॰ ना॰ पु॰ गंगा और समुद्र का संगम जहां कपिलदेव का स्थान है।

गंगेरुकी॰ ना॰ स्त्री॰ गंगेरुआ।

गंगोत्तरी॰ ना॰ स्त्री॰ गंगाजीके प्रकाशका स्थान जो बद्रीनाथ के आसन्न है।

गंगोदक॰ ना॰ पु॰ गंगाजल।

गच्च॰ ना॰ स्त्री॰ चूना, लेट।

गचपच्च॰ ना॰ स्त्री॰ उलट पलट।

गच्छ॰ ना॰ पु॰ मुकाम, चाल।

गज॰ ना॰ पु॰ हाथी, दो हाथ की माप।

गजकेसर॰ ना॰ स्त्री॰ नागकेसर।

गजकृष्णा॰ ना॰ स्त्री॰ गजपीपरि।

गजगामिनी॰ गु॰ जिसकी हाथीकीसी चालहो।

गजगाह॰ ना॰ पु॰ झंवेसहित हाथीकाभूषण।

गजगौनी॰ गु॰ गजगमनी।

गजचिर्भटी॰ ना॰ स्त्री॰ इन्द्रवारुणी।

गज्जहीं॰ अ॰ क्रि॰ गरजता है।

गजदन्त॰ ना॰ पु॰ हाथी का दांत।

गजपति॰ ना॰ पु॰ हाथियों का स्वामी अर्थात् राजा वा जिसके हाथी हों।

गजपाटल॰ ना॰ पु॰ कज्जल।

गजपाल॰ ना॰ पु॰ महावत, फ़ीलवान।

गजपिप्पली॰ ना॰ स्त्री॰ गजपीपरि।

गजभिक्षक॰ ना॰ पु॰ सोंठि।

गजमुख॰ ना॰ पु॰ गणेशजी, हाथी का मुँह।

गजमोती॰ ना॰ पु॰ मोती जो हाथी के मस्तक में होता है।

गजरा॰ ना॰ पु॰ गाजरकापत्ता, फूलोंकीमाला।

गजवदन॰ ना॰ पु॰ गणेशजी।

गजबुसा॰ ना॰ पु॰ केलावृक्ष।

गजानन॰ ना॰ पु॰ गणेशजी, हाथी का मुख।

गजाशन॰ ना॰ पु॰ पीपल, पीपरि।

गञ्ज॰ ना॰ पु॰ रोगविशेष जो शिरमें होता है।

गञ्जा॰ गु॰ जिसके शिरमें गंज रोग होवे, ना॰ पु॰ गांजा, भांग, रोगविशेष।

गञ्जित॰ गु॰ नशायागया।

गटपट॰ ना॰ स्त्री॰ उलट पुलट, मिलित।

गटी॰ ना॰ स्त्री॰ समूह, रामचन्द्रिकायां यथा सब जात फटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहँ एक घटी, निघटी रुचि मीचि घटीहू घटी जगजीव यतीन की छूटी चटी, अघ ओघ कि बेरी कटी विकटी निकटी प्रकटी गुण ज्ञान गटी, चहुँ ओरन नाचत मुक्ति नटी गुण धूर जटी जटि पंचवटी॥

गट्टा॰ ना॰ पु॰ कलाई, मिठाई प्रसिद्ध।

गट्ठा॰ ना॰ पु॰ बड़ीगठरी।

गठना॰ अ॰ क्रि॰ जुड़ना, मिलना।

गठरी॰ ना॰ स्त्री॰ मोट, मोटरी, झुण्ड।

गठाना॰ स॰ क्रि॰ सिलवाना, पैबन्दलगवाना।

गठिया॰ ना॰ पु॰ गोन, गु॰ गांठोंवाला।

गठीला॰
गठिहा॰ } गु॰ गांठोंवाला, गठाहुआ।

गड़क॰
गड़का॰ } ना॰ स्त्री॰ मछली वा मछली विशेष।

गड़गड़ाना॰ स॰ क्रि॰ गरजना।

गड़रिया॰ ना॰ पु॰ जातिविशेष जो भेड़ें पालते हैं।

गड़त॰ ना॰ स्त्री॰ धसन, दलदल।

गड़ना॰ अ॰ क्रि॰ धसना, पैठना, छिदना।

गड़बड़॰ ना॰ पु॰ गटपट, उलट पलट, हल चल।

गड़बड़ा॰ ना॰ पु॰ खलबली, मरोड़ा, गु॰ लड़बड़ा, घबराया भया।

गड़बड़ाना॰ अ॰ क्रि॰ घबराना, खलबलाना।

गड़बड़ाहट॰ ना॰ स्त्री॰ हड़बड़ाहट, भय।

गड्हा० ना० पु० गर्त्त, गड्ढा, ताल।
गड़िया० ना० स्त्री० खलार, खालीखेत, गांडू।
गड़ुआ० ना० पु० टोंटीवाला लोटा।
गड़ोना० स० क्रि० छेदना, खोंसना।
गढ़० ना० पु० कोट, क़िलअ़।
गढ़ना० स० क्रि० ठोंकना, बनाना।
गढ़नि० ना० स्त्री० बनावट।
गढ़वार० गु० मोटा, गाढ़ा, गढ़वाल।
गढ़वाल० गु० क़िलेदार, गढ़का रक्षक।
गढ़ा० ना० पु० गड्हा, गार।
गढ़ाई० ना० स्त्री० गहने आदि की बनवाई वा बनवाने का काम।
गढ़ी० ना० स्त्री० छोटा गढ़।
गढ़ेला० ना० पु० पृथ्वीमें खोदाभया गड्हा।
गढ़ैया० ना० स्त्री० छोटा पोखरा, गु० गढ़नेहारा।
गण० ना० पु० समूह, महादेव के गणोंका झुण्ड।
गणक० ना० पु० दैवज्ञ, ज्योतिषी, हिसाबी।
गणना० ना० स्त्री० पक्षपात, गिनती, शुमार।
गणनाथ० ना० पु० गणनायक।

गणनायक०
गणपति०
गणराउ०
गणराज०
गणाधिप० } ना० पु० गणेशजी, यूथनाथ।

गणिका० ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया, रण्डी।
गणित० ना० पु० अंकविद्या, हिसाब।
गणितकार० ना० पु० गणक।
गणेश० ना० पु० पार्वती के पुत्र आदि देवता।
गण्ड० ना० पु० नेत्रोंके नीचे का भाग, गाल।
गण्डक० ना० पु० गैंड़ा पशु, नदविशेष।
गण्डदूर्वा० ना० स्त्री० गण्ड, दूब।
गण्डमाला० ना० पु० कान के नीचे फोड़ों का रोगविशेष।
गण्डा० ना० पु० घेरा, चारिकौड़ी वा पैसा वा रुपया, बालकादि के गले में बांधने के लिये अभिमन्त्रित सूत।
गण्डासा० ना० पु० अस्त्रविशेष।
गण्डासी० ना० स्त्री० छोटा गण्डासा।
गण्डिका० ना० स्त्री० नदीविशेष।
गण्डी० ना० स्त्री० घेरा जिसमें श्रीरामचन्द्रजी सीताजी को बैठाल गये थे।
गण्डीर० ना० पु० सेंहुड़ वृक्ष।
गण्डीर० ना० पु० ऊख, गन्ना, यथा तृणराजो मधुतृणोगण्डीरो मधुपत्रक इति निघंटुः।
गण्डुल० गु० प्रफुल्ल।
गण्डूष० ना० स्त्री० पानी का कुल्ला।
गण्य० गु० जो गिनाजाय।
गत० गु० प्राप्त, अतीत, व्यतीत, निकृष्ट।
गतागत० ना० पु० उलटफेर।
गतार्थ० गु० एकके जानने से अन्यको जानना।
गति० ना० स्त्री० चाल, मुक्ति दशा, ज्ञान, गमन, दिशा, क्रिया, कर्म।
गते० अव्य० हौले, धीमे।
गत्ते० अव्य० गाते।
गत्यर्थ० गु० जिसका अर्थ गीत है या जिससे गतिका अर्थ पाया जावे।
गथ० ना० पु० माल, दाम।
गद० ना० पु० रोग, आरज़ः।
गदका० ना० पु० पटा, डंडाविशेष।
गदकारी० ना० स्त्री० गुदगुदी, रोगकारकवस्तु।
गदला० ना० पु० ढबरा, मैला।
गदलाई० ना० स्त्री० मैलापन।
गदशत्रु० ना० पु० वैद्य, हकीम।
गदा० ना० स्त्री० सोंटा, लाठी, गुर्ज।
गदाधर० गु० लाठीवाला, गदा बांधनेहारा, ना० पु० विशेष श्रीकृष्णचन्द्रजीका नाम।
गदायुद्ध० ना० पु० लाठीकी लड़ाई, गदा की लड़ाई।
गदारि० ना० पु० वैद्य, तबीब।

गदेला० ना० पु० मोटा बिछौना वा जिसमें बहुत रुई भरकर पहिनते हैं।

गद्गद्० गु० हर्षवान्, शोक वा आनन्दमें मग्न।

गद्दर० गु० अधपका।

गद्दी० ना० स्त्री० तकिया वा बिछौना वा आसन वा राजा का सिंहासन, जातिविशेष।

गद्य० ना० पु० छन्दविना काव्य, वार्तिक।

गध्धा० ना० पु० गदहा।

गन० ना० पु० गण।

गनना० स० क्रि० गिनना, शुमारकरना।

गन्ध० ना० पु० कदमवृक्ष, स्त्री० बास, बूय।

गन्धक० ना० पु० औषधविशेष।

गन्धगर्भ० ना० पु० बेलवृक्ष।

गन्धमादन० ना० पु० पर्व्वतविशेष।

गन्धमूलक० ना० पु० कचूर।

गन्धमूलिनी० ना० स्त्री० कचूरभेद।

गन्धमूली० ना० स्त्री० रासना।

गन्धराज० ना० पु० चन्दन, सुगन्धित विशिष्ट पुष्प।

गन्धर्व्व० ना० पु० देवता, स्वर्ग के गायक।

गन्धर्व्वनगर० ना० पु० सामान्य गन्धर्वलोक विशेष मुख्य आकाश में जो चित्र विचित्र की मूर्तें दृष्टि आती हैं जब देरतक देखने से आंख तिरमिरा जाती है।

गन्धर्व्वहस्तक० ना० पु० बेलवृक्ष।

गन्धवह० ना० पु० वायु, पवन, हवा।

गन्धसार० ना० पु० चन्दन।

गन्धा० ना० पु० नागदौन, कदमवृक्ष।

गन्धान० ना० पु० सुवर्ण, सोना।

गन्धाश्मा० ना० पु० गन्धक।

गन्धार० ना० पु० रागका स्वरविशेष।

गन्धारी० ना० स्त्री० दुर्योधन की माता, श्वास जो वामाक्ष में प्रकाशित होती है, ज्ञानतरंगे यथा, गन्धारी वामाक्ष निवासी, हस्त, जिह्वा, दक्षिण दिग्वासी।

गन्धि० ना० स्त्री० बास, बूय, गन्धक।

गन्धिका० ना० स्त्री० आहूवेर।

गन्धिकारिणी० ना० स्त्री० लजारू।

गन्धिलुब्ध० गु० जो सुगन्धि के लालच में हो।

गन्धी० ना० पु० अत्तार, सुगन्धित तेल बेचनेहारा।

गन्ना० ना० पु० ऊख, गांडा, खंड।

गप०
गपशप० } ना० स्त्री० बक, बकबक।

गप्पी० गु० बकवादी।

गभास्ति० ना० स्त्री० किरण, ज्योति।

गभीर० गु० गम्भीर।

गभुआरे० गु० छल्लेदार बाल, पैदायशीबाल।

गमन० ना० पु० चलन।

गमनागमन० ना० पु० जाना आना।

गमनी० ना० स्त्री० चलनेवाली।

गमनीय० गु० चलने के योग्य, चलनेवाला।

गम्भीर० गु० गहिरा, अवगाह।

गम्भीरता० ना० स्त्री० गहराई।

गम्य० गु० जानेके योग्य, मिलनहार।

गय०
गयन्द० } ना० पु० हाथी।

गया० ना० स्त्री० नगर वा तीर्थविशेष जहां हिन्दूलोग पुरुषों को पिण्ड देते हैं।

गयाली० ना० पु० गयावाल, गया के ब्राह्मण।

ग्यारस० ना० स्त्री० एकादशी।

ग्यारह० गु० दश और एक ११।

गर० ना० पु० रोग, विष, गला।

गरगराना० अ० क्रि० कुल्लीकरना, गरगना।

गरजना० अ० क्रि० घड़घड़ाना, शब्दकरना।

गरल० ना० पु० विष, हलाहल।

गरह० ना० पु० गठियावायु।

गरागरी० ना० स्त्री० देवदाली।

गरारी० ना० स्त्री० रस्सी का सूतबटनेकायन्त्र, कूपसे जल निकालने की गोल काठकी वस्तु।

गरिमा० ना० स्त्री० गुरुता, गरुाई, अहंकार, आठ सिद्धि मेंसे एक का नाम।

गरी० ना० स्त्री० नारियलका गूदा, गुठली।
गरु० ना० पु० गला।
गरुड़० ना० पु० पक्षी जो श्रीविष्णुका वाहनहै।
गरुड़ाग्रज० ना० पु० सूर्य का रथवान।
गरुता० ना० स्त्री० गुरुता, बड़प्पन।
गरुत्मान्० ना० पु० गरुड़, सफ़ेद हंस।
गरुव० गु० भारी, बोझिल।
गर्ग० ना० पु० मुनिविशेष जो यदुवंशियों के पुरोहित थे।
गर्गज० ना० पु० धौंता, बद्द।
गर्ज० } ना० पु० उत्कट शब्द, गड़गड़ाहट।
गर्जन० }
गर्त० ना० पु० गड्ढा।
गर्दभ० ना० पु० गदहा।
गर्भ० ना० पु० पेट, आधान, हमल।
गर्भकण्टक० ना० पु० कटहल।
गर्भकर० ना० पु० पतिजिया यथा पुत्रजीवः गर्भकरः इति निघण्टुः गु० गर्भकारक।
गर्भदास० ना० पु० मोल की दासी का बेटा।
गर्भपात० गु० पेटका गिरना, हमलगिरना।
गर्भपाता० ना० पु० रीठा।
गर्भवती० ना० स्त्री० पेटसे, गर्भिणी, गाभिन।
गर्भस्राव० ना० पु० गर्भपात।
गर्भित० गु० गर्भ अर्थात् पेटमें रहनेवाला।
गर्व० ना० पु० अहंकार, दंभ, गरूर।
गर्ववती० गु० स्त्री० अहंकारिन।
गर्वित० गु० अहंकारी, मगरूरी।
गर्हित० गु० निन्दित।
गल० ना० पु० गला, फांसी।
गलकना० अ० क्रि० गलना।
गलका० ना० स्त्री० फोड़ाविशेष, खटाईविशेष।
गलगण्ड० ना० पु० गण्डमाला।
गलगल० ना० पु० चकोतरा, पक्षीविशेष।
गलना० अ० क्रि० पिघलना, घुलना।
गलफटाकी० ना० स्त्री० बड़ाई, घमण्ड।
गलफड़० } ना० पु० गाल वा गालोंकामांस।
गलफड़ा० }
गलबाहू० ना० स्त्री० गोदी।
गलसुई० ना० स्त्री० तकिया, सिराहना।
गलस्तनी० ना० स्त्री० बकरी।
गला० ना० पु० कंठ, शब्द।
गलाघोटना० स० क्रि० नट्टी दबाना, कंठ तोड़ना।
गलाना० स० क्रि० पिघलाना।
गलाव० ना० पु० पिघलाव।
गलित० गु० पतित, द्रवीभूत, मग्न।
गलियाना० स० क्रि० बुराकहना, गालीदेना, बरबस भोजन कराना वा औषध घूंसना।
गली० ना० स्त्री० छोटामार्ग।
गंव० ना० स्त्री० दांव, घात, मौकआ, लाभ।
गवन० ना० पु० गमन।
गवरि० } ना० स्त्री० पार्वती।
गवरी० }
गवज़द० ना० पु० भैंसा।
गवादिनी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।
गवाश० ना० पु० कसाई, म्लेच्छ।
गवाक्ष० ना० पु० झरोखा, मुख्य वानर।
गवेधुका० ना० स्त्री० गंगेरुआ।
गवैया० ना० पु० गायक, गानेवाला।
गव्य० गु० जो गाय से सम्बन्ध रखता हो यथा दुग्ध आदि।
गसना० अ० क्रि० बन्धना, घिरना, रुकना।
गहगह० गु० घना, ज़ोर से।
गहन० ना० पु० झारी, ग्रहण, पकड़ना, दुःख निष्फल, वन।
गहना० स० क्रि० पकड़ना, ग्रहणकरना, ना० पु० जेवर, गिरवां, भूषण।
गहनी० ना० स्त्री० सनपरास कालीपत्ती।
गहरा० ना० पु० गम्भीर।
गहरु० ना० पु० ढील, देर।

गह्वर० } गु० घबरा, रोवासा, घना, कठिन।
गह्वर० }

गा० अव्य० गया।

गांजा० } ना० पु० वृक्षविशेष की पत्ती वा रस आदि।
गांझा० }

गांठना० स० क्रि० बांधना, वश में लाना, सीवना।

गांठि० ना० स्त्री० ग्रन्थि, गिरह।

गांड़० ना० स्त्री० गुदा, कूल, पुट्ठी मिट्टी की जो कूप में लगाते हैं।

गांडर० ना० स्त्री० तृणविशेष।

गांडा० ना० पु० इक्षु, गन्ना, ऊख।

गांडू० ना० पु० भवेसिया, लतिया, कुल्ली।

गांव० ना० पु० ग्राम, पुर।

गांवना० स० क्रि० गाना।

गांसना० स० क्रि० बिरमाना, घेरना, बरमाना, पिरोना।

गांसी० ना० पु० तीरका फल, लोहा जो तीर में लगाते हैं।

गागर० ना० स्त्री० गगरी, कलशी, घड़ा।

गांगेय० ना० पु० भीष्म, सुवर्ण।

गाछ० ना० पु० वृक्ष।

गाज० ना० स्त्री० झाग, फेना, बिजुली, वज्र।

गाजना० अ० क्रि० हर्षितहोना, गरजना।

गाजर० ना० स्त्री० मूल विशेष।

गाजाबाजा० ना० पु० नानाप्रकार से बाजा का शब्द।

गाड़० ना० पु० गढ़हा, गड्ढा, गर्त्त।

गाड़ना० स० क्रि० तोपना, समाधि देना, मिट्टी देना, लगाना।

गाड़ा० ना० पु० घात, गड़हा, गाड़ी।

गाड़ी० ना० स्त्री० छकड़ा, लढ़ी, रथ।

गाढ़० ना० स्त्री० जंजाल, विपत्ति।

गाढ़ा० गु० मोटा, चतुर, कठिन, ना० पु० कपड़ाविशेष।

गाण्डीव० ना० पु० नाम उसधनुषका है जो अग्निदेव ने अर्जुन को दिया है।

गाण्डीवधर० ना० पु० अर्जुन, पाण्डुपुत्र।

गात० ना० पु० शरीर, तनु, देह।

गाता० ना० पु० कागज़ जिससे पुस्तक की जिल्द बनाते हैं।

गाती० ना० स्त्री० एकप्रकार की चादरका बांधना, पट्टू ऊर्णवस्त्र।

गात्र० ना० पु० शरीर, देह।

गाथक० ना० पु० गायक।

गाथना० स० क्रि० गूंथना, गाना।

गाथा० ना० स्त्री० कथा, समाचार।

गाद० ना० स्त्री० तरछट, गोंद।

गादी० ना० स्त्री० गद्दी।

गाधि० ना० पु० विश्वामित्र के पिता।

गाधिनन्द० ना० पु० विश्वामित्र मुनि।

गाधिसुत० } ना० पु० विश्वामित्र मुनि।
गाधेय० }

गान० ना० पु० गीत, राग, भजन।

गाना० स० क्रि० अलापना, तानभरना।

गान्धार० ना० पु० राजाविशेष, रागका स्वर विशेष।

गाभ० ना० पु० गर्भ।

गाभा० ना० पु० केलेके वृक्षका नयापत्र, नयापत्ता।

गाभिन० ना० स्त्री० गर्भिणी।

गाम० ना० पु० गांव।

गामी० गु० चलनेवाला, रमनेवाला।

गाम्भीर्य्य० ना० पु० गम्भीरता।

गाय० ना० स्त्री० गौ।

गायक० ना० पु० गवैया, गानेवाला।

गायत्री० ना० स्त्री० मन्त्रविशेष, छन्द, कत्था, महासिद्धि।

गायन० ना० पु० गवैया, गानेवाला।

गार० ना० स्त्री० गाली।

गारना० स० क्रि० निचोड़ना, धोना।

गार्हपत्य॰ ना॰ पु॰ अग्निभेद।

गारा॰ ना॰ पु॰ भीति बनाने के लिये बनाई हुई मिट्टी।

गारी॰ ना॰ स्त्री॰ गाली।

गारुड़ि॰ सांप, सांपका विष झारनेवाला, सूर काव्ये यथा, हाव भाव गारुड़ी पुकारत आवत लहरि न जात कहीरी।

गारुत्मत॰ ना॰ पु॰ पन्ना।

गाल॰ ना॰ पु॰ कपोल, रुख, बात।

गालव॰ ना॰ पु॰ मुनिविशेष।

गाला॰ ना॰ पु॰ रुई की फली, धुनी हुई रुई का गोला।

गाली॰ ना॰ स्त्री॰ अपमानका बोधक वाक्य उखली।

गाह॰ ना॰ पु॰ ग्राह।

गाहक॰ ना॰ पु॰ खरीदार।

गाहना॰ स॰ क्रि॰ ढूंढना, दाबना, थाह लगाना, मांड़ना।

गाहा॰ गु॰ गाथा, अवगाह, कथा ना॰ पु॰ छन्दविशेष।

गाहिगाहि॰ गु॰ ढूंढ़े ढूंढ़ि के।

गाही॰ ना॰ स्त्री॰ पांच, माड़ी, थाही हुई।

गिजाई॰ ना॰ स्त्री॰ कीटविशेष।

गिचिपिच्चिया॰ ना॰ पु॰ कचपिचिया।

गिड़गिड़ाना॰ स॰ क्रि॰ घिघिआना, खुशामद करना।

गिद्ध॰ ना॰ पु॰ पक्षीविशेष, किरगिस।

गिनती॰
गिन्ती॰ } ना॰ स्त्री॰ गणित, गिन्ती, शुमार।

गिन्दुक॰ ना॰ पु॰ गेंद।

गिनना॰ स॰ क्रि॰ गणन, गिन्तीकरना।

गिरगिट॰ ना॰ पु॰ सरट, कृकलास।

गिरना॰ अ॰ क्रि॰ पड़ना।

गिरपड़ना॰ अ॰ क्रि॰ कूदपड़ना, झुकपड़ना।

गिरा॰ ना॰ स्त्री॰ सरस्वती, वाग्देवता, वाणी।

गिराना॰ स॰ क्रि॰ औंधाना, पटकना, छलकाना।

गिरि॰ ना॰ पु॰ अद्रि, पर्वत, पहाड़।

गिरिकद्रक॰ ना॰ पु॰ महा, नींब।

गिरिज॰ ना॰ पु॰ शिलाजित।

गिरिजा॰ ना॰ स्त्री॰ पार्वती।

गिरिजानन्द॰ ना॰ पु॰ गणेश जी।

गिरिधर॰
गिरिधारी॰ } गु॰ पर्वत उठानेवाला ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्रजी श्रीहनुमान्।

गिरिनाथ॰ ना॰ पु॰ श्रीशिवजी, सुमेरु, हिमाचल, हिमालय।

गिरिर॰ ना॰ पु॰ लड़का।

गिरिराज॰ ना॰ पु॰ श्रीशिवजी, हिमालय, गोवर्द्धन, सुमेरु, श्रीकृष्णजी।

गिरिवर॰ ना॰ पु॰ पर्वत, पहाड़।

गिरिसुप॰ ना॰ स्त्री॰ गेरू।

गिरिसाह्वय॰ ना॰ पु॰ शिलाजीत।

गिरीश॰ ना॰ पु॰ श्रीसदाशिव, सुमेरु, हिमालय।

गिलट॰ ना॰ स्त्री॰ नसों की गांठ।

गिलहरी॰ ना॰ स्त्री॰ जीवविशेष जो वृक्षोंपर रहता है।

गिलोय॰ ना॰ स्त्री॰ गुरच।

गीजना॰ स॰ क्रि॰ मलना।

गीत॰ ना॰ पु॰ राग, गान।

गीता॰ ना॰ पु॰ कथा, अध्यात्मज्ञान, वा जिस पुस्तक में अध्यात्मज्ञान होवे, यथा भगवद्गीता, रामगीता।

गीदड़॰ ना॰ पु॰ शृगाल, सियार।

गीर्वाण॰ ना॰ पु॰ अमर, देवता।

गीला॰ गु॰ ओदा।

गीष्पति॰ ना॰ पु॰ बृहस्पति।

गुग्गुल॰ ना॰ पु॰ गूगुल।

गुंग॰
गुंगा॰ } गु॰ गूंगा, बावला।

गुच्छा॰ ना॰ पु॰ घौर, घौचा, बाल, पोट।

गुजरात॰ ना॰ पु॰ देशविशेष।

गुह्य० गु० छिपा, पोशीदः।

गुह्यक० ना० पु० यक्ष, कुबेर के दूत।

गुह्यकपति० ना० पु० कुबेर।

गुह्यस्थल० ना० पु० एकान्तस्थान वा छिपा अंग, यथा, भग।

गुञ्ज० ना० स्त्री० गुंजा, घुंघुची।

गुंजरना० अ० क्रि० दहाड़ना, गूंजना।

गुंजान० गु० गाढ़ा, मोटा, घना, फारसी का शब्द है।

गुंजार० ना० पु० शब्द, दहाड़, गूंज।

गुंजारना० अ० क्रि० हूंकना, गूंजना, शब्द करना।

गुटकना० अ० क्रि० कू कू करना, कपोत का बोलना, निगलना।

गुटका० ना० पु० पुस्तकविशेष, वस्तुविशेष जिसको योगी मुख में रखकर लोप होजाते हैं मिठाईविशेष, चांदी की वस्तुविशेष जो मृतक की क्रिया में लगता है, छोटी पोथी।

गुटकाना० स० क्रि० कपोत को बुलाना।

गुटकी० ना० स्त्री० हाथ पांव समेटना।

गुटिका० ना० स्त्री० गोली।

गुठली० ना० स्त्री० फल का बीज।

गुड़० ना० पु० ईखका जमाहुआ रस, मिष्टान्न।

गुड़गुड़ाना० अ० क्रि० गड़गड़ाना।

गुड़गुड़ी० ना० स्त्री० छोटा हुक्का।

गुड़पुत्रक० ना० पु० ऊख, गन्ना।

गुड़पुष्प०
गुड़फूल० } ना० पु० महुआ।

गुड़ा० ना० पु० अंगूर, दाख।

गुड़ाकेश० ना० पु० अर्जुन, सदाशिवजी।

गुड़ाना० स० क्रि० खुदाना, खुदवाना।

गुड़िया० ना० स्त्री० खिलोना, कपड़ेकी पुतली।

गुडूची० ना० स्त्री० गुरच।

गुड्डी० ना० स्त्री० कनकौआ।

गुढ़ी० ना० पु० छिपनेका स्थान।

गुण० ना० स्त्री० विशेषण, स्वभाव, प्रवीणता, विद्या, डौल, कला, रस्सी, धनुष की पंचचरित्र यहसाव।

गुणक० ना० पु० जिस अंक से गुणन करें।

गुणद० गु० गुणदाता, लाभकारी।

गुणन० ना० पु० गुणाकरना, जरब।

गुणना० स० क्रि० विचारना, गुणन करना।

गुणवती० गु० माला० गुणवान्।

गुणवाचक० गु० गुण बताने वाला।

गुणवान्० गु० प्रवीण, पुण्यवान्।

गुणज्ञ० गु० गुणी, ज्ञाता, चतुर।

गुणी० गु० प्रवीण, पुण्यवान्, विद्वान्, विचारी ना० पु० सपेरा।

गुण्य० ना० पु० जिस अंक को गुणा करें।

गुथना० अ० क्रि० पिरोना।

गुथवां० गुथाहुआ।

गुद० ना० स्त्री० मलस्थान, गांड़, गुदा।

गुदगुदाना० स० क्रि० सहलाना, चुलचुलाना।

गुदगुदाई०
गुदगुदाहट०
गुदगुदी० } ना० स्त्री० सहलाहट, सुरसरी।

गुदड़ी० ना० स्त्री० तागाहुआ वस्त्र, गुजरी, चौक, बाजार।

गुदा० ना० स्त्री० मलस्थान, गांड़।

गुदाभंजन०
गुदमर्दन० } ना० पु० गांड़ मारना, इग-लाम।

गुन० ना० पु० गुण।

गुनग्राहक० ना० पु० गुनका चाहने वा जानेवाला, विद्याका प्रतिपालक।

गुनगुनाना० अ० क्रि० थोड़ा गरम होना और नाक से बोलना।

गुनवन्त०
गुनवान्० } गु० गुणवान्।

गुनह० ना० पु० दोष, पाप, कसूर, रामायणे यथा, गुनह लषण कर हम पर रोषू, कतहुँ सुधाई ते बड़ दोषू।

गुनानि० ना० स्त्री० मनमें कल्पना करना।
गुनी० गु० गुणी।
गुन्थनि० ना० स्त्री० गूंथनी, पोहावट।
गुप्त० गु० लुका, छिपा।
गुप्तार० ना० पु० छिपना, लुकना, लुकाव।
गुप्तारघाट० ना० पु० अयोध्याजीमें स्थान विशेष।
गुप्ती० ना० स्त्री० खड्गविशेष जो सोंटे में रखते हैं।
गुफा० ना० स्त्री० खोह, कन्दरा।
गुभाना० स० क्रि० चुभाना, गाड़ना।
गुमटी० ना० स्त्री० कपड़ाविशेष, कलशी।
गुराई० ना० स्त्री० बड़प्पन, गोरापन।
गुरु० ना० पु० आचार्य्य, शिक्षक, बृहस्पति, पुरोहित, द्विमात्रिक अक्षर, गु० भारी, बड़ागरुआ।
गुरुतर० गु० अत्यन्तभारी, अत्यन्तमान्य।
गुरुता० ना० स्त्री० बड़प्पन, आचार्य्यता।
गुरुपाक० ना० पु० जो वस्तु बहुत देर में पचे।
गुरुमुख० ना० पु० जिसने गुरु किया हो, शिष्य वा इष्टदेव का मन्त्र गुरु से लिया, चेला।
गुरुमुखहोना० अ० क्रि० चेला होना, गुरु से इष्टदेवता का मन्त्र पाना।
गुरुआइन० ना० स्त्री० गुरुकी पत्नी।
गुरुबार० ना० पु० बृहस्पतिवार जुमेरात।
गुर्जर० ना० पु० गुजराती वा गुजरातदेशविशेष।
गुर्वादित्य० ना० पु० जब सूर्य और बृहस्पति एक राशि के होजाते हैं वह समय।
गुर्विणी० ना० स्त्री० गर्भवती, हामिलः।
गुल० बुझाना, दीपक का ठंढा होजाना।
गुलगुला० ना० पु० पकवानविशेष।
गुलाई० ना० स्त्री० गोलता, गोलाई।
गुलाब० ना० पु० वृक्ष वा उसके फूलोंकारस, तत्त्व।
गुलाल० ना० पु० अबीर बुका जो प्रियतमके ऊपर डालते हैं।
गुलिक० ना० पु० मोती।
गुलिया० ना० स्त्री० शिरके पीछे का गड्ढा।
गुलेल० ना० स्त्री० धनुष जिसमें गुल्ला चलातेहैं।
गुल्याल० ना० पु० गुलेल।
गुल्फ० ना० स्त्री० फीली, एड़ीके ऊपरका भाग।
गुल्म० ना० पु० रोगविशेष, गुलाब, झाड़।
गुल्ला० ना० पु० गुलला, माटी का छोटागोला।
गुल्लाला० ना० पु० फूलविशेष यह शब्द फारसी का है।
गुवाक० ना० पु० सुपारी का वृक्ष।
गुवालियर० ना० पु० देश वा नगरविशेष।
गुष्टि० ना० स्त्री० सम्मति, सलाह, मित्रता।
गुह० ना० पु० स्वामिकार्तिक, निषाद, मल।
गुहना० स० क्रि० गूथना।
गुहा० ना० स्त्री० गुफा, कन्दरा।
गुहाना० स० क्रि० गुथवाना।
गुहारि० ना० पु० ताड़कासुर, ना० स्त्री० सहायता, सहाय, मदद।
गू० ना० पु० गूह, विष्ठा।
गूंगा० गु० मूक, जो बात न करसके, ना० पु० तृणादि या डाट, मिठाईविशेष।
गूंज० ना० स्त्री० शब्द, भिनभिनाहट।
गूंजना० अ० क्रि० गूंजरहना, भिनभिनाना।
गूंथना० } स० क्रि० पिरोना, लड़ियाना।
गूदना० }
गूंदनी० ना० स्त्री० वृक्षविशेष का फल जो पश्चिम में ग्रीष्मकाल में होता है।
गूंधना० स० क्रि० सानना, गूंथना, बिनना।
गूजर० ना० पु० नीचजातिविशेष।
गूजरी० ना० स्त्री० गूजरकी स्त्री, गहनाविशेष जो पांव में पहिनाजाता है।
गूढ़० गु० सूक्ष्म, कठिन, गुप्त, भीतर।
गूढ़गिरा० ना० स्त्री० गुप्तवाणी गोलबात, कठिन वचन।
गूढ़ता० ना० स्त्री० सूक्ष्मता, कठिनता, छिपाव।

गूढ़पत्र॰ ना॰ पु॰ करील, नागफली।

गूढ़पा॰ } ना॰ पु॰ सांप, यथा, कुंडलीगूढपा
गूढ़पात्॰ } चक्षुःश्रवाः काकोदरः फणी इत्यमरः

गूढ़ार्थ॰ गु॰ गुप्तअर्थ, कठिनअर्थ।

गूदड़॰ ना॰ पु॰ पुराना कपड़ा।

गूदा॰ ना॰ पु॰ भेजा, फलका सारांश।

गूप॰ गु॰ गुप्त, छिपा।

गूमड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ } गांठि।
गूमड़ा॰ ना॰ पु॰ }

गृंजन॰ ना॰ पु॰ प्याज, लहसुन, गांजा, गाजर वा गाजर का साग यथा, लशुनंगृंजनारिष्ट महाकन्दरसोनकः इत्यमरः पलांडुविड्वराहंच छत्राकं ग्रामकुक्कुटं लशुनंगृंजनंचैव भुक्त्वाचान्द्रायणं चरेत्, इति सरोज सुन्दरे।

गृध्र॰ ना॰ पु॰ गिद्ध।

गृष्टि॰ ना॰ स्त्री॰ वाराहीकन्द।

गृह॰ ना॰ पु॰ घर।

गृहकन्या॰ ना॰ स्त्री॰ घीकुवारि।

गृहगोधिका॰ ना॰ स्त्री॰ बिस्तुइया, छपकली।

गृहस्थ॰ ना॰ पु॰ दूसरा आश्रम, घरवाला।

गृहस्थाश्रम॰ ना॰ पु॰ गृहस्थका व्यवहार।

गृहस्थी॰ ना॰ स्त्री॰ गृहस्थका धर्म्म।

गृहिणी॰ ना॰ स्त्री॰ घरणी, भार्य्या, गेरू, चौखट।

गृही॰ ना॰ पु॰ गृहस्थ।

गृह्य॰ गु॰ जो ग्रहणकरने के योग्य है।

गेंडक॰ ना॰ पु॰ गेंदा।

गेंद॰ ना॰ स्त्री॰ खेलनेके लिये कपड़े वा सूतआदि का गोला।

गेंगटा॰ ना॰ पु॰ केकड़ा, सरतान।

गेगली॰ ना॰ स्त्री॰ बोदली।

गेडुआ॰ ना॰ पु॰ तकिया, सिरहाना, और टोंटी दारलोटा।

गेरू॰ ना॰ स्त्री॰ गैरिक, लाल मिट्टी।

गेरुआ॰ गु॰ गेरूका रंगाभया।

गेरुई॰ ना॰ स्त्री॰ जो गेहुओं में सरदीके कारण गेरूरंग का रोग होजाता है गु॰ गेरू का रंग।

गेह॰ ना॰ पु॰ घर, तलाश, चाह।

गेहूं॰ ना॰ पु॰ अन्नविशेष।

गेहुंआ॰ गु॰ गेहूंके रंग, ना॰ पु॰ घासविशेष।

गैंडा॰ ना॰ पु॰ जन्तुविशेष जिसकी हड्डी अति पवित्र होती है उसकी अंगूठी, छल्ले और तर्पण करने के पवित्र अर्घे का पात्र बनता है।

गैया॰ ना॰ स्त्री॰ गाय।

गैरिक॰ ना॰ स्त्री॰ गेरू, पर्वत की लालमिट्टी।

गैरेय॰ ना॰ पु॰ शिलाजीत।

गैल॰ ना॰ स्त्री॰ बाट, मार्ग।

गो॰ ना॰ पु॰ पद, कूप, जल, वज्र, स्वर्ग, खग, छन्द, ना॰ स्त्री॰ गाय, किरण, इन्द्रियां दश।

गोंडली॰ ना॰ स्त्री॰ वृक्षविशेष।

गोंद॰ ना॰ पु॰ लासा, चेप।

गोंदनी॰ ना॰ स्त्री॰ नरकटविशेष।

गोंदा॰ ना॰ पु॰ मिट्टीका गिलावा, चिड़िया के बुलाने के लिये लोई वा पेड़ा।

गोई॰ स॰ क्रि॰ भू॰ छिपाई, छिपी, ना॰ स्त्री॰ दो बैलादि के जोड़को कहते हैं।

गोकण्डी॰ ना॰ स्त्री॰ बेरीवृक्ष वा फल।

गोकर्ण॰ ना॰ पु॰ वितस्ति, मृगविशेष, खच्चर, गौका कान, साँप और शिवजी का स्थान प्रसिद्ध।

गोकर्णनाथ॰ ना॰ पु॰ श्रीशिवजी का तीर्थ विशेष।

गोकुल॰ ना॰ पु॰ नगरीविशेष, गौकाकुल।

गोकुलेश॰ ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्र।

गोखुरु॰ ना॰ पु॰ गोक्षुर, भूषणविशेष।

गोचना॰ स॰ क्रि॰ पकड़लेना, गेहूं चना।

गोचर॰ ना॰ पु॰ समक्ष, इन्द्रियज्ञान, गु॰ समक्ष।

गोचरी० ना० स्त्री० दर्शी, प्रकट।

गोजर० ना० पु० कनखजूरा।

गोजिका० }
गोजिह्वा० } ना० स्त्री० गोभी।

गोट० ना० स्त्री० चौपड़आदि खेलने की गुटिका अमलपत्ती, किनारी।

गोटा० ना० पु० किनारी।

गोटी० ना० स्त्री० शीतला माता, चेचक।

गोड़० ना० पु० पांव, पिंडली, गु० खुदाव।

गोड़ना० स० क्रि० खोदना, खुरचना।

गोड़िया० ना० पु० कहार, जातिविशेष।

गोड्डी० ना० स्त्री० चोरी।

गोण० ना० पु० लोथा, आखा, बोरा।

गोत० }
गोता० } ना० पु० गोत्र।

गोती० ना० पु० गोबर, गोमल, गु० गोत्रवाला।

गोद० ना० स्त्री० कनिया, गोदी, राशि।

गोदना० स० क्रि० चोंकना, चिह्नदेना।

गोदा० ना० पु० निशान, चिह्न, दबका।

गोदावरी० ना० स्त्री० नदीविशेष जो दक्षिण में है।

गोदी० ना० स्त्री० अंकवार, कौला, कनियां।

गोदोहनी० ना० स्त्री० दोहनी।

गोधन० ना० पु० गोबर, गायका धन, गोमल की प्रतिमा जो दीवाली को बनाते हैं।

गोधूम० ना० पु० गेहूं, गेहूं।

गोधूलि० }
गोधौरा० } ना० स्त्री० सायङ्काल, सन्ध्या।

गोन० }
गोनी० } ना० स्त्री० गोण।

गोप० ना० पु० ग्वाल, कण्ठका भूषण, छिरा।

गोपग्वाल० ना० पु० अहीर।

गोपद० ना० पु० गायका खुर।

गोपन० ना० पु० छिपाव, लुकाव।

गोपनीय० }
गोप्य० } गु० छिपाने के योग्य।

गोपाचल० ना० पु० ग्वालियर।

गोपाल० ना० पु० ग्वाल, अहीर, श्रीकृष्णचन्द्र।

गोपालपुर० ना० पु० मथुराजी वा जहां गंगा जी और गोमती का संगम भया है।

गोपिका० }
गोपी० } ना० स्त्री० ग्वालों की स्त्रियां।

गोपीनाथ० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।

गोबर० ना० पु० गायकी विष्ठा, गोमल।

गोबरगनेश० गु० मोटा, भद्दा, भोंड़ा।

गोबरी० ना० स्त्री० मिट्टी और गोबर मिला हुआ लीपने के लिये बनाते हैं।

गोभा० ना० पु० कल्ली, नईशाखा।

गोभी० ना० स्त्री० पौधा विशेष, तरकारी विशेष।

गोमका० ना० पु० कुम्हड़ा, यथा, पुष्पफला महाफला गोमका राजकर्कटी इति निघण्टे।

गोमती० ना० स्त्री० नदीविशेष।

गोमय० }
गोमल० } ना० पु० गोबर।

गोरटी० ना० स्त्री० गोरीस्त्री, सुन्दरी।

गोरमदायन० ना० पु० इन्द्रधनुष जो वर्षा में निकला करता है और सूर्य के सन्मुख होता है, रामचन्द्रिकायाम्, धनु है यह गोरमदायन नहीं। शरधार वहै जलधार वृथाहीं।

गोरस० ना० पु० इन्द्रियों का स्वाद,दूध, दही, मट्ठा, छाछआदि।

गोरसदायन० ना० पु० गोरमदायन।

गोरसी० ना० स्त्री० दोहनी।

गोरक्ष० ना० पु० नारंगी।

गोरा० गु० गौर, उज्वल।

गोरी० ना० स्त्री० उत्तम स्त्री, सुन्दरी।

गोरू० ना० पु० गाय बैल।

गोरोचन० ना० पु० गाय के मूत्र से उत्पन्न पीत वस्तु, गाय के शिर में से उत्पन्न औषध विशेष।

गोल० गु० गोल, चवरीला, ना० पु० मटका।

गोलक॰ ना॰ पु॰ पति के मरने के उपरान्त जारजात पुत्र आंखका घर।

गोलकुण्डा॰ ना॰ पु॰ नगर विशेष दक्षिण में है।

गोलता॰ ना॰ स्त्री॰ गोलाई।

गोलरूप॰ गु॰ गोलाकार।

गोला॰ ना॰ पु॰ गोल वस्तु, खाता, धरन, लोहे का पिण्डा, जंगलीकबूतर और नारियलका गूदा।

गोलाई॰ ना॰ स्त्री॰ परिधि, घेरा, गोलपन।

गोलाकार॰ गु॰ गोलरूप।

गोलाध्याय॰ ना॰ पु॰ सिद्धान्त शिरोमणि का एक प्रकरण।

गोलिका॰ ना॰ स्त्री॰ पति के मरने के उपरान्त जारजात कन्यका, गोली।

गोली॰ ना॰ स्त्री॰ छोटागोला।

गोलोक॰ ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्रका विशेष स्थान।

गोलोमा॰ ना॰ स्त्री॰ बच औषध।

गोवना॰ स॰ क्रि॰ छिपाना, भूत क्रिया, गोई।

गोवर्द्धन॰ ना॰ पु॰ पर्वत विशेष जो व्रज में है।

गोविन्द॰ ना॰ पु॰ कृष्णचन्द्र, वेदलभ्य।

गोविन्दचन्द्रिका॰ ना॰ स्त्री॰ पुस्तक विशेष।

गोशाला॰ ना॰ स्त्री॰ गाय बैल रहनेका घर।

गोष्ठ॰, **गोष्ठी॰** } ना॰ स्त्री॰ बांधनू मेल, सम्मत, सलाह।

गोष्पद॰ ना॰ पु॰ गायका खुर।

गोसाईं॰ ना॰ पु॰ ईश्वर, तपी, सन्तोंकामार्ग।

गोसैयां॰ ना॰ पु॰ ईश्वर, परमात्मा।

गोस्तनी॰ ना॰ स्त्री॰ दाख, अंगूर।

गोह॰ ना॰ स्त्री॰ बिसखपरा के डौलकाजीव।

गोहरा॰ ना॰ पु॰ उपला।

गोहार॰ ना॰ स्त्री॰ हुल्लड़, रौला, सहायता, मदद।

गोहूं॰ ना॰ पु॰ गेहूं, गोधूम अन्न विशेष।

गोहूअन॰ ना॰ पु॰ सर्प विशेष।

गोक्षुर॰ ना॰ पु॰ गोखुरू, पौधा विशेष।

गोत्र॰ ना॰ पु॰ वंश, घराना संज्ञा, पर्वत।

गोत्रघात॰, **गोत्रवध॰** } ना॰ पु॰ निजकुल का मनुष्य मारना।

गोत्रज॰ ना॰ पु॰ गोत्री, सम्बन्धी, अपने घराने का।

गोत्रा॰ ना॰ स्त्री॰ धरती।

गोत्री॰ ना॰ स्त्री॰ गोत्रज।

गौ॰ ना॰ स्त्री॰ गाय।

गौं॰ ना॰ स्त्री॰ दाव, घात, औसर, लाभ।

गौंगीर॰ गु॰ घाती, दाव खेलनेहारा।

गौगोड़॰ ना॰ पु॰ जब गाय ब्यानी दूध नहीं देती है तब ग्वाल उसकी योनि में हाथ डालकर खड़ी करते हैं।

गौड़॰ ना॰ पु॰ देशविशेष, ब्राह्मणविशेष, कायस्थ जाति विशेष।

गौड़िया॰ ना॰ पु॰ गौड़देशवासी, चैतन्य का शिष्य।

गौड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ गुड़की मदिरा, जहां गाइयां खड़ी होती हों।

गौण॰ गु॰ जो मुख्य नहीं, अर्थात् अप्रधान।

गौतम॰ ना॰ पु॰ मुनिविशेष, पर्व्वतविशेष।

गौथन॰ ना॰ पु॰ गायका स्तन।

गौदन्ती॰ ना॰ पु॰ हरताल वा औषध विशेष।

गौदान॰ ना॰ पु॰ गायका दान।

गौना॰ ना॰ पु॰ विवाह करके थोड़े दिनों में स्त्री को अपने घर लाना।

गौनहा॰, **गौनहार॰** } ना॰ पु॰ गौने में दूलह के साथी।

गौमली॰ ना॰ पु॰ गौरोचन।

गौर॰ ना॰ पु॰ धववृक्ष, जाति विशेष, चिट्टा, शुक्लवर्ण।

गौरक॰ ना॰ पु॰ तीतरपक्षी, गेरू।

गौरण्ड॰ ना॰ पु॰ गेरा।

गौर्य्या॰ ना॰ स्त्री॰ भवानी, पार्वती।

गौरव० ना० पु० बड़प्पन, गुरुताई।
गौरा० ना० पु० चटक, चिड़ा, स्त्री० पार्वती।
गौरिया० ना० स्त्री० चिड़िया।
गौरिला० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
गौरी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष, हल्दी, रात, पार्व्वती, तुलसी, गौरोचन।
गौशाला० ना० स्त्री० गाइयों का स्थान।
ग्रथित० गु० बंधाहुआ, पिरोयाहुआ।
ग्रन्थ० ना० पु० पुस्तक, पोथी, शास्त्र।
ग्रन्थकार० ना० पु० ग्रन्थकर्त्ता, कवि।
ग्रन्थनि० ना० पु० महामुरुडी, केलावृक्ष।
ग्रन्थि० ना० स्त्री० गांठि।
ग्रन्थिक० ना० पु० पीपरामूल।
ग्रन्थिमान्० ना० पु० हरसिंगाड।
ग्रन्थिल० ना० पु० कांकदवृक्ष, करील।
ग्रस्त० गु० शब्द जो चबाय के कहा गया, खाया गया, घिराहुआ।
ग्रह० ना० पु० सूर्य्यादि नवग्रह, घर।
ग्रहण० ना० पु० हाथ में लेना, अंगीकार, चन्द्रमा सूर्य्य का गहन।
ग्रहस्थापन० ना० पु० नवग्रहों को बैठाय के उनको आवाहन करना।
ग्रहीता० गु० ग्रहण करने हारा।
ग्राम० ना० पु० गांव, पुर, रूखी बात, समूह, रामचन्द्रिकायां, गिरिग्राम लै लै हरिग्राम मारैं, मनौपक्षिनी पत्र दन्ती बिदारैं।
ग्रामनर० ना० पु० गँवार, गांववासी।
ग्राम्य० गु० गांव में जो उत्पन्न भया।
ग्रामीण० ना० पु० गांवमें बसनेहारा, गवांर।
ग्राव० ना० पु० पत्थर, पर्व्वत।
ग्रास० ना० पु० कौर, लुकमा।
ग्रासक० गु० घेरनेवाला, रोकनेहारा।
ग्रासना० स० क्रि० घेरना, रोकना।
ग्रासित० गु० घेरागया नाका।
ग्राह० ना० पु० मगर।
ग्राहक० गु० ग्रहणकरनेहारा, अंगीकारकर्त्ता।
ग्राही० गु० ग्राहक, लेनेवाला, स्त्री० नाकिन।
ग्राह्य० गु० जो ग्रहण करने के योग्य है।
ग्रीवा० ना० स्त्री० गला, गर्दन, गलेकापृष्ठभाग।
ग्रीष्म० ना० स्त्री० तपन, गरमी।
ग्रैवेय० ना० पु० गलेका गहना, हसली, माला आदि।
ग्लानि० ना० स्त्री० घृणा, लाज, थकाई।
ग्वाल० } ना० पु० पशुपालक, अहीर।
ग्वाला० }
ग्वालिनि० ना० स्त्री० अहीरिनि।
ग्वैंड़० अव्य० समीप, पास।
ग्वैंड़ा० ना० पु० नगर व गांवका आसपास।

(घ)

घंघोरना० } स० क्रि० मथना, मिलाना, धोना।
घंघोलना० }
घंघरी० ना० स्त्री० लहंगा।
घट० ना० पु० देह, मन।
घटक० ना० पु० मध्यस्थ, बिचवैया, संदेशी।
घटज० ना० पु० अगस्त्यमुनि।
घटना० अ० क्रि० मन्दाहोना, कमहोना, योग्यहोना।
घटनीय० गु० जो घटने के योग्य है।
घटयोनि० ना० पु० अगस्त्यमुनि।
घटा० ना० स्त्री० मेघोंका उमड़ना, मेघ, भीड़, टोटा, मधुकर्कड़ी।
घटाटोप० ना० पु० पालकी वा रथका आच्छादन, गिलाफ, चारों ओर से घिरना।
घटाना० स० क्रि० कमकरना।
घटाव० ना० पु० कमती।
घटावना० स० क्रि० घटाना।
घटिका० ना० स्त्री० घड़ी, मुहूर्त्त, एड़ी के ऊपर का भाग।
घटित० गु० योग्य, गम्य।
घटिया० गु० थोड़े मोलका, सस्ता, घाटिदेनेहारा, धोखादेनेहारा, कपटी।
घटी० ना० स्त्री० क्षति, हानि, कमी, घड़ी।

घटत्यादि॰ ना॰ स्त्री॰ घड़ी आदि।
घड़घड़ाना॰ अ॰ क्रि॰ गरजना।
घड़ा॰ ना॰ पु॰ कुम्भ, घट, कलश मिट्टीका।
घड़िया॰ ना॰ स्त्री॰ कुल्हिया, मधुमक्खी का छत्ता, कोख, पियाली।
घड़ियाल॰ ना॰ पु॰ मगर, ग्राह, घण्टा।
घड़ियाली॰ गु॰ घण्टा बजानेहारा।
घड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ साठिपल, समय मापने का यन्त्रविशेष।
घड़ौंच॰ ना॰ पु॰ **घड़ौंची॰** स्त्री॰ } तिकठी, तिपाई, पानी का घड़ा रखने के लिये काष्ठ रचित वस्तु।
घणा॰ गु॰ घना।
घण्टा॰ ना॰ स्त्री॰ बाजाविशेष, अढ़ाईदण्ड।
घण्टालिका॰ ना॰ स्त्री॰ मधुककड़ी, घण्टी।
घण्टाली॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा घण्टा।
घन॰ ना॰ पु॰ घटा, मेघ, गु॰ घना, दृढ़, विस्तार, मूर्त्ति, ना॰ पु॰ लोहार का बड़ा हथौड़ा।
घनक॰ ना॰ पु॰ सँभालू पौधा।
घनगरज॰ ना॰ पु॰ गर्जन, गु॰ ऊंचा शब्द।
घनघनाना॰ अ॰ क्रि॰ झनझनाना, झहराना।
घनघोर॰ ना॰ पु॰ घटा, घेरा, घन गरज।
घनतनवर्ण॰ गु॰ जिसका वर्ण मेघ के समान हो, ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्रजी।
घनरस॰ ना॰ पु॰ जल, पानी।
घनश्याम॰ ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्रजी, गु॰ काली घटा।
घनस॰ ना॰ पु॰ पक्षीविशेष।
घनसार॰ ना॰ पु॰ कपूर, जल, चन्दन।
घना॰ गु॰ घिचपिच, बहुत।
घनासन॰ ना॰ पु॰ भैंसा।
घनाह्व॰ ना॰ पु॰ नागरमोथा।
घनेरा॰ गु॰ बहुत, अधिक।
घबराना॰ अ॰ क्रि॰ व्याकुल होना, हड़बड़ाना।
घबराहट॰ ना॰ स्त्री॰ व्याकुलता, हड़बड़ी।
घमण्ड॰ ना॰ पु॰ गर्व्व, अहंकार, गरूर।
घमण्डी॰ गु॰ अहंकारी, मगरूर।
घमरौल॰ ना॰ स्त्री॰ रौला, भीड़।
घमसान॰ ना॰ पु॰ युद्ध, लड़ाई।
घमाघम॰ गु॰ कचाकच।
घमाना॰ स॰ क्रि॰ धूप दिखाना, धूप में खड़ा होना।
घमासान॰ ना॰ पु॰ घमसान।
घमोई॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशेष।
घर॰ ना॰ पु॰ गृह, मकान।
घरनई॰ ना॰ स्त्री॰ चौघड़ा, बेड़ा।
घरना॰ स॰ क्रि॰ गढ़ना।
घरनी॰ ना॰ स्त्री॰ स्त्री।
घरबार॰ ना॰ पु॰ घराना।
घरबारी॰ ना॰ स्त्री॰ गृहस्थ।
घराना॰ ना॰ पु॰ कुटुम्ब, घर के लोग।
घरामी॰ ना॰ पु॰ छवैया।
घरी॰ ना॰ स्त्री॰ लपेटे हुये कपड़ों की गठरी, तह लगेहुये कपड़े, घड़ी।
घरैला॰ गु॰ घरका पालतू।
घरौंदा॰ **घरौर॰** **घरौशरा॰** } ना॰ पु॰ छोटा घर जो लड़के खेलने के लिये बनाते हैं वा जिस में खिलौना रखते हैं।
घर्घर॰ ना॰ पु॰ चक्की आदि का शब्द।
घर्घरा॰ ना॰ स्त्री॰ घाघरा।
घर्म॰ ना॰ पु॰ प्रस्वेद, जलन, धूप, घाम, काल।
घर्षण॰ ना॰ पु॰ घिसना, रगड़ना।
घलूआ॰ ना॰ पु॰ रूंग वा घाता जो तोल से अधिक लिया जाता है।
घवरि॰ ना॰ स्त्री॰ गुच्छ, गुंचा।
घसन॰ ना॰ पु॰ घर्षण।
घसना॰ स॰ क्रि॰ घिसना, रगड़ना।
घसियारा॰ ना॰ पु॰ घास काटनेहारा।
घसियारिन्॰ ना॰ स्त्री॰ घसियारे की बीबी।

घसीटना० स० क्रि० खींचना, कढ़ेलना।
घसीटा० स० क्रि० जो कढ़ेला गया।
घसीखा० गु० तृणस्थान, जहां घास हो।
घहराना० अ० क्रि० गरजना।
घाई० ना० स्त्री० घात, अंगुली का मध्यस्थान, लठ वा खड्ग का चीरा।
घांई० ना० स्त्री० ओर, पक्ष।
घाघ० ना० पु० प्राचीन, चतुर, गु० बाजीगर, इन्द्रजालिक।
घाघरा० ना० पु० लहँगा, पौधाविशेष, नद विशेष।
घाट० ना० पु० नदी वा तालाब में उतरने वा स्नान करने का स्थान, कर्णाटकदेश का पर्व्वत, डौल, घटी, गु० न्यून।
घाटा० ना० पु० चढ़ाव, घटी।
घटिया० ना० पु० घाट परका ब्राह्मण, जो स्नान करनेवाले के कपड़े बचाते हैं।
घाटी० ना० स्त्री० पर्व्वतों में संकेत मार्ग।
घात० ना० स्त्री० दवा, मार, दाव, हत्या, ओट।
घातक० गु० हत्यारा, शत्रु, मारनेवाला।
घाता० ना० पु० रुंक, मोल वा तौल से अधिक लेना।
घातिनी० ना० स्त्री० हत्यारिन्, मारनेवाली।
घाती० गु० दांव लेनेवाला, मारनेवाला।
घातुक० गु० अपकारी, निठुर, हत्यारा।
घान० ना० पु० उखली वा चक्की आदि में जितना एक बार डालते हैं, विवाह में कर्म विशेष।
घानी० ना० स्त्री० तिल आदि, कोल्हू, चक्की।
घाबड़ा० } **घाबरा०** } गु० व्याकुल, हैरान।
घाम० ना० पु० धूप।
घामड़० गु० भोला, उल्लू, अहमक।
घायल० गु० हथियार लगने से जिस के घाव भया।
घाल० ना० स्त्री० बुराई, बिगाड़।
घालक० गु० बधिक, हन्तक, मारनेवाला।
घालन० ना० पु० हनन, बधन, मारण।
घालना० स० क्रि० बिगाड़ना, उजाड़ना, घुसेड़ना, मारना, पटकना।
घालित० गु० माराहुआ, उजाड़ाहुआ।
घाव० ना० पु० चीरा, जख्म।
घास० ना० स्त्री० तृण, खर।
घासी० } **घासू०** } गु० घासवाला।
घिघिआना० अ० क्रि० आधीनी करना, लड़खड़ाना, जिगजिगी करना।
घिचपिच० गु० घना, आसपास।
घिन० ना० स्त्री० घृणा, असह, तअफ़्फ़ुन।
घिनाना० अ० क्रि० कुढ़ना, असह, देख के ऊबना।
घिनौना० गु० जिसको देखकर घिन आवे।
घिया० ना० स्त्री० तुरई, तरकारीविशेष।
घिरना० अ० क्रि० घेरे में पड़ना, उमण्डना।
घिरनी० } **घिरणी०** } ना० स्त्री० गरारी, गिर्री, कपोत विशेष, चरखी।
घिराना० स० क्रि० घेरा करवाना।
घिसना० अ० क्रि० रगड़ना, खियाना, स० क्रि० मलना।
घिसाना० स० क्रि० रगड़ाना, मलाना।
घिसाव० ना० पु० } **घिसावट०** स्त्री० } रगड़, रगड़ावट।
घिसियाना० स० क्रि० घसीटना।
घीकुवार० ना० स्त्री० औषध पौधाविशेष।
घुंघुची० ना० स्त्री० बेलिविशेषकाफल वा बीज।
घुंघुरू० ना० पु० चौरासी, पैंटा।
घुटुआ० ना० पु० जानु, गांठि पांव की।
घुण्डी० ना० स्त्री० वस्त्र आदि की गोल वस्तु यथा अँगरखे में होती है।
घुटना० ना० पु० ठेवना, जानु, अ० क्रि० घिसना, सांस रुकजाना।

घुटाना० स० क्रि० मुड़ाना, चिकना करना।
घुड़० ना० पु० घोड़ा।
घुड़कना० स० क्रि० दबकाना, धमकाना, झिड़कना।
घुड़की० ना० स्त्री० धमकी, झिड़की।
घुड़चढ़ा० ना० पु० अश्ववार, सवार।
घुड़घहल० ना० स्त्री० चौपहिया गाड़ी जिस में घोड़े मचते हैं।
घुन० ना० पु० कीटविशेष, ढोला।
घुना० गु० जिस में घुन लग गया।
घुनाक्षर० ना० पु० घुनकृत अक्षर।
घुनिया० गु० घना, कपटी।
घुमरी० ना० स्त्री० तिमिरी।
घुमाना० स० क्रि० फिराना, फेरना, बहकाना।
घुरकना० स० क्रि० घुड़कना!
घुरूका० ना० पु० भीमसेन का पुत्र जो हिडम्बी से उत्पन्न था जिस को घटोत्कच भी कहते हैं।
घुलना० अ० क्रि० गलना, पिघलना, नम्र हो जाना, दुर्बल होना।
घुलाना० स० क्रि० पिघलाना, गलाना।
घुलावट० ना० स्त्री० पिघलावट।
घुसना० अ० क्रि० पैठना।
घुसपैठ० ना० स्त्री० पहुँच।
घुसाना० स० क्रि० पिलाना, पैठाना।
घुसेड़ना० स० क्रि० ठांसना, खोंसना।
घूंगनी० ना० स्त्री० उसना, चना, गेहूं।
घूंगर० ना० पु० लहराये हुये बाल।
घूंगी० ना० स्त्री० घोंघी, छोटाघोंघा।
घूंघट० ना० पु० ओढ़ना, नक़ाब।
घूंघर० ना० पु० घूंगर।
घूंघरू० ना० पु० नूपुर।
घूंटना० स० क्रि० निगलना, लीलना।
घूंस० ना० स्त्री० बड़ा चूहा।
घूंसा० ना० पु० घूसा, थप्पड़, मूका।

घूघू० ना० पु० पक्षीविशेष, पाण्डुक।
घूट० ना० पु० पानी की लिलावट।
घूटना० स० क्रि० घूंटना।
घून० ना० पु० द्वेष, कपट, द्रोह, लाग।
घूना० गु० कपटी, द्रोही।
घूमना० अ० क्रि० फिरना, चक्करदेना, लौटना।
घूर० ना० पु० खाद, कूड़ा, ताक।
घूरची० ना० स्त्री० उलझेड़ा।
घूरना० स० क्रि० ताकना, क्रोध से देखना।
घूस० ना० स्त्री० घूंस, अंकोर, रिशवत।
घूसत० ना० पु० उल्लू का बच्चा।
घूसा० ना० पु० थप्पड़, मुक्का, मुक्की।
घृणा० ना० स्त्री० घिन, ग्लानि।
घृणि० ना० स्त्री० किरण।
घृत० ना० पु० घी।
घृताची० ना० स्त्री० मुख्य अप्सरा।
घृताक्त० गु० चिकना।
घृष्टि० ना० पु० शूकर, वाराह।
घेंटा० ना० पु० } शूकर का बच्चा।
घेंटी० स्त्री० }
घेगा० } ना० पु० गले में रोगविशेष।
घेघा० }
घेतला० ना० पु० जूतीविशेष।
घेर० गु० रूंधा, घूमघुमाव, गोलाकार, ना० पु० फेर।
घेरना० स० क्रि० रूंधना, गांसना।
घेरा० गु० जो रोका गया, ना० पु० कुंडल, मंडल, ढांचा।
घेवर० ना० पु० मिठाईविशेष।
घोंगा० ना० पु० शंख वा घोंघा जन्तु वि० जन्तु का घरविशेष।
घोंसला० ना० पु० पक्षी का घर, खोंता।
घोकना० } स० क्रि० रटना, याद करना।
घोखना० }
घोघी० ना० स्त्री० वस्त्रविशेष जो कम्मल आदि से बनाते हैं।

घोणा० ना० स्त्री० नाक, नासिका, यथा (क्लीबे घ्राणं गन्धज्ञा, घोणा नासाच नासिका) इत्यमरः।

घोट० ना० स्त्री० चिकनाहट, ओप।

घोटक० ना० पु० घोड़ा, यथा (घोटके वीति तुरगतुरंगाश्वतुरंगमाः) इत्यमरः।

घोटना० स० क्रि० मलके चिकना करना, मुण्डना, ना० पु० पाषाणआदिकी वस्तु जिससे चिकनाते हैं।

घोटा० ना० पु० काष्ठादिकी वस्तु जिससे घोटते हैं, ना० स्त्री० सुपारी।

घोड़ा० ना० पु० अश्व, तुरंग।

घोर० ना० पु० शब्द, भय धड़का, गु० भयानक, कठिन, कड़ा।

घोरनिद्रा० ना० स्त्री० सुखनींद, बड़ीनींद।

घोरफटा० ना० स्त्री० गोह।

घोल० ना० पु० मट्ठा, छाछ।

घोलना० स० क्रि० मिलाना।

घोष० ना० पु० अहीरोंका गांव, गोप, ग्वाल।

घोषणा० स० क्रि० अभ्यासकरना, यादकरना, प्रसिद्ध रूप से जनाना।

घोषा० ना० स्त्री० सौंफ, विडंग।

घोस० ना० पु० घोष।

घोसी० ना० पु० ग्वाल, अहीर।

घौड़ि०
घौरि० } ना० स्त्री० गुच्छा, घवरि।

घ्राण० ना० पु० नाक, गन्धिका ग्रहण।

घ्राणेन्द्रिय० ना० स्त्री० नासिका, नाक।

[च]

चँवर० ना० पु० चमर।

चक० ना० पु० चकवा पक्षी, जिस भूमि पर अपना अधिकार हो।

चकचका० गु० स्वच्छ, निर्मल, तेजोमय।

चकड़बा० ना० पु० चकल्लस, आनन्द।

चकता० ना० पु० चिह्न, निशान।

चकती० ना० स्त्री० फाक, थेगली, पैवन्द।

चकनाचूर० ना० पु० कतरन, छीलन, चूर, चूर्ण।

चकल्लस० ना० स्त्री० चकड़बा, मग्नता, तमाशा।

चकल्लसी० गु० चकड़बावाला, मग्न।

चकला० ना० पु० वेश्याका घर, वस्त्रविशेष जो पाट और सूत से बनता है, देश का खण्ड जिसमें कई परगना होते हैं, गु० चौड़ा।

चकलाई० ना० स्त्री० चौड़ाई।

चकवा० ना० पु० राजहंस जाति के पक्षी विशेष।

चकवी० ना० स्त्री० चकवा की स्त्री।

चका० ना० पु० पहिया, चक्र, कुलाल जिसपर बर्तन बनाता है।

चकाचौंध० ना० स्त्री० दृष्टिका तिरमिराना।

चकाबू०
चकाव्यूह० } ना० पु० चक्रव्यूह।

चकित०
चकृत० } गु० अचम्भित, भूलाभया, तअज्जुबमें।

चकोतरा० ना० पु० गलगल, फलविशेष।

चकोर० ना० पु० पक्षीविशेष।

चक्कवै० ना० पु० राजा चक्रवर्त्ती।

चक्का० ना० पु० दही, गाड़ी का पहिया।

चक्कान० गु० गाढ़ा, जमाहुआ।

चक्कास० ना० पु० मुर्गियों का घर।

चक्की० ना० स्त्री० दलैती, जिससे आटा पीसते हैं।

चयक्कू० ना० पु० छुरी, चाकू।

चक्र० ना० पु० अस्त्रविशेष, पहिया, गोल, भ्रमण, सुदर्शन, कुम्हार का चाक।

चक्रकु० ना० पु० तगर औषध।

चक्रधर०
चक्रपाणि० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र जी, गु० जो चक्र बांधता हो।

चक्रवर्ती० ना० पु० चारोंमण्डल का राजा, सार्वभौमराजा।

चक्रवाक० ना० पु० चकवा।

चक्रमर्द्दन॰ ना॰ पु॰ पवांर, कौंच बीज।

चक्रव्यूह॰ ना॰ पु॰ चक्राकार सैन्यका गढ़ बनाकर समर करना।

चक्रलक्षणा॰ ना॰ स्त्री॰ गुरच।

चक्रा॰ ना॰ स्त्री॰ समूह, गिरोह, टोली।

चक्राकार॰ गु॰ पहिया के डौल।

चकित॰ गु॰ चकित, भ्रमित।

चक्री॰ ना॰ स्त्री॰ चकला, गायओं की मंडली ना॰ पु॰ सांप, कुम्हार।

चख॰ ना॰ पु॰ चक्षु, नेत्र।

चखना॰ स॰ क्रि॰ जांचना, स्वादलेना, खना।

चखाचखी॰ ना॰ स्त्री॰ बिगाड़, लड़ाई, फूट।

चंग॰ ना॰ स्त्री॰ गुड्डी, कनमा, पतंग।

चंगा॰ गु॰ भला, अच्छा, सुखी।

चंगेर॰ ना॰ स्त्री॰ फूल रखने का पात्र, कठौती।

चंगेरा॰ ना॰ पु॰ }
चंगेरी॰ ना॰ स्त्री॰ } खांचा, खांची, कठरा, कठरी।

चचा॰ ना॰ पु॰ पिताका भाई, चाचा।

चची॰ ना॰ स्त्री॰ चचाकी स्त्री।

चचुलाई॰ ना॰ पु॰ चचेंड़ा, तरकारी।

चचोरना॰ स॰ क्रि॰ सूखी वस्तुका चूसना।

चंचनाना॰ स॰ क्रि॰ टीसना, क्रोधित होना, झुंझलाना।

चंचनाहट॰ ना॰ स्त्री॰ टीस, झुंझलाहट।

चंचरीक॰ ना॰ पु॰ भौंरा।

चंचल॰ गु॰ अस्थिर, चपल, कम्पाहा, खिलाड़, नाशी।

चंचलता॰ ना॰ स्त्री॰ अस्थिरता, चपलता।

चंचला॰ ना॰ स्त्री॰ बिजली, कौंधा, लक्ष्मी।

चंचलाई॰ ना॰ स्त्री॰ ढिठाई।

चंचलाहट॰ ना॰ स्त्री॰ अस्थिरता, ढिठाई।

चंचु॰ ना॰ पु॰ चोंच, शुक पक्षी।

चट॰ अव्य॰ तुरन्त, उसी समय।

चटक॰ ना॰ स्त्री॰ चमक, धड़ाका, चिपा, गु॰ बुद्धिमान् चालाक, वेगी।

चटकना॰ ना॰ पु॰ धप्पा, अ॰ क्रि॰ फटना, धड़कना, तड़कना।

चटका॰ ना॰ पु॰ भौंरा, गरगैआ पक्षी, पक्षी टोटा, चट्टी, दरका।

चटकाना॰ स॰ क्रि॰ चुटकी बजाना, फटकारना, फोड़ना, चीरना।

चटकारना॰ स॰ क्रि॰ पशुआदि के चलाने में मुखसे टिक टिक करना।

चटकाहट॰ ना॰ स्त्री॰ चमक, भड़क, ना॰ पु॰ चिड़ियों का शब्द।

चटकीला॰ ना॰ पु॰ }
चटकीली॰ ना॰ स्त्री॰ } चमकीला, भड़कीला, नमकीन।

चटगांव॰ ना॰ पु॰ नगर जो बंगाले के पूर्व है।

चटनी॰ ना॰ स्त्री॰ खाने के लिये खट्टी बनाई हुई वस्तु, चाटने की वस्तु।

चटपट॰ अव्य॰ तुरन्त, उसीसमय।

चटपटाना॰ अ॰ क्रि॰ व्याकुलहोना, फड़फड़ाना, किसी वस्तु के लिये जी चलाना।

चटपटाहट॰ ना॰ स्त्री॰ व्याकुलता।

चटपटिया॰ गु॰ फुर्तीला, चालाक।

चटपटी॰ ना॰ स्त्री॰ उतावली, हड़बड़ी।

चटवाना॰ स॰ क्रि॰ चटाके खिलाना।

चटसार॰ }
चटसाल॰ } ना॰ स्त्री॰ पाठशाला, मदरसह।

चटाई॰ ना॰ स्त्री॰ बिछौनाविशेष।

चटाक॰ ना॰ पु॰ धड़ाक, भड़ाका, एकाएक।

चटाका॰ ना॰ पु॰ धड़ाका, चूमा लेनेकाशब्द।

चटाचट॰ गु॰ दोहराय तिहरायके जो शब्द।

चटाना॰ स॰ क्रि॰ चटवाना।

चटिया॰ ना॰ पु॰ शिष्य, चेला, गु॰ चाटने वाला।

चटी॰ ना॰ स्त्री॰ ध्यान, स्थिरता, ताड़ी, रामचन्द्रिकायां यथा (सब जात घटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहँ एक घटी । निघटी रुचि मीचु घटीहु घटी जग जीव यतीन कि छूटी चटी)।

चटोरा॰ गु॰ रसिया, पेटू, अर्थरज।
चट्टा॰ ना॰ पु॰ चटसाली बालक।
चट्टान्॰ ना॰ पु॰ पत्थरका छोटाभाग वा टुकड़ा।
चट्टाबट्टा॰ ना॰ पु॰ खिलौनाविशेष।
चड़॰ ना॰ पु॰ वृक्षकी डाली तड़ने का शब्द।
चड़बड़॰ गु॰ चटाचट, विक्री।
चड़चड़ाना॰ अ॰ क्रि॰ फटना, तड़कना।
चड़बड़िया॰ ना॰ पु॰ बकी।
चढ़ाई॰ ना॰ स्त्री॰ पश्चिम में तैयारी को कहते हैं और अवधमें कूप गहिराने को।
चढ़ता॰ ना॰ पु॰ लाभ, बढ़ती।
चढ़ताहोना॰ अ॰ क्रि॰ निकलता होना, सरस होना।
चढ़ना॰ स॰ क्रि॰ आरोहण करना, बिलंगना, उठना, धावा करना, सवारहोना।
चढ़वैया॰ गु॰ चढ़नेवाला, यथा घुड़चढ़ा।
चढ़ाई॰ ना॰ स्त्री॰ चढ़ाव, धावा।
चढ़ाना॰ स॰ क्रि॰ आरोहण करना, बलिदान करना, उठाना, ढोल वा धनुष् का तानना वा कसना।
चढ़ाव॰ ना॰ पु॰ चढ़ाई, भाटा।
चढ़ैत॰ } **चढ़ैता॰** } ना॰ पु॰ चढ़वैया।
चढ़ौवा॰ ना॰ पु॰ जूता जो एंड़ी से चढ़ा रहता है।
चणक॰ } **चणा॰** } ना॰ पु॰ चना, अन्नविशेष।
चण्ड॰ गु॰ प्रबल, प्रचण्ड, भैरवविशेष।
चण्डांशु॰ ना॰ पु॰ सूर्य्य।
चण्डागुता॰ ना॰ स्त्री॰ कौंच बीज।
चण्डाल॰ ना॰ पु॰ चांडाल, अतिनीच,कुकर्मी।
चण्डालिन्॰ } **चण्डाली॰** } ना॰ स्त्री॰ चांडालकी स्त्री।
चण्डिका॰ } **चण्डी॰** } ना॰ स्त्री॰ दुर्गादेवी।

चण्डोल॰ ना॰ पु॰ पालकीविशेष, पक्षीविशेष, खिलौना विशेष।
चतु॰ गु॰ चारि।
चतुर॰ गु॰ निपुण, सुनारी, प्रवीण, स्याना, धूर्त्त, ना॰ पु॰ कौआ।
चतुरई॰ } **चतुरता॰** } ना॰ स्त्री॰ बुद्धिमानी, स्यानपन, धूर्त्तता।
चतुरंग॰ ना॰ पु॰ चारिअंग की।
चतुरंगसैन्य॰ ना॰ स्त्री॰ चारिप्रकारकी फ़ौज अर्थात् हाथी १ घोड़ा २ रथ ३ पदाति ४।
चतुरंगुल॰ गु॰ चारिअंगुल, स्त्री॰ किरवाली।
चतुरस्र॰ गु॰ चौखूंटा।
चतुरा॰ गु॰ चतुर।
चतुराई॰ ना॰ स्त्री॰ चतुरता।
चतुरानन॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा।
चतुरवस्था॰ ना॰ स्त्री॰ चारिअवस्था, अर्थात् जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय, अथवा बाल्या, प्रौढ़, युवा, वृद्ध।
चतुराश्रम॰ ना॰ पु॰ चारि आश्रम, अर्थात् ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासी।
चतुरास॰ ना॰ स्त्री॰ चारों ओर।
चतुरासी॰ गु॰ अस्सी और चार ८४।
चतुराशीयोनि॰ गु॰ चौरासी योनि अर्थात् (दोहा) नव ९ जलचरदश १० व्योमचर कृमि ग्यारह११ वन बीस२०, ये चौरासी ८४ जानिले मनुज चारि ४ पशु तीस ३०)।
चतुरुपवेद॰ ना॰ पु॰ चारि उपवेद, अर्थात् धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, आयुर्वेद और धर्मशास्त्र।
चतुर्थ॰ गु॰ चौथा।
चतुर्थावस्था॰ ना॰ स्त्री॰ बुढ़ापा, मृत्युकाल।
चतुर्थी॰ ना॰ स्त्री॰ चौथ, चौथी तिथि।
चतुर्दश॰ गु॰ चौदह १४।
चतुर्दशविद्या॰ ना॰ स्त्री॰ चौदहविद्या, अर्थात् ब्रह्मज्ञान १ रसायन २ वैद्यक ३ ज्योतिष ४ व्याकरण ५ धनुर्विद्या ६ कोक ७ जलतरण ८

नाड़ीज्ञान ९ वाहन फेरन १० नटनृत्य ११ जूप १२ तस्करी १३ स्वरज्ञान १४।

चतुर्दशरत्न॰ ना॰ पु॰ चौदहरत्न, अर्थात् अमृत १ चन्द्रमा २ लक्ष्मी ३ धनुष् ४ धन्वन्तरि ५ ऐरावत ६ कौस्तुभमणि ७ उच्चैःश्रवा ८ शङ्ख ९ अप्सरा १० कामधेनु ११ कल्पद्रुम १२ मदिरा १३ विष १४।

चतुर्दशमनु॰ ना॰ पु॰ चौदहमनु, अर्थात् स्वायम्भुव १ स्वारोचिष २ उत्तम ३ तामस ४ रैवत ५ चाक्षुष ६ वैवस्वत ७ सावर्णि ८ दक्षसावर्णि ९ ब्रह्मसावर्णि १० धर्म्मसावर्णि ११ रुद्रसावर्णि १२ देवसावर्णि १३ इन्द्रसावर्णि १४।

चतुर्दशलोक॰ ना॰ पु॰ चौदह लोक, अर्थात् सप्तस्वर्ग और सप्त पाताल, भू १ भुवः २ स्वः ३ महः ४ जन ५ तप ६ सत्य ७ अतल ८ वितल ९ सुतल १० रसातल ११ तलातल १२ महातल १३ पाताल १४।

चतुर्दशी॰ ना॰ स्त्री॰ चौदहवीं तिथि, चौदस।

चतुर्भुज॰ ना॰ पु॰ विष्णु, नारायण, गु॰ चारि भुजावाला, वा चारिमेड़ों का खेत।

चतुर्भुजक्षेत्र॰ ना॰ पु॰ चौमेड़ा खेत।

चतुर्भुजी॰ ना॰ स्त्री॰ देवीविशेष।

चतुर्भोजन॰ ना॰ पु॰ चारिप्रकारका भोजन, अर्थात् भोज्य १ भक्ष्य २ लेह्य ३ चोष्य ४।

चतुर्मुख॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा।

चतुर्मुक्ति॰ ना॰ स्त्री॰ चारिमुक्ति, अर्थात् सालोक्य १ सामीप्य २ सारूप्य ३ सायुज्य ४।

चतुर्योनि॰ ना॰ स्त्री॰ चारियोनि, अर्थात् स्वेदज १ अण्डज २ उद्भिज ३ जरायुज ४।

चतुर्वेद॰ ना॰ पु॰ चारिवेद, अर्थात् ऋक् १ यजुः २ साम ३ अथर्वण ४।

चतुर्वेदी॰ ना॰ पु॰ चौबे, चारिवेदवक्ता।

चतुर्वर्ग॰ ना॰ पु॰ चारिवर्ग, अर्थात् चारिफल।

चतुर्वर्ण॰ ना॰ पु॰ चारिवर्ण अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

चतुर्वाद्य॰ ना॰ पु॰ चारिप्रकार का बाजा, अर्थात् तत १ वितत २ घन ३ शिखर ४।

चतुर्बाहु॰ ना॰ पु॰ चतुर्भुज।

चतुर्विंश॰ गु॰ चौबीसवां।

चतुर्विंशति॰ गु॰ चौबीस २४।

चतुर्विवाह॰ ना॰ पु॰ चारिप्रकार के विवाह, अर्थात् प्राजापत्य १ आर्ष २ गान्धर्व ३ राक्षसी ४।

चतुष्कोण॰ गु॰ चौकोन, चौकोना।

चतुष्पदधर्म॰ ना॰ पु॰ चारिपद धर्म्म के, अर्थात् विद्या १ सत्य २ तपस्या ३ दान ४।

चतुष्फल॰ ना॰ पु॰ चारिफल, अर्थात् अर्थ १ धर्म २ काम ३ मोक्ष ४।

चतुष्पाद॰ ना॰ पु॰ पशु, चारिपदवाला।

चतुस्सहस्र॰ गु॰ चारिहजार ४०००।

चतुस्संहिता॰ ना॰ स्त्री॰ चारिसंहिता, अर्थात् ब्राह्मी १ भागवती २ वैष्णवी ३ सौरि ४।

चना॰ ना॰ पु॰ अन्नविशेष।

चन्द॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा।

चन्दन॰ ना॰ पु॰ गन्धसार, गन्धराज, सन्दल।

चन्दवा॰ ना॰ पु॰ मेघडम्बर।

चन्दा॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा ब्रजविलासे यथा (देखति रही खिलौना चन्दा, आरि न कीजिय बालगोविन्दा)।

चन्दिया॰ ना॰ स्त्री॰ टटरी, चांदि, छोटी रस्सी।

चन्द्र॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा, चांद।

चन्द्रक॰ ना॰ पु॰ कपूर, मयूर, नथ में लगी वस्तु।

चन्द्रकला॰ ना॰ स्त्री॰ चन्द्रमा का सोलहवां भाग, स्त्रियों की धोती विशेष।

चन्द्रकान्त॰ ना॰ स्त्री॰ मणिविशेष।

चन्द्रग्रहण॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा का गहन।

चन्द्रघण्टा॰ ना॰ स्त्री॰ देवीविशेष।

चन्द्रचूड़॰ ना॰ पु॰ श्रीमहादेवजी।

चन्द्रभागा० ना० स्त्री० चिनाबनदी जो पंजाब में है।

चन्द्रभाल० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गणेशजी।

चन्द्रमल्लिका० ना० स्त्री० इलायची।

चन्द्रमा० ना० पु० चांद, मूर्तिविशेष।

चन्द्रमुखी० गु० जिसका मुख चन्द्रमा सरीखा है अर्थात् अतिसुन्दरी।

चन्द्रमौलि० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गणेशजी।

चन्द्रवधू० } ना० स्त्री० बीरबहूटी कीड़ा जो चन्द्रवधूटी० } लालमकरीसाहोता है, रोहिणी।

चन्द्रवंशी० गु० जो चन्द्रमा से उत्पन्न भये क्षत्रियकी जातिविशेष अर्थात् सोमवंशी।

चन्द्रबाला० ना० स्त्री० छोटी कटाई बड़ी इलायची।

चन्द्रसिता० ना० स्त्री० कपूर।

चन्द्रशेखर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, पर्वत।

चन्द्रहार० ना० पु० गलेका गहना विशेष।

चन्द्रहास० ना० पु० खड्ग, तलवार, राजाविशेष।

चन्द्रहासा० ना० स्त्री० गुरच।

चन्द्रहासी० ना० स्त्री० छोटी कटाई।

चन्द्रा० गु० मुण्डला, गुंजा, बुद्धिमान्।

चन्द्रातप० ना० पु० चांदनी, चन्द्रिका।

चन्द्राना० अ० क्रि० सूखना, मुरझाना।

चन्द्रायण० ना० पु० व्रत चान्द्रायण जो एक महीने १ एक ग्रास भोजन में शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष में बढ़ाने घटाने की रीति से होता है।

चन्द्रिका० ना० स्त्री० चांदनी, बाकुची औषध, पुस्तकविशेष, चकोर।

चन्द्रोदय० ना० पु० चन्द्रमा का उदय, औषध विशेष।

चपकन० ना० स्त्री० अंगरखा विशेष, फारसी शब्द।

चपकना० अ० क्रि० मिलजाना, बैठिजाना, सटना, चिपटजाना, लसिजाना।

चपकाना० स० क्रि० मिलाना, बैठाना, चिपटाना।

चपटना० अ० क्रि० चपटा होना, लपटना।

चपटा० गु० बैठवां, लपटा।

चपटाना० स० क्रि० बैठाना, मिलाना।

चपटी० ना० स्त्री० दो स्त्रियां परस्पर प्रसंगित, मिलीहुई वस्तु।

चपचपड़० ना० पु० खाते समय मुख में का शब्द।

चपड़ा० ना० पु० लाखविशेष।

चपड़ाऊ० गु० निर्लज्ज, ढीठ, ना० पु० जूते पीछे दबे।

चपड़ान० स० क्रि० खोटा करना, ढीठकरना।

चपना० अ० क्रि० लज्जित होना, आधीन होना, मुसलजाना, दबजाना।

चपनी० ना० स्त्री० ढकना, ढपना, छोटा।

चपरास० ना० स्त्री० पैदल के लिये स्वामीका चिह्न।

चपरासी० ना० पु० चपरास बांधनेहारा, दूत।

चपल० गु० चंचल, उज्ज्वल, सुन्दर, ना० पु० पारा।

चपला० ना० स्त्री० कौंधा, बिजली।

चपाती० ना० स्त्री० फुलका, यह शब्द फारसी है।

चपाना० अ० क्रि० थोपना, लज्जित करना।

चपेट० ना० स्त्री० } थप्पा, थप्पड़, धौलसे जो चपेटा० ना० पु० } विपत्ति आजावे।

चप्पा० गु० चारि अंगुली का प्रमाण।

चप्पी० ना० स्त्री० देहका दाबना वा मलना।

चबाई० ना० स्त्री० कुचलाई, चर्वण, गु० निन्दक, दूषक, द्वेषिक, नकली।

चबाउ० ना० पु० बतकहाउ, कहासुनी।

चबाना० स० क्रि० कुचिलना, चाबना।

चबाथिन० ना० स्त्री० निन्दायुत, निन्दक।

चविक० ना० स्त्री० चाब औषध।

चबेना॰ ना॰ पु॰ } भूनाहुआ अन्न।
चबेनी॰ ना॰स्त्री॰ }

चव्य॰ } ना॰ स्त्री॰ चाव, औषध।
चव्यन॰ }

चभक॰ ना॰ पु॰ डंक।

चमक॰ ना॰ स्त्री॰ चटक, झलक, भड़क।

चमकता॰ गु॰ उजागर, उजला।

चमकना॰ अ॰ क्रि॰ झलकना, लौकना, भाग्य उदय होना, क्रोधितहोना।

चमकाना॰ स॰ क्रि॰ झलकाना, लुकाना, घुमाना, नचाना, फैलाना।

चमकाव॰ ना॰ पु॰ } चमक, भड़क।
चमकाहट॰ना॰स्त्री॰ }

चमकीला॰ गु॰ चमकने हारा, चमकदार।

चमकौना॰ ना॰ पु॰ चमकाने वाला।

चमगादड़॰ ना॰ पु॰ }
चमगीदर॰ ना॰ पु॰ }
चमगुदड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ } रातिका उड़नेवाला पक्षी, दिवांध जो वृक्ष में उलटा टंगता है।
चमगुदरी॰ ना॰ स्त्री॰ }
चमगोदड़॰ ना॰ पु॰ }
चमगोदरी॰ ना॰ स्त्री॰ }

चमचमात॰ ना॰ पु॰ चमकित।

चमचमाना॰ अ॰ क्रि॰ चमकना, झुनझुनाना।

चमचमाहट॰ ना॰ स्त्री॰ चमकाहट।

चमड़ा॰ ना॰ पु॰ चर्म, खाल।

चमत्कार॰ ना॰ पु॰ अचम्भा, भड़क, बढ़ती, ऐश्वर्य।

चमत्कारी॰ गु॰ भड़कीला, भाग्यशाली।

चमर॰ ना॰ पु॰ चवर, सुरभि गाय की पूंछ।

चमरई॰ ना॰ स्त्री॰ चमारपन, चमार का काम।

चमरी॰ ना॰ स्त्री॰ सुरभि।

चमार॰ ना॰ पु॰ चर्मकार, नीचजाति विशेष।

चमारिन्॰ } ना॰ स्त्री॰ चमारकी स्त्री।
चमारी॰ }

चमू॰ ना॰ स्त्री॰ सैन्य, फौज।

चमूप॰ }
चमूपति॰ } ना॰ पु॰ सेनापति, सिपहदार।
चमूपाल॰ }

चमेटा॰ ना॰ पु॰ चपेटा।

चमोटा॰ ना॰ पु॰ } चमड़ा जिसपर नाई छुरा
चमोटी॰ ना॰ स्त्री॰ } फिराते हैं।

चम्पई॰ गु॰ नारंजी रंग।

चम्पक॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशेष जिसका फूल पीला सुगन्धित होता है।

चम्पत॰ ना॰ पु॰ भागन।

चम्पतहोना॰ अ॰ क्रि॰ भागजाना, छुपना।

चम्पा॰ ना॰ पु॰ चम्पक।

चम्पाकली॰ ना॰ स्त्री॰ चम्पाकी कली के समान गहना विशेष गले में पहिनते हैं।

चम्बू॰ ना॰ पु॰ जलपात्र विशेष जिससे देवताको जल चढ़ाते हैं।

चम्बेली॰ ना॰ स्त्री॰ वृक्ष वा उसका फूल।

चय॰ ना॰ पु॰ समूह, ढेर, अंश।

चयन॰ ना॰ पु॰ आनन्द, कुशल, क्षेम।

चर॰ ना॰ पु॰ चारा, ग्राह, दूत, गु॰ जिस को चलने की शक्ति होे, वा जो चलने व उठने के योग्य हो यथा नर नारि पशु पक्षी आदि, चारा।

चरक॰ ना॰ पु॰ वैद्यविद्या का ग्रन्थ विशेष, कोढ़।

चरकटा॰ ना॰ पु॰ चारा काटनेवाला।

चरका॰ ना॰ पु॰ श्वेतकुष्ठविशेष, सफ़ेद कोढ़।

चरकी॰ गु॰ कोढ़ी।

चरचना॰ स॰ क्रि॰ देह में चन्दन लगाना, चर्चना।

चरचर॰ ना॰ पु॰ सप, बक।

चरचराना॰ अ॰ क्रि॰ चटकना, मरमराना।

चरचेला॰ गु॰ बक्की, बकवादी।

चरण॰ ना॰ पु॰ पांव, श्लोकआदिका एकपद।

चरणपीठ० ना० पु० खड़ाऊं ।

चरणामृत० } ना० पु० जल जिससे देवता वा गुरु वा ब्राह्मणादि के पांव धोयेगये हों ।
चरणोदक० }

चरती० गु० जो व्रत नहीं करता, व्रती नहीं ।

चरन० ना० पु० चरण ।

चरना० अ० क्रि० चुगना, फिरना ।

चरनी० ना० स्त्री० थान वा कठरा जिस में बैल भूसा खाते हैं ।

चरन्नी० ना० स्त्री० चौअन्नी ।

चरपरा० गु० तीता, कडुआ, तीक्ष्ण, फुर्तीला ।

चरपराना० अ० क्रि० परपराना ।

चरपराहट० ना० स्त्री० परपराहट ।

चरबरिया० गु० मनचला, सुघड़ ।

चरम० गु० पिछला ।

चरवाई० ना० स्त्री० चराई ।

चरवाहा० ना० स्त्री० रखवारा, चरानेहारा ।

चरस० ना० पु० मादक वस्तु, मोठ, पुरवट ।

चरसा० ना० पु० अधौड़ी, खाल ।

चराई० ना० स्त्री० चराने के दाम, चराने का काम ।

चराक० गु० चरनेहारा, पशु ।

चराचर० ना० पु० चल अचल सजीव निर्जीव जन्तु ।

चरान० ना० पु० तराई ।

चराना० स० क्रि० चुगाना ।

चराव० ना० पु० खेत वा धरती जो चरने के योग्य ।

चरावना० स० क्रि० चराना ।

चरित० ना० पु० चरित्र ।

चरितार्थ० ना० पु० कृतार्थ ।

चरित्र० ना० पु० स्वभाव, शील, वृत्तांत ।

चरुआ० ना० पु० भांड़ा ।

चर्चक० गु० चर्चा करनेहारा, वादी ।

चर्चना० स० क्रि० विचारना, समझना, पूजना, पहिचानना ।

चर्चरी० ना० स्त्री० छन्दविशेष, कटी, विक्री ।

चर्चा० ना० स्त्री० प्रस्ताव, बतकहाव ।

चर्चित० गु० लगाया हुआ, कहा हुआ ।

चर्म० ना० पु० चमड़ा ।

चर्मकार० ना० पु० चमार ।

चर्मपात्र० ना० पु० चमड़ा का डोल, मशक ।

चर्मवस्त्र० ना० पु० चमड़ा का वस्त्र अर्थात् ओढ़न ।

चर्य्या० ना० स्त्री० तपस्या करने में धुनि अथवा रहनि ।

चर्वण० ना० पु० दांतों से पीसना, चबेना ।

चर्स० ना० पु० चरसा ।

चल० गु० जो स्थिर न हो ।

चलत० गु० चलति ।

चलदल० ना० पु० पीपल ।

चलन० ना० पु० चालि, व्यवहार ।

चलनता० ना० स्त्री० बिकनहार, खपती ।

चलना० अ० क्रि० जाना, विदाहोना, बढ़ना ।

चलनी० ना० स्त्री० झांझी, गु० चलती ।

चलविचल० ना० पु० चूक, भूल, अव ।

चलबिचरा० गु० अड़ियल, मचला ।

चलयौवन० ना० पु० चलायमान यौवन ।

चलसुगन्धा० ना० स्त्री० शोचर लोन ।

चलाचल० ना० पु० } दौड़ धूप ।
चलाचली० ना० स्त्री० }

चलान० ना० स्त्री० भेजाव ।

चलाना० स० क्रि० दौड़ाना, भगाना, छोड़ना, बढ़ाना, अभ्यास डालना, सिखलाना ।

चलायमान० गु० जो स्थिर न हो, लोल ।

चलाव० ना० पु० चलन ।

चलित० गु० जो चलता है ।

चलित्री० गु० खिलाड़ी, चालु ।

चलु० ना० पु० आचमन ।

चष० ना० पु० नेत्र, आंखि ।

चषक० ना० पु० पियाला, जिसमें जलादि पीते हैं ।

चसक॰ ना॰ स्त्री॰ पीड़ा, टीस।

चसकना॰ अ॰ क्रि॰ टीसना, गड़ना।

चसका॰ ना॰ पु॰ लालसा, प्रेम, चाट।

चसना॰ अ॰ क्रि॰ मसकना, कसकना, गड़ना।

चहकना॰ अ॰ क्रि॰ चहचहाना।

चहकार॰ ना॰ स्त्री॰ चहचहाहट।

चहकारना॰ अ॰ क्रि॰ चहचहाना।

चहचहाना॰ अ॰ क्रि॰ पक्षियों का बोलना।

चहचहाहट॰ ना॰ स्त्री॰ पक्षियों का शब्द।

चहटी॰ ना॰ स्त्री॰ दो नखों से दबाना अर्थात् चुटकीकाटना।

चहला॰ ना॰ पु॰ कीचड़।

चहिये॰ अव्य॰ चाहिये।

चहु॰ गु॰ चारि, ४ अव्य॰ चाहै।

चहुधा॰ ना॰ पु॰ चारोंओर।

चहुचक॰ } **चहुदिश॰** } गु॰ चारोंओर, लग भग।

चहुयुग॰ ना॰ पु॰ चारोंयुग।

चक्षु॰ ना॰ पु॰ नेत्र, आंखि।

चक्षुःश्रवा॰ ना॰ पु॰ सांप, नाग।

चक्षुष॰ ना॰ पु॰ भैरवविशेष।

चा॰ ना॰ स्त्री॰ पौधाविशेष।

चाउ॰ ना॰ पु॰ आनन्द, मंगल, खुशी।

चाऊ॰ गु॰ आनन्द में लाभयुत।

चांड़॰ ना॰ स्त्री॰ टेक, थम्भ।

चांद॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा।

चांदनी॰ ना॰ पु॰ उजाला, ज्योति।

चांदना॰ ना॰ स्त्री॰ चांदकी ज्योति, सफेद बिछौना।

चांदनीचौक॰ ना॰ पु॰ चौड़ा मार्ग।

चांदा॰ ना॰ पु॰ बिहरी, पन्ती, चन्दा।

चांदी॰ ना॰ स्त्री॰ रूपा, रजत।

चांप॰ ना॰ स्त्री॰ बन्दूक की कल, काउ।

चांपना॰ स॰ क्रि॰ ठांसना, जोड़ना।

चाक॰ } **चाका॰** } ना॰ पु॰ चक्र जिसपर कुम्हार बासन बनाता है, पहिया।

चाकी॰ ना॰ स्त्री॰ चक्की।

चाखना॰ स॰ क्रि॰ स्वादलेना, मज़ालेना।

चाचा॰ ना॰ पु॰ पिताकाभाई, चाचा।

चाची॰ ना॰ स्त्री॰ चाचा की स्त्री।

चाञ्चल्य॰ ना॰ पु॰ अस्थिरता।

चाट॰ ना॰ स्त्री॰ चसका, लालच, पदार्थ।

चाटक॰ ना॰ पु॰ मगर विद्या, तिलस्म, इन्द्रजाली।

चाटकी॰ गु॰ चाटक जाननेहारा।

चाटना॰ स॰ क्रि॰ जीभसे रसखींचना, चभड़ चभड़ करना।

चाटी॰ ना॰ स्त्री॰ मथनियां।

चाणक॰ ना॰ पु॰ करखा, भड़काव, क्रोधकारक वार्त्ता।

चाणक्य॰ ना॰ पु॰ राजाविशेष का मन्त्री न्यायग्रन्थ।

चाणूड़॰ } **चाणूर॰** } ना॰ पु॰ राजाकंसका मल्ल।

चाण्डाल॰ गु॰ निर्दयी, अतिनीचजाति।

चाण्डूल॰ } **चाण्डाज॰** } ना॰ पु॰ पक्षीविशेष।

चातक॰ ना॰ पु॰ पपीहा पक्षी।

चातर॰ ना॰ पु॰ महाजाल।

चातुर॰ गु॰ चतुर, चारि, बुद्धिमान्।

चातुरी॰ ना॰ स्त्री॰ धूर्त्तता, चालाकी, बुद्धिमानी।

चातुर्य्य॰ ना॰ पु॰ चतुराई।

चातुर्वर्ण्यदेश॰ ना॰ पु॰ देश, जहां चारोवर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र रहते हैं।

चातृक॰ ना॰ पु॰ पपीहा।

चान्द्रमास॰ ना॰ पु॰ कृष्णपक्ष प्रतिपदा से पूर्णिमापर्य्यन्त।

चान्द्रायण॰ ना॰ पु॰ व्रत जिसमें भोजन प्रतिदिन एकग्रास घटातेहैं यथा चन्द्रमा प्रतिदिन घटता है।

चाप॰ ना॰ पु॰ धनुष, कमान, आवाज़ेव।

चापकर्ण० ना० पु० रोदा, पनच कमान की।
चापन० ना० पु० दाबन, रामायण यथा—(मुनिवर शयन कीन्ह तब जाई, लगे चरण चापन दोउ भाई)।
चापक्षेत्र० ना० पु० धनुषाकार क्षेत्र।
चाप्य० ना० पु० कूट।
चाबना० स० क्रि० दांतसे कुचलना,कुचलना।
चाबी० ना० स्त्री० कुंजी।
चाम० ना० पु० चर्म।
चामर० ना० पु० चमर, छन्दविशेष।
चामीकर० ना० पु० सुवर्ण, सोना।
चामुण्डा० ना० स्त्री० योगिनीभेद देवीविशेष।
चाम्पेय० ना० पु० चम्पवृक्ष।
चाय० ना० पु० चोप, हर्ष, स्वाद।
चार० गु० गिन्ती ४ ना० पु० दूत, पदाति।
चारिखानि० ना० स्त्री० स्वेदजादि।
चारण० } ना० पु० नचवैया, भांड़, भाट,
चारन० } प्रेष्य।
चारा० ना० पु० वनस्पति, पशुभोजन, फ़ारसी शब्द है।
चारी० गु० चलनेवाला, ना० स्त्री० चुगली, चराई, चारि।
चारु० गु० सुन्दर, अच्छा, ना० पु० पद्माक।
चारुपर्णी० ना० स्त्री० गन्धप्रसारन।
चारुफल० ना० पु० अंगूर, दाख।
चार्वाक० गु० वेदबाह्य, नास्तिकविशेष।
चाल० ना० स्त्री० गति, चलन, रीति।
चालना० स० क्रि० झाड़ना, आखा करना।
चालनी० ना० स्त्री० आटा छानने का पात्र।
चाला० ना० पु० गौना, सफर, सायत।
चाली० ना० पु० मिसकारी, हीलाबाज़।
चाव० ना० पु० चाय, चारिअंगुल की माप, बांसविशेष।
चावल० ना० पु० तण्डुल, बिरंज।
चाष० ना० पु० नीलकण्ठ पक्षी, लहड़ीरवा, यथा (लोहपृष्ठस्तु कंकः स्यादथ चाषः किकीदिविः इत्यमरः) रामायणे (चाष चाष वाम दिशि लेई, मनौ सकल मंगल कहि देई)।
चास० ना० स्त्री० हलचलाना।
चासना० स० क्रि० हलचलाना।
चासा० ना० स्त्री० हलवाहा।
चाह० ना० स्त्री० इच्छा, प्रेम, रीझ, छोह।
चाहक० न० पु० स्त्री० छोही, हितकारी।
चाहत० ना० स्त्री० चाह।
चाहना० स० क्रि० प्रेम करना, इच्छा करना, प्रार्थना करना, मांगना।
चाहिये० अव्य० अवश्य।
चाहिता० गु० प्यारा, मनभावित।
चाहिती० ना० स्त्री० प्यारी।
चाहो० अव्य० अथवा।
चिक० ना० स्त्री० पीड़ाविशेष, परदह।
चिकटा० ना० पु० उत्तर का कपड़ा विशेष।
चिकठा० गु० चिकट।
चिकना० ना० पु० तेल वा घृत, गु० उजला, सुन्दर, तिलहा, अजितेन्द्रिय, चंचला, और चिकनियां।
चिकनाई० ना० स्त्री० चर्बी, भा० वा० चंचलाहट, ओप, झलक।
चिकनाना० स० क्रि० उज्ज्वल करना, ओपना।
चिकनाहट० ना० स्त्री० उज्ज्वलता, ओप, सुन्दरता।
चिकवा० ना० पु० जाति विशेष जो मांस बेचता है।
चिकार० ना० पु० शोर, चिल्लाहट, चेंचें।
चिकारना० अ० क्रि० चेंचें करना, नाकदेना, शोर करना, चिल्लाना।
चिकारा० ना० पु० मृगविशेष,छोटी सारंगी।
चिकित्सक० ना० पु० वैद्य, तबीब।
चिकित्सा० ना० स्त्री० वैदई, तिबाबत।
चिकुर० ना० पु० बाल, केश।
चिकोरना० स० क्रि० चिल्होरना,चोंचियाना।

चिकोरा० गु० तरल, चंचल।

चिक० ना० स्त्री० बकरी, अजा, काव्ये यथा (पाही खेती चिक धन अरु बिटियन बढ़वारि, येतेपर जो नहिं नशै जाइकरै अधवारि)।

चिकट० गु० चिकटा, मलिन।

चिक्कण० गु० चिकना।

चिक्कड़ा० ना० पु० चिकवा, बुमकस्साव।

चिक्कार० ना० पु० शोर, चिल्लाहट।

चिंगड़ा० ना० पु० } झींगा।
चिंगड़ी० ना० स्त्री० }

चिंगनी० ना० स्त्री० } मुरगी का बच्चा।
चिंगा० ना० पु० }

चिंघाड़० ना० स्त्री० किलकार, कूक।

चिंघाड़ना० अ० क्रि० किलकारना।

चिंग्घाड़ा० ना० पु० चिंघाड़।

चिंचड़ी० ना० स्त्री० किलनी।

चिचिआना० अ० क्रि० चिल्लाना, मिमियाना।

चिञ्चा० ना० स्त्री० अमिलीवृक्ष।

चिट० ना० स्त्री० लीर, धज्जी।

चिटकारा० ना० पु० छींटा, चिह्न।

चिट्टा० गु० गोरा, सफ़ेद, ना० पु० एक रुपया।

चिट्ठा० ना० पु० दिन दिनकालेखा वा कमाई वा रोजनामा।

चिट्ठी० ना० स्त्री० पत्र, पाती।

चिड़० ना० स्त्री० ग्लानि, खिजावट।

चिड़चिड़ा० गु० खुन्साहा, झनझना, ना० पु० पौधाविशेष।

चिड़ना० अ० क्रि० झुंझलाना, खिजना, खिसियाना।

चिड़पड़ा० गु० चरपरा, तीता, तीक्ष्ण, कडुआ।

चिड़ा० ना० पु० कटक।

चिड़ाना० स० क्रि० खिजाना, सताना, छेड़ना।

चिड़िया० ना० स्त्री० गौरिया, पक्षी।

चिड़ीमार० ना० पु० नालिया, वधिक।

चिरिड० ना० स्त्री० नृत्यविशेष।

चित० ना० पु० चित्त, चैतन्य, गु० सूत्राकिटना।

चितकबरा० गु० चितला, कबरा, अबलक।

चितना० अ० क्रि० रँगा जाना।

चितला० गु० कबरा, चितकबरा।

चितवन० ना० स्त्री० दृष्टि, दीठि।

चितवना० अ० क्रि० देख।

चितहट० ना० स्त्री० खींच, चित्त हट जाना।

चिता० } ना० स्त्री० सरा, मृतक के दाह देने का स्थान।
चिताखा० }

चिताना० स० क्रि० जताना, सुचेत करना।

चिताभस्म० ना० स्त्री० चिता की राख।

चितावना० स० क्रि० जताना, सुचेत करना।

चितावनी० ना० स्त्री० जतावनी, चिह्न।

चितेरा० ना० पु० चित्रकार, मुसव्विर।

चितौना० स० क्रि० देखना, विलोकना।

चित्त० ना० पु० मन, हृदय, सुधि।

चित्ता० ना० पु० औषध, पौधाविशेष।

चित्ती० ना० स्त्री० चिह्न, लहसुन, सर्पविशेष, कौड़ी जो रगड़ के चिकनी होगई।

चित्र० ना० पु० मूर्ति, रूप, अग्नि, मित्र, दोनों अरण्ड, गुरु, बटेर पक्षी।

चित्रक० ना० पु० चीता, पशु, चित्रतारी।

चित्रकन्दक० ना० पु० जिमींकन्द।

चित्रकार० ना० पु० मुसव्विर, चितेरा।

चित्रकारी० ना० स्त्री० चित्रकार का काम, मुसव्विरी।

चित्रकाय० ना० पु० बाघ, शेर, गुलबघा।

चित्रकूट० ना० पु० पर्व्वतविशेष।

चित्रकेतु० ना० पु० राजाविशेष।

चित्रगुप्त० ना० पु० यमराजभेद, यम के यहां बुरे भलेका लेखक।

चित्रदेवी० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।

चित्रपक्ष० ना० पु० तीतर पक्षी।

चित्रभानु० ना० पु० सूर्य्य, अग्नि।

चित्रभेषज० ना० पु० कठूमरि।

चित्रविचित्र० गु० अनेक रंग का है।

चित्रशाला०
चित्रसारी० } ना० स्त्री० जिस स्थान में बहुत चित्र होवें, नगाड़खाना, नक्कारखाना।

चित्रा० ना० स्त्री० चौदहवांनक्षत्र, इन्द्रवारुणी।

चित्रांगद० ना० पु० राजाविशेष।

चित्राफल० ना० पु० इन्द्रवारुणी।

चित्रित० गु० चित्रयुक्त, चित्र कियागया।

चित्रिणी० ना० स्त्री० चित्रविचित्र, भगवती का नाम है।

चित्री० ना० स्त्री० चित्रसारी ना० पु० चीतापशु।

चिथड़ा० ना० पु० गुदड़ा, लत्ता।

चिथड़िया० गु० गुदड़िया।

चिथाड़० ना० पु० फाड़ चीर, लथाड़।

चिथाड़ना० स० क्रि० फाड़ना, चीरना, लथाड़ना।

चिदाकाश० ना० पु० परमात्मा चैतन्य आकाश में।

चिनग० ना० स्त्री० मूतने में जलन पड़ना।

चिनगाना० अ० क्रि० टीसना, चिल्लाना।

चिनगारी०
चिनगी० } ना० स्त्री० लूका, आगि का छोटा सा फूल।

चिनचिनाना० अ० क्रि० चिल्लाना, शोरकरना।

चिन्त० ना० स्त्री० चिन्ता।

चिन्तन० ना० पु० अभ्यास, चिन्तवन।

चिन्तना० अ० क्रि० अभ्यास करना।

चिन्ता० ना० स्त्री० शोच, डर, जोखिम, सन्देह, भावना।

चिन्ताना० स० क्रि० अभ्यास कराना।

चिन्तामणि० ना० स्त्री० मणिविशेष।

चिन्तित० गु० शोचा, भावित, विचारित।

चिह्न० ना० पु० लक्षण, पहिचाना।

चिन्हार० ना० पु०
चिन्हारी० ना० स्त्री० } चीन्हा, पहिचान।

चिह्नित० गु० जो पहिचान गया, चिह्नयुक्त।

चिपकना० अ० क्रि० लगना, सटना।

चिपकाना० स० क्रि० लगाना, सटाना, चिपटाना।

चिपचिपा० गु० लसलसा, लिजलिजा।

चिपचिपाना० अ० क्रि० लसलसाना।

चिपटना० अ० क्रि० चिपटना, लिपटना।

चिपटा० गु० लगाहुआ, चिपचिपा।

चिपटाना० स० क्रि० चपटाना, चिप्पी लगाना, लपटाना।

चिपड़ी० ना० स्त्री० गोइरी।

चिप्पक० गु० छिछलाना, ना० पु० पक्षीविशेष।

चिप्पा० ना० पु० चीप।

चिप्पी० ना० स्त्री० जहां कागज़ आदि फटा होता है वहां लगाईजाती है, छोटी चीप।

चिबुक० ना० स्त्री० ठोढ़ी।

चिमटना० अ० क्रि० चिपकना, लपटना।

चिमटा० ना० पु० स्यूंठा, लोहे की वस्तु जो सुनार और लोहार आदि रखते हैं।

चिमटाना० स० क्रि० लिपटाना।

चिमठा०
चिमड़ा० } गु० लचीला, कड़ा।

चिमड़ाई० ना० स्त्री० कड़ापन, ऐंठ।

चिमड़ाना० स० क्रि० कड़ा करना, अ० क्रि० कड़ा होना, ऐंठिजाना।

चिमड़ाहट० ना० स्त्री० चिमड़ाई, ऐंठाई।

चिमड़ी० ना० स्त्री० चिमड़ा।

चिमसा० ना० पु० सरेस पानी का।

चिर० अव्य० बहुत, बहुत काल।

चिरंजी०
चिरंजीव० } ना० पु० आशीर्वादविशेष अर्थात् बहुत जीवन होवे।

चिरंजीवी० गु० बहुतदिनी, ना० पु० कौआ।

चिरकाल० अव्य० नित्य, सदा।

चिरकुट० ना० पु० चिट।

चिरकुटिया० गु० गुदड़िया।

चिरचिरा० ना० पु० औषध व पौधाविशेष।

चिरचिराना० अ० क्रि० चरचराना।

चिरचिराहट० ना० स्त्री० झनझनाहट।

चिरना॰ अ॰ क्रि॰ फटना।

चिरन्तन॰ गु॰ पुराना, प्राचीन।

चिरवाना॰ स॰ क्रि॰ फड़वाना, चिराना।

चिरांद॰ ना॰ स्त्री॰ जलतेहुये चमड़े की कुवासना।

चिराना॰ स॰ क्रि॰ फड़वाना।

चिरायु॰ गु॰ बहुत जीवन।

चिरु॰ गु॰ बहुत।

चिरुकाल॰ गु॰ बहुत दिन, चिरकाल।

चिरुकालीन॰ गु॰ बहुतदिनी।

चिरौंजी॰ ना॰ स्त्री॰ शुष्कफलविशेष।

चिरौरी॰ ना॰ स्त्री॰ बिनती, खुशामद्।

चिलक॰ ना॰ स्त्री॰ चमक, भड़क, दर्द।

चिलकना॰ अ॰ क्रि॰ चमकना, झलकना और फोड़ा आदिका पिराना।

चिलचिम॰ ना॰ पु॰ मछली।

चिलचिलान॰ अ॰ क्रि॰ चीखना, चिंघाड़ना।

चिलम॰ ना॰ स्त्री॰ तमाकू आगि भरने का पात्र।

चिलमची॰ ना॰ स्त्री॰ पात्रविशेष जिसमें मुँह हाथ धोने का पानी रहता है, चिलम के नीचे रखने की वस्तु।

चिलवन॰ ना॰ स्त्री॰ चिक, झंझरी।

चिलवल॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशेष।

चिल्लड़॰ ना॰ पु॰ चीलड़, चिलुआ।

चिल्लाना॰ अ॰ क्रि॰ पुकारना, चिंघाड़ना।

चिल्लाहट॰ ना॰ स्त्री॰ पुकार, चिंघार।

चिल्ली॰ ना॰ स्त्री॰ भोजनविशेष जो अंडे से बनाते हैं, उल्लू।

चिहटना॰ अ॰ क्रि॰ चिपटना, लगना।

चिहुर॰ ना॰ पु॰ बाल, केश।

चींटी॰ ना॰ स्त्री॰ चींवटी, कीटविशेष।

चीक॰ ना॰ स्त्री॰ कीच।

चीखुर॰ ना॰ पु॰ गिलहरी।

चीतना॰ स॰ क्रि॰ चाहना।

चीतल॰ ना॰ पु॰ जंगली जन्तुविशेष, गु॰ चित्तना।

चीता॰ ना॰ पु॰ तेंदुआ, व्याघ्र, चाह, बुद्धि।

चीथना॰ स॰ क्रि॰ चिथाड़ना, फाड़ना।

चीन॰ ना॰ पु॰ देशविशेष जो उत्तर पूर्वमें है।

चीनी॰ ना॰ स्त्री॰ खांड़विशेष, गु॰ चीनदेशी।

चीनीय॰ गु॰ चीनके मनुष्यादि।

चीन्ह॰ ना॰ स्त्री॰ पहिचान, चिह्न।

चीन्हना॰ स॰ क्रि॰ पहिचानना।

चीन्हा॰ ना॰ पु॰ पहिचान, चिन्हार।

चीर॰ ना॰ स्त्री॰ वस्त्रका टुकड़ा सारी, खींच, ओढ़नी।

चीरना॰ स॰ क्रि॰ फाड़ना।

चीरम॰ ना॰ स्त्री॰ चिरौंजी।

चीरा॰ ना॰ पु॰ फाड़, घाव, मुग्धापन, पगड़ी।

चीरी॰ ना॰ स्त्री॰ झींगुर।

चील॰ ना॰ स्त्री॰ चील्ह, पक्षी जिसका मकान पर बैठके चिल्लाना अशुभ है।

चीलड़॰
चीलर॰
चीलहर॰ } ना॰ पु॰ ढील, बड़ाजुआं, चील्ह।

चुआन॰ ना॰ स्त्री॰ जलके निकलने की भूमि।

चुआना॰ स॰ क्रि॰ टपकना, कूप में जल निकालना।

चुकती॰ ना॰ स्त्री॰ निपटारा।

चुकना॰ अ॰ क्रि॰ समाप्तहोना, निपटना, ठहरना।

चुकाई॰ ना॰ स्त्री॰ चुकौता।

चुकाना॰ स॰ क्रि॰ निपटाना, ठहराना।

चुकौता॰ ना॰ पु॰ निपटारा, ठहराव।

चुक्रिका॰ ना॰ स्त्री॰ अमिलीवृक्ष।

चुगना॰ अ॰ क्रि॰ टूंगना, चुगना।

चुंगी॰ ना॰ स्त्री॰ अन्नका कर, महसूल।

चुचकारना॰ स॰ क्रि॰ चोंचलाकरना और चुमकारना।

चुंचकारी॰ ना॰ स्त्री॰ चुमकारी।

चुञ्च॰ ना॰ पु॰ मुनिविशेष।

चुञ्चक॰ ना॰ स्त्री॰ भेंड़ी, चुंचक, ऊर्णायू इति निघंटुः।

चुञ्चड़॰ ना॰ पु॰ चूंचा, बड़ी चूंची।

चुटकी॰ ना॰ स्त्री॰ नीच, चुमटी, मुट्ठीभर अन्न, पांवकी अंगुलीका गहना।

चुटकुला॰ ना॰ पु॰ ठठोली, मज़ाक़।

चुटला॰ ना॰ स्त्री॰ चोटी।

चुटाना॰ } **चुटालना॰** } **चुटावना॰** } स॰ क्रि॰ घावकरना, दूधपिलाना गाय इत्यादिका।

चुडुवा॰ ना॰ पु॰ चूड़ा जो धान कूटके बनाते हैं।

चुड़ैल॰ } **चुड़ैलिया॰** } ना॰ स्त्री॰ प्रेतिनी, फूहड़।

चुनत॰ } **चुनन॰** } ना॰ स्त्री॰ परत, तह, तोड़।

चुनना॰ स॰ क्रि॰ कपड़ोंका तोड़ना वा इकट्ठा करना, छांटना, टूंगना, बीनना।

चुनरी॰ ना॰ स्त्री॰ लालरंगीहुई ओढ़नी।

चुनवाना॰ } **चुनाना॰** } स॰ क्रि॰ टुंगाना, बिनवाना, छटवाना, कपड़े की तह लगवाना।

चुनावट॰ ना॰ स्त्री॰ चुनत।

चुनी॰ ना॰ स्त्री॰ चूनी।

चुनौटा॰ ना॰ पु॰ } **चुनौटी॰** ना॰ स्त्री॰ } पात्र जिसमें पान तम्बाकू खानेके लिये चूनारखते हैं, युद्धमें सैन्यको धाड़सदेना, फ़ौजमें से बलवानों को धावा के लिये छांटना, जेठसुदी एकादशीको पैरके पारजाना जो काशीजीमें प्रचलितरीति है।

चुनौटिया॰ गु॰ पश्चिम में बैंगनीरंगको कहतेहैं।

चुनौती॰ ना॰ स्त्री॰ तलाक़, शर्त बदनेकी बात, निशानी, चिन्हारी, स्मारकवस्तु।

चुन्धला॰ गु॰ च्योंधा, नयनरोगी।

चुन्धलाना॰ अ॰ क्रि॰ च्योंधाहोना।

चुन्धा॰ गु॰ च्योंधा, चिमधा।

चुन्ना॰ स॰ क्रि॰ चुनना।

चुन्नी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटामाणिक।

चुप॰ } **चुपका॰** } **चुपचाप॰** } गु॰ मौनी, अबोल।

चुपचुपाना॰ अ॰ क्रि॰ चुपचाप रहना।

चुपड़ना॰ स॰ क्रि॰ चिकनाना, मलना।

चुपड़ी॰ गु॰ चिकनी, चिकना।

चुप्प॰ ना॰ पु॰ } **चुप्पी॰** ना॰ स्त्री॰ } मौनता, खामोशी।

चुप्पा॰ गु॰ मौन, चुपका, अबोल।

चुभकी॰ ना॰ स्त्री॰ डुबकी, गोतामारना।

चुभना॰ अ॰ क्रि॰ गड़ना, घुसना, बिधना, छिदना, पैठना।

चुभाना॰ स॰ क्रि॰ घुसेड़ना, छेदना, पैठाना।

चुमाना॰ स॰ क्रि॰ चूमादेना वा दिलवाना।

चुम्कार॰ ना॰ पु॰ } **चुम्कारी॰** ना॰ स्त्री॰ } चुचकारी।

चुम्कारना॰ स॰ क्रि॰ चुचकारना।

चुम्बक॰ ना॰ पु॰ लोहे का आकर्षक पत्थर।

चुम्बन॰ ना॰ पु॰ चूमा, स्नेहवश होकर अंग में ओष्ठ स्पर्श करना।

चुरकुट॰ ना॰ पु॰ बुकनी, चूर्ण।

चुरगना॰ अ॰ क्रि॰ चें चें करना।

चुराना॰ स॰ क्रि॰ चोरी करना।

चुरुगना॰ अ॰ क्रि॰ बकना, बड़बड़ाना।

चुल॰ ना॰ स्त्री॰ खुजलाने की इच्छा।

चुलचुल॰ ना॰ पु॰ चंचलाहट।

चुलचुलाना॰ स॰ क्रि॰ खुजलाना, गुदगुदाना।

चुलचुली॰ ना॰ स्त्री॰ चंचलाहट।

चुलबुला॰ गु॰ चंचल, रँगीला।

चुलबुलाना॰ अ॰ क्रि॰ चंचल होना।

चुलबुलाहट॰ ना॰ स्त्री॰ चुलबुलापन।

चुलबुलिया॰ गु॰ चुलबुला।

चुलहाई॰ ना॰ स्त्री॰ कामातुरी।

चुलहारा॰ ना॰ पु॰ कामातुर।

चुल्लू॰ ना॰ पु॰ एक हाथ का सम्पुट, मुट्ठीभर।

चुसक्कर॰ ना॰ पु॰ पियक्कर।

चुसनी॰ ना॰ स्त्री॰ चूसनी।

चुहचुहा० गु० जो गहिरा रँगागया।
चुहचुहाना० अ० क्रि० गहिरा रँगा जाना, पक्षियों का शब्द जो प्रातःकाल होता है।
चुहल० ना० स्त्री० चर्चा, चहलबहल।
चुहला० गु० ठठोल, हँसोड़ा।
चूंगी० ना० स्त्री० चुंगी।
चूंची० ना० स्त्री० कुच, मिठनी, थन।
चूंटा० ना० पु० पृथ्वी में रहनेहारा जन्तु विशेष।
चूंटी० ना० स्त्री० छोटा चूटा वा उस की स्त्री।
चूक० ना० स्त्री० भूल, भ्रम, पौधाविशेष गु० खट्टाविशेष ना० पु० औषध विशेष।
चूकना० अ० क्रि० भूलना, धोखा देना।
चूका० ना० पु० खट्टा साग।
चूची० ना० स्त्री० चूंची।
चूड़० ना० स्त्री० सोने वा चांदी की वस्तु जो विधवा पहिनती हैं, ना० पु० कड़ाविशेष जो हाथी के दांतों में पहिनाते हैं, खाट की पट्टी का सिरा वा नोक।
चूड़ा० ना० पु० संस्कार की रीति से प्रथम मुण्डन, लाख की चूड़ी, ललाट के ऊपर बँधेहुये केश, चर्वणविशेष।
चूड़ाकरण० } ना० पु० मुण्डन।
चूड़ाकर्म० }
चूड़ामणि० ना० स्त्री० कंकण की मणि।
चूड़ी० ना० स्त्री० स्त्रियों के हाथमें पहिनने के लिये जो चांदी वा लाख वा कांच की बनती हैं।
चूत० ना० स्त्री० योनि, आम्र।
चूतड़० ना० पु० नितम्ब, जंघाका उपरिभाग, पुट्ठा।
चूतिया० ना० पु० उल्लू, अहमक।
चून० ना० पु० आटा, पिसान।
चूना० ना० पु० चूर्ण, वा जो पान में लगाते हैं, मिट्टी वा पत्थर वा कंकर वा सीप जली हुई अ० क्रि० टपकना, रसियाना, छनना।
चूनी० ना० स्त्री० दलाहुआ उड़द आदि, खुद्दी।
चूमकपत्थर० ना० पु० चुंबक।
चूमना० स० क्रि० चूमा लेना, मच्छी लेना।
चूमा० ना० पु० मीठी, मच्छी।
चूर० ना० स्त्री० बुकनी, चूर्ण।
चूरन० ना० पु० चूर्ण।
चूरना० स० क्रि० चूर्ण करना।
चूरा० ना० पु० रेतन, बूरा, चूड़ा।
चूरी० ना० स्त्री० बहुत घी पड़ीहुई रोटी, चूड़ी।
चूर्ण० ना० पु० रेणु, बुकनी।
चूल० ना० स्त्री० एक लकड़ी का सिरा जो दूसरी लकड़ी में डालते हैं, किवाड़ के खूंट नीचे ऊपरके।
चूल्हा० ना० पु० } आग रखने वा रोटी पकाने
चूल्ही० ना० स्त्री० } की वस्तु।
चूसना० स० क्रि० पीलेना, सुड़कना।
चूहड़ा० ना० पु० मेहतर, भंगी।
चूहड़ी० ना० स्त्री० भंगिनि।
चूहा० ना० पु० मूश, मूषक।
चूही० ना० स्त्री० छोटा मूश, उसकी स्त्री।
चेंची० ना० स्त्री० वस्तु जिसमें सूई रखते हैं।
चेंचेंकरना० अ० क्रि० चुड़कना।
चेंड़ा० ना० पु० यौवन, छोटा।
चेंप० ना० पु० वृक्षका फल वा लासा।
चेटक० ना० पु० सेवक, नौकर, भगरदिया।
चेटकी० ना० पु० इन्द्रजाल, ख्याल दिखानेहारा, ना० स्त्री० दासी, सेवकिन।
चेटी० ना० स्त्री० दासी, लौंड़ी।
चेत० ना० पु० स्मरण, होश, याद, सुधि।
चेतक० गु० चेत करनेहारा, चेत में हो।
चेतका० ना० स्त्री० सरा, चिता, रामचन्द्रिकायां, मनौ चेतका में सती सत्त धारी।
चेतकी० ना० स्त्री० हर्र।
चेतना० स० क्रि० स्मरण करना, ध्यानलगाना, विचारना, सुधि में आना ना० स्त्री० बुद्धि।
चेता० गु० चेत करनेहारा।
चेरा० ना० पु० चेला, चाकर, सेवक।
चेराई० ना० स्त्री० दासत्व, सेवकाई।
चेरी० ना० स्त्री० चेली, दासी।
चेंरे० ना० पु० चेराका बहुवाक्य।

चेला० ना० पु० लौंडा, दास, शिष्य।
चेली० ना० स्त्री० लौंड़ी, दासी, शिष्य।
चेचली० ना० स्त्री० रेशमी वस्त्र विशेष।
चेष्टा० ना० स्त्री० शरीरका व्यापार, उद्योग, अभ्यास।
चैत० ना० पु० चैत्रमास।
चैतन्य० गु० चौकस, सुचेत, प्राणी, जीवित, ना० पु० आत्मा, परमात्मा।

चैतन्यता० ना० स्त्री० चौकसी, सुचेतता, ईश्वरता।
चैन० ना० पु० सुख, कल, जोतना बोना।
चैनी० गु० जोती बोई धरती, सुखकरनेहारा।
चैला० ना० पु० ईंधन के लिये चीरीलकड़ीकाटुकड़ा।
चैत्र० ना० पु० प्रथम मास, चैत।
चोंकना० स० क्रि० चुभाना, गड़ाना।
चोंगा० ना० पु० नली, नलूआ, उल्लू, निधन।
चोंच० ना० स्त्री० टोंट, चंचु।
चोंचला० ना० पु० चोचला।
चोंटखा० ना० पु० जिससे चोटी गूंथते हैं, चोंटी।
चोंथना० स० क्रि० बकोटना, नोचना।
चोंप० ना० स्त्री० चाह, इच्छा, हुलास।
चोआ० ना० पु० सुगन्धिद्रव्यविशेष, फली, टपका।
चोआड़० ना० पु० पहाड़िया, जातिविशेष।
चोकर० ना० पु० आटे की भूसी, रई, रवा।
चोखा० गु० खरा, शुद्ध, सच्चा, तीक्ष्ण, सूक्ष्म।
चोखाई० ना० स्त्री० खराई, शुद्धता, सचाई।
चोखी० ना० स्त्री० खरी, गानेबजानेमें शुद्धस्वर।
चोगा० ना० पु० खाना जो छोटी चिड़ियाकोखिलातेहैं।
चोचला० ना० पु० चुचकारी, गांवली, फुसलाहट।
चोट० ना० स्त्री० घाव, चपेट, पछाड़, पटकन, डाह, धोखा।

चोटा० ना० पु० पट्टा, जूती।
चोटियाना० स० क्रि० चुटालना, लंगड़ाकरना।
चोटी० ना० स्त्री० शिखा, शिखर, झोंटी।
चोट्टा० ना० पु० चोर।
चोट्टी० ना० स्त्री० चोर स्त्री, चोर की स्त्री।
चोथ० ना० पु० छोथ, गोबर।

चोथना० स० क्रि० फाड़ना, नोचना।
चोन्धला० गु० चुन्धला।
चोन्धलाना० अ० क्रि० चुन्धलाना।
चोन्धी० ना० स्त्री० धुन्ध, धुन्धलाई।
चोप० ना० स्त्री चोंप, मग्नता, चाह।
चोपना० अ० क्रि० चाहना, इच्छाकरना।
चोभा० ना० पु० कील, कीला।
चोभी० ना० स्त्री० छोटा चोभा।
चोया० ना० पु० छिलका, देवली, सुगन्धिवस्तुविशेष।
चोर० ना० पु० चोट्टा, ठग, तस्कर, डाकू।
चोरटी० ना० स्त्री० चोरनारि।
चोरमहीचिनि० ना० स्त्री० आंखिमूँदौआ खेल, लुकालुकौरी।

चोराना० स० क्रि० चोरीकरना।
चोरी० ना० स्त्री० ठगाई, डकैती।
चोल० ना० पु० मजीठ।
चोलना० ना० पु० बड़ा कुर्ता, अंगरखा।
चोला० ना० पु० शरीर, जामा, अंगरखा, वस्त्रविशेष।
चोली० ना० स्त्री० अंगिया।
चोवा० ना० पु० चोआ।
चोष्य० गु० चूसने के योग्य वस्तु, आम्रादि।
चौ० ना० पु० पिछले दांत, लोहा जो नागल के मुनिपर लगारहता है, गु० चार।
चौअन्नी० ना० स्त्री० रुपये का चौथाभाग।
चौंक० ना० स्त्री० झिझक, भटक, और एकाएक जानना।
चौंकना० अ० क्रि० झिझकना, जागना।
चौंकेल० ना० पु० झिझकारा, बनैला।
चौंगा० ना० पु० फुसलाहट, छल।
चौंगी० ना० स्त्री० फुसलाहट।
चौंतरा० ना० पु० चौतरा, चबूतरा।
चौंतीस० गु० तीस और चार ३४।
चौंध० ना० स्त्री० आंख तिरमिराना।
चौंधियाना० अ० क्रि० घबराना, व्याकुलहोना।
चौंरी० ना० स्त्री० चमर, लाल घेरिहुई।

चोक० ना० पु० गुदड़ीका बाजार, हाट,कटरा, आंगन, चारिका समूह, वेदी पूरना।

चौकड़ा० ना० पु० दो मोती का बाला,चारिका समूह।

चौकड़ी० ना० स्त्री० कूद, उछाल, मोती का बाला जो पुरुष पहिनते हैं।

चौकन्ना० गु० चौकस, चैतन्य।

चौकभरना० स० क्रि० चौक पूरना।

चौकल० ना० पु० चारिकला, चारिटुकड़ा।

चौकला० ना० पु० मियाना, पालकी।

चौकस० गु० सावधान, सुचेत, सुर्ता, निपुण, पूरानाल।

चौकसाई० ना० स्त्री० सुचेती, सुर्त।

चौकसी० ना० स्त्री० धुन, रक्षा।

चौका० ना० पु० लीपाहुआ स्थान, चारि कोने का स्थान, आगे के चारि दांत, चारि पूरीआदि का एक चौका।

चौकी० ना० स्त्री० काष्ठका चौकोना आसन, कुर्सी, पहरा, पहराकास्थान, फ़ारसीशब्द है।

चौकोना०
चौकोर० } गु० चौखूटा।

चौखट० ना० पु० द्वारके चारों ओर का काठ।

चौखूंटा० गु० जिसके चारों ओर समान हैं।

चौगड़ा० ना० पु० लम्भा, खरगोश, शशा।

चौगान० ना० पु० जनहीन, निर्जन स्थान,खेल विशेष फ़ारसी शब्द में।

चौगानी० ना० स्त्री० हुक्के की सीधी नली।

चौगुण०
चौगुना० } गु० चारि वेरका।

चौघड़ा० ना० पु० चारिघड़ेका पात्र।

चौघा० ना० पु० चारोंओर, चारों तरफ़।

चौच० ना० पु० चोंच, टोंट।

चौड़ा० गु० चकला।

चौड़ाई० ना० स्त्री०
चौड़ान० ना० पु० } पाट, चकलाई, बड़ाई।

चौड़ाना० स० क्रि० चकलाना, फैलाना।

चौडोला० ना० पु० पालकीविशेष।

चौतरा० ना० पु० चबूतरा, फ़ारसी शब्द है।

चौतारा० ना पु० चारितारका बाजाविशेष।

चौताल० ना० पु० रागिनीविशेष, बाजाविशेष, तालविशेष।

चौतुक० ना० पु० चौबोला छन्द।

चौथ० ना० स्त्री० चतुर्थांश, चौथियाई।

चौथा० गु० चतुर्थ।

चौथाई० ना० स्त्री० चौथाभाग, चतुर्थांश।

चौथि० ना० स्त्री० ४ तिथि।

चौथिया० ना० पु० चौथ लेनहारा।

चौथियाई० ना० स्त्री० चौथाई।

चौथी० ना० स्त्री० चतुर्थी।

चौदन्त० गु० बलवन्त, चारिदांतका।

चौदन्ती० ना० स्त्री० बहादुरी, शूरमापन।

चौदस० ना० स्त्री० चौदहवीं तिथि, चतुर्दशी।

चौदह० गु० चतुर्दश १४।

चौदानियां० ना० पु०
चौदानी० ना० स्त्री० } चारि मोती का बाला।

चौधर० गु० बलवन्त।

चौधराई० ना० स्त्री० चौधरी का काम।

चौधरी० ना० पु० जाति का प्रधान, मुखिया, प्रधान, बाजार का मुखिया।

चौपट० गु० उजाड़, सरपट।

चौपड़० ना० स्त्री० खेल जो पांसेसे खेलाजाता है

चौपतिया०
चौपती० } ना० स्त्री० छोटी पोथी, पौधाविशेष।

चौपहला० ना० पु० चारिपटका।

चौपाई० ना० स्त्री० चारिपदका छन्द।

चौपाड़०
चौपार० } ना० पु० बैठक, घरविशेष।

चौपाला० ना० स्त्री० पालकीविशेष।

चौपाय० ना० पु० चौवा।

चौबार० ना० पु० चौपाड़।

चौबारा० ना० पु० उसारा, अंगन।

चौबीस० गु० बीस और चार २४।

चौबे॰ ना॰ पु॰ चतुर्वेदी, जातिविशेष, मथुरा तीर्थ के पुरोहित।

चौमासा॰ ना॰ पु॰ बरसात, परहिल।

चौमुख॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा, चौमुखी दीवट, चारोंओर।

चौमुखा॰ ना॰ पु॰ पटविशेष, चारमुखकी दीवट।

चौमुखी॰ ना॰ स्त्री॰ रुद्राक्ष का फल।

चौर॰ ना॰ पु॰ चोर।

चोरकर्म॰ ना॰ पु॰ चोरी।

चौरंग॰ ना॰ पु॰ दांवविशेष, बैल आदिके चारों पांव एक चपेट में काटना।

चौरभय॰ ना॰ पु॰ चोरोंका डर।

चौरस॰ गु॰ समान, एकसां।

चौरसाना॰ स॰ क्रि॰ समानकरना।

चौरसाई॰ ना॰ स्त्री॰ साधाई, समानता।

चौरा॰ ना॰ पु॰ चबूतरा, चौतरा।

चौरानबे॰ गु॰ नब्बे और चार ९४।

चौरासी॰ गु॰ अस्सी और चार ८४।

चौराहा॰ ना॰ पु॰ मार्ग चारों ओर जाने का।

चौरी॰ ना॰ पु॰ चौवार धोईहुई लाख।

चौलड़ा॰ ना॰ पु॰ } चारिलड़की माला वा
चौलड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ } कोई वस्तु।

चौला॰ ना॰ पु॰ अन्नविशेष।

चौलाई॰ ना॰ स्त्री॰ सागविशेष।

चौवा॰ ना॰ पु॰ पशु, चतुष्पाद।

चौवाई॰ ना॰ स्त्री॰ आंधी, झकड़।

चौसठ॰ गु॰ साठि और चार ६४।

चौसर॰ ना॰ पु॰ चार लड़काहार, चौपड़।

चौहट॰ } ना॰ पु॰ चौराहा, चौसरका बा-
चौहट्टा॰ } जार।

चौहत्तर॰ गु॰ सत्तर और चार ७४।

चौहान॰ ना॰ पु॰ रजपूतजातिविशेष।

च्युत॰ गु॰ पतित, झटित, बदला।

च्युतता॰ ना॰ स्त्री॰ पवन, बदल।

च्युति॰ ना॰ स्त्री॰ योनि, गुदा।

(छ)

छः गु॰ षट् ६।

छकड़ा॰ ना॰ पु॰ गाड़ी, शकट।

छकड़ाना॰ स॰ क्रि॰ चौंधियाना, चकराना।

छकना॰ अ॰ क्रि॰ संतुष्ट होना, भरना, तृप्तहोना, दुःखित, व्याकुल।

छकाई॰ ना॰ स्त्री॰ तृप्ति, संतुष्टता।

छकाना॰ स॰ क्रि॰ सन्तुष्ट करना, तृप्तकरना, पेटभर भोजन कराना।

छकाड़॰ ना॰ स्त्री॰ थप्पड़, गु॰ छःदांत का पशु आदि।

छक्क॰ ना॰ पु॰ छः का समूह, खेलविशेष, जाल सहित पिंजरा।

छगरी॰ ना॰ स्त्री॰ बकरी।

छगल॰ ना॰ पु॰ बकरी।

छगुली॰ ना॰ स्त्री॰ कनिष्ठिका, पांचवीं अंगुली।

छछुन्दर॰ } ना॰ स्त्री॰ मूस जो रातिको नि-
छछूंदर॰ } कलता है और कुवासित होताहै।

छज॰ गु॰ झाड़खण्ड।

छज्जा॰ ना॰ पु॰ बरामदह।

छज्जी॰ ना॰ स्त्री॰ सज्जी।

छज्जन॰ ना॰ पु॰ दादुविशेष।

छछनाना॰ अ॰ क्रि॰ सनसनाना, सर्राटादेना, चरपराना।

छटना॰ ना॰ पु॰ चलनाविशेष, अ॰ क्रि॰ घटना, बिछुड़ना, भिन्नभिन्न होना।

छटा॰ ना॰ स्त्री॰ उजाला, चमचमाहट, बिजली, कौंधा गु॰ चुनाहुआ, छांटाहुआ।

छटांक॰ ना॰ स्त्री॰ सेरका सोलहवांभाग।

छटाना॰ स॰ क्रि॰ चुनवाना।

छटे॰ ना॰ पु॰ उजेले का बहुवाक्य गु॰ बनेहुये, चुनेहुये अलगभये।

छट्ठ॰ ना॰ स्त्री॰ षष्ठी, छठ।

छट्ठी॰ ना॰ स्त्री॰ छठवीं, षष्ठी, जन्मने के पीछे छठे दिनका व्यवहार।

छठ॰ ना॰ स्त्री॰ षष्ठी, छट्ठी।

छठी॰ ना॰ स्त्री॰ छट्ठी।

छड़॰ ना॰ पु॰ भालेकी लकड़ी, उठा, सांठी और

छर, आंख में सफ़ेद दाग।

छड़ना० स० क्रि० चावलों का छांटना।

छड़ा० गु० अकेला ना० पु० कान वा पांव में पहिरने का भूषण।

छड़ाना० स० क्रि० चावल साफ़करना।

छड़िया० ना० पु० छड़ीवाल, आसाबरदार ना० स्त्री० छोटीगली, कोलिया।

छड़ियाना० स० क्रि० छड़ीसे मारना।

छड़ी० ना० स्त्री० बेत, बांसकी सूखी लकड़ी, छिकुनी।

छड़ीला० ना० स्त्री० जटामांसी।

छण० ना० पु० क्षण।

छुण्टना० अ०क्रि० दुर्बलहोना, घटना, निकलना।

छण्टवाना० स०.क्रि० छिलका उतरवाना।

छण्टाई० ना० स्त्री० छांटने का काम।

छण्टाव० ना० पु० कहीं, धानोंका कूटना।

छण्डना० स० क्रि० छोड़ना, तजना, चलाना।

छुण्डाना० स० क्रि० छुड़ाना।

छण्डित० गु० छोड़ागया।

छण्डुआ० ना० पु० छूट, छोड़।

छण्डौती० ना० स्त्री० छुट्टी, छोड़ना।

छत० ना० स्त्री० घरके ऊपरकी गच वा पाटन।

छतकुम्भक० ना० स्त्री० कनेर, कन्देल, यथा करवीरा श्वेतपुष्पा, अश्वहा छतकुम्भकः इति निघण्टुः।

छतना० ना० पु० छत्ता।

छति० ना० स्त्री० हानि, घटा, क्षता।

छत्तर० ना० पु० छत्र।

छत्ता० ना० पु० मधुमाखीकाघर, बर्रोंका घर।

छत्तीस० गु० तीस और छः ३६।

छत्तीसी० ना० स्त्री० छिनाल, घूघटी, चालाकी।

छद० ना० पु० पत्ता, पुनर्नवा औषधि।

छदन० ना० पु० पत्ता।

छदाम० ना० स्त्री० टुकड़ा, पैसे की चौथाई।

छद्म० ना० पु० कपट, छल, फ़रेब।

छद्मिका० ना० स्त्री० मनीठ, गु० छलिने।

छनना० अ० क्रि० टपकना, निथुरना, साफ़होना।

छनाक० ना० पु० छन, माटीका भांड़ा टूटने का शब्द।

छनाका० ना० पु० तुरन्त जलजाना पानी का आगमें।

छनिक० ना० पु० क्षणिक।

छन्द० ना० पु० पद्य, रचना, गायत्र्यादि।

छन्दगति० ना० स्त्री० छन्दों की चाल।

छन्दना० अ० क्रि० गठना, बन्धना।

छन्दबन्द० ना० पु० छलबल, छल।

छन्दी० गु० छली, कपटी।

छन्ना० ना० पु० कपड़ा दूध आदि छानने का।

छन्नी० ना० स्त्री० छोटा छन्ना, भूषणविशेष।

छन्नू० गु० छानने द्वारा।

छप० ना० पु० जलमें कुछवस्तु गिरनेका शब्द।

छपई० ना० स्त्री० छः पदका छन्द।

छपकली० ना० स्त्री० जन्तुविशेष।

छपकाना० स० क्रि० पानी डालना।

छपकी० ना० स्त्री० जन्तुविशेष।

छपना० अ० क्रि० छापाहोना, लुकना।

छपरा० ना० पु० छप्पर।

छपरिया० ना० स्त्री० छोटा छप्पर।

छपरी० ना० स्त्री० डबरा।

छपाई० ना० स्त्री० छापने का काम वा पैसा।

छपाका० ना० पु० जलमें मारने से जो शब्द।

छपाना० स० क्रि० छपवाना, छिपाना।

छप्पन० गु० पचास और छः ५६।

छप्पर० ना० पु० तृण का छत।

छप्परखट० ना० पु० बड़ापलँग, जिसकेऊपर कपड़ाकी पोशिश होतीहै।

छपड़ा० ना० पु० टोकराविशेष।

छबीला० गु० रूपवान्, सुन्दर।

छब्बीस०
छब्बीस० } गु० बीस और छः २६।

छम० गु० समर्थ।

छमकट० गु० कपटी, छिनला और व्यभिचारी।